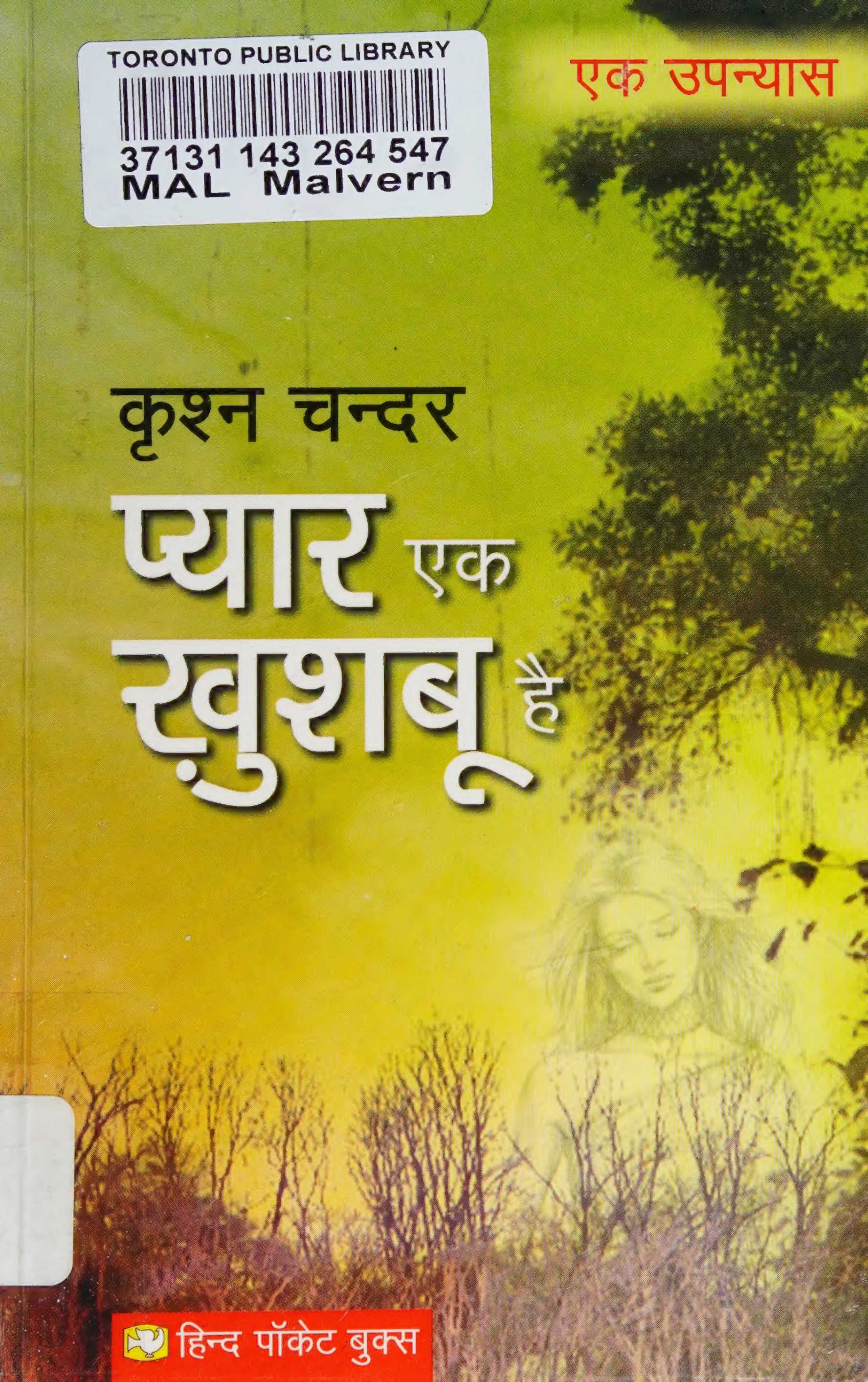
एक उपन्यास

कृश्न चन्दर

प्यार एक ख़ुशबू है



हिन्द पॉकेट बुक्स

23

प्यार एक ख़ुशबू है

"दो दिन से वह जीवन और मृत्यु के बीच फंसी हुई है। उस पर रहम कर, दया कर, नहीं तो मैं दुनिया को हिला दूंगी। सारा संसार पलट कर रख दूंगी, राक्सू देवता!"

राक्सू एक देवता था। कश्मीर की घाटी के 'बकरवाल' कबीले का देवता। ठेठ 'आदिवासी' किस्म का जीवन जीने वाले बकरवाल उन्हीं की तरह टोने-टोटकों, अंधविश्वास और तांत्रिक क्रियाओं से जकड़े हैं। इसी विचित्र दुनिया के बीच चलती है एक रोचक तथा मार्मिक कहानी 'प्यार एक खुशबू है', जिसे किस्सागोई की चाश्नी में डुबोया है अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कथा-शिल्पी कृश्न चन्दर ने।

कृश्न चन्दर की अन्य पुस्तकें

- एक गधे की वापसी (उपन्यास)
- एक गधे की आत्मकथा (उपन्यास)
- आंख की चोरी (उपन्यास)

प्यार एक खुशबू है

कृश्न चन्दर

हिन्द पॉकेट बुक्स

हिन्द पॉकेट बुक्स

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

उत्कृष्ट साहित्य का प्रतीक

सुन्दर • सुरुचिपूर्ण • सरल

प्यार एक खुशबू है (उपन्यास)

नवीन संस्करण : 2010

प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जे-40, जोरबाग लेन, नई दिल्ली-110003

लेज़र : एडिट मीडिया, नई दिल्ली-110045

मुद्रक : न्यूटेक फ़ोटोलिथोग्राफर, दिल्ली-110032

PYAR EK KHUSHBOO HAI (Novel)
By Krishan Chander

ISBN 978-81-216-1500-6

10/10/01/02/11/EM/DE/DSP/DSP/NP135/NP135

यह उपन्यास

कश्मीर की घाटियों में बकरवालों के कई प्रकार के कबीले पाए जाते हैं। पहले मैं शब्द 'बकरवाल' का अर्थ प्रकट कर दूं; बकरवाल का अर्थ है, बकरियां पालने वाला। लेकिन ये कबीले केवल बकरियां ही नहीं पालते, भेड़ें, गायें, भैंसे, घोड़े और खच्चर भी पालते हैं, और एक चरागाह से दूसरे चरागाह में जाते रहते हैं।

इनमें से बहुत-से कबीले ऐसे हैं जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया है। लेकिन भद्रबाह किश्तवाड़ में बहुत-से ऐसे कबीले हैं, जो हिन्दू हैं या बौद्ध धर्म ग्रहण किए हुए हैं। इनके अतिरिक्त एक और प्रकार के बकरवाल भी होते हैं, जिनका धर्म चितराल से परे काफिरिस्तान के रहने वाले लोगों से मिलता-जुलता है।

इन लोगों के देवी-देवता दूसरे कबीलों से निराले हैं। धरती और आसमान, मृत्यु और जीवन, आत्मा और बुरी आत्मा के सम्बन्ध में इनके अपने विश्वास हैं, जो पुराने बाबलियों और सुमेरियों एवं कहीं-कहीं पर ईरानियों की पुरानी पवित्र पुस्तक जेन्दावस्ता से मिलते हैं।

जब मैंने आनिस्की का विख्यात ड्रामा पढ़ा, जो आत्माओं के समबन्ध में इस प्रकार की मान्यताओं और विश्वासों पर आधारित है, तो मुझे तत्काल बकरवालों के इस तीसरे कबीले का ख्याल आया, और

मुझे इस ड्रामे का वातावरण बदलकर उसे हिन्दुस्तानी रंग देकर, एक उपन्यास के रूप में ढाल देने का भी विचार आया। वैसे आत्मा और बुरी आत्मा, जिन्नात और तांत्रिक लोगों के चमत्कारों से सम्बन्धित मान्यताएं और विश्वास, बकरवालों के इन तीनों कबीलों में पाए जाते हैं और एक सीमा तक हिन्दुस्तान और इससे मिले देशों के देहाती इलाकों में यह विचार साधारण ढंग से फैले हुए हैं : झाड़-फूंक, टोने-टोटके, मंतर-तंतर, बुरी आत्माओं को निकालना, किसी उद्देश्य के अन्तर्गत जीवित पशु या जीवित इन्सान की भेंट दे देना, यह और ऐसी बहुत से विश्वास और मान्यताएं दूर-दूर तक संसार और इन्सान के मस्तिष्क में फैले हुए हैं।

हिन्दुस्तानी स्टेज अभी अत्यंत शिशु हालत में है, वरना मैं इस ड्रामे को ज्यों का त्यों उपस्थित करता, लेकिन अब मैंने आनिस्की के मुख्य विचारों और पात्रों को लेकर बकरवालों के पहाड़ी वातावरण में यह उपन्यास लिखा है। इससे पहले मैं इसी ढंग से यूरोप के एक और क्लासिक ड्रामे को 'कार्नीवाल' के नाम से उस उपन्यास का रूप दे चुका हूं, जिसे पाठकों ने अत्यंत पसन्द किया है।

मेरा विश्वास है कि यह उपन्यास 'कार्नीवाल' की ही भांति पाठकों का पसन्द आएगा। निजी तौर पर मुझे इस उपन्यास का प्लॉट और वातावरण बहुत पसन्द है, जो सचमुच आरोपों में घिरी हुई दो निर्दोष आत्माओं की सच्ची और पवित्र भावनाओं की कहानी है।

कृश्न चन्दर

प्यार एक खुशबू है

गुलमर्ग के दक्षिण-पश्चिम के पहाड़ी विस्तारों में गरजन ढोक सबसे सुन्दर और सबसे ऊंची है - यह ढोक ग्यारह हजार फुट से तेरह हजार फुट की ऊंचाई पर ऊंचे-नीचे स्तरीय ढंग से फैली हुई है। यहां पर पांच छोटी झीलें पाई जाती हैं, जो सरदी के मौसम में बर्फ से ढकी रहती हैं, लेकिन गर्मी के मौसम में इन झीलों के आसपास रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियां खिल जाती हैं, और मीलों तक फैली हुई हरी-हरी दूब में सैकड़ों पशु चरते हैं।

गरजन ढोक से नीचे के पहाड़ी क्षेत्र में बच्छन ढोक है, जो आठ हजार से ग्यारह हजार फुट की ऊंचाई पर फैली हुई है। यह ढोक वसन्त ऋतु में चरागाह का काम देती है। जब तक गरजन ढोक की बर्फ नहीं पिघलती है, बकरबाल अपने पशुओं को इस चरागाह में चराते हैं। बसन्त ऋतु के समाप्त होते ही; वे ऊपर गरजन ढोक में अपने पशुओं को ले जाते हैं, और गरमी का मौसम समाप्त होते ही फिर वापस बच्छन ढोक में आ जाते हैं।

बच्छन ढोक से नीचे अच्छन ढोक है, जो साढ़े पांच हजार फुट ऊंचाई से आठ हजार फुट ऊंचाई के क्षेत्र में फैली हुई हैं, यहां

---

1. ढोक का अर्थ चरागाह है।

कहीं-कहीं पर गांव बसे हुए हैं। कहीं-कहीं पर खेती भी होती है, कहीं-कहीं पर घना जंगल है जो चीड़, देवदार, तुंग, ब्याड़ विलूत और शाह विलूत पर आधारित अच्छन ढोक से आरंभ होकर बच्छन ढोक को अपनी लपेट में लेता हुआ गरजन ढोक तक चला जाता है।

लेकिन गरजन ढोक की ऊंचाइयों पर कोई वृक्ष नहीं पाया जाता। यहां केवल चरागाहें, झीलें और फूलों की क्यारियां हैं, या वर्ष में आठ महीने घोर हिम-वर्षा होती है।

मगर हां, जहां पर बच्छन ढोक समाप्त होती है, और गरजन ढोक आरंभ होती है, वहां पर शाह बिलूत का एक बहुत पुराना विशाल वृक्ष है, शायद शताब्दियों पुराना पेड़ है। इसके नीचे जमदयाल जाति के कबिले वालों का पुराना मन्दिर है।

पेड़ के मोटे तने पर राक्सू देवता की तस्वीर खुदी हुई है, जो बार-बार सिन्दूर मलने से लाल रंग की हो चली है। देखने में यह एक भयानक-सी तस्वीर है, लेकिन जमदयाल कबीले के लिए यह तस्वीर अत्यंत पवित्र है।

इस शाह बिलूत वृक्ष की भी एक कहानी है। शताब्दियों पहले जमदयाल कबीला काफिरिस्तान से निकलकर यहां पहुंचा और नीचे अच्छन ढोक में ठहरा, तो इस स्थान पर कोई वृक्ष न था। सोलह वर्ष की एक लड़की, जिसका नाम तोरा था, पतझड़ के मौसम में बच्छन ढोक में बकरियां चराते-चराते जब इस स्थान पर पहुंची, तो उसे गरजन ढोक के एक बरफानी तूफान ने आ घेरा।

तेज तूफानी हवाएं, बादलों की गर्जना और बिजली की चमक उस गरीब का दिल दहलाए देती थी। कभी ओलों से अपने-आपको बचाती, कभी बकरियां संभालती नीचे जाने की कोशिश करती, कि इतने में शाम हो गई और चारों ओर काली-काली धुंध छा गई, इतनी गहरी काली धुंध कि कुछ गज की दूरी पर कुछ दिखाई न देता था। फिर एकदम सन्नाटा हो गया, और बर्फ-वर्षा आरम्भ हो गई।

घबराई हुई तोरा ने राक्सू देवता से प्रार्थना की कि वह उसे और उसकी बकरियों को तबाही से बचाए, वर्ना अब उसकी और बकरियों के बच्चों के बचने की कोई सूरत न थी, क्योंकि तेज बादलों का गर्जन और बिजलियों की कड़क के पश्चात बर्फ-वर्षा इतनी तेज हो चुकी थी कि चारों ओर बर्फ के ढेरों के सिवा कुछ दिखाई न देता था।

एकाएक चलते-चलते ठोकरें खाते, संभलते-फिसलते, एक चट्टान से गिरकर, जख्मी होकर जो तोरा नीचे गिरी, तो उसे ऐसा लगा जैसे वह सैकड़ों फुट हवा में उतरने के बाद एक ऐसे स्थान पर पहुंच गई है जहां एक विशाल वृक्ष की घनी छत है और गहरी धुंध चारों ओर छाई हुई है, मगर इस वृक्ष के नीचे जरा भी बर्फ नहीं है, सूखी दूब है और गहरी धुंध में छतारे के नीचे एक छोटी-सी जगह पर एक अनोखी-सी रोशनी प्रकट है, जैसे दूर अंधेरे में दीये का प्रकाश झिलमिलाता हो, और धुंध में प्रकाश एक गोलाकार के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा हो।

तोरा इस प्रकाश को देखकर डर-सी भी गई, फिर सूखी-सूखी दूब को देखकर उसे अजीब-सा ढांढस भी हुआ। उसने धीरे-धीरे चेष्टा

करके अपनी सारी बकरियों को यहां इकट्ठा किया, और सारी बकरियों और भेड़ों के बच्चों को सुलाकर वह स्वयं भी लम्बी-लम्बी ऊन वाली भेड़ों के बीच सो गई, ऐसे जैसे कि लिहाफ में सोई हो।

सुबह तड़के जो उठी तो उसने देखा कि धुंध छंट चुकी है, गरजन ढोक की झीलों और चरागाहों पर दूर-दूर तक बर्फ जम चुकी है, लेकिन जहां पर वह अपनी भेड़-बकरियों के साथ सोई थी, वहां पर रातों-रात शाह बिलूत का एक पेड़ उग आया है और यह पेड़ इससे पहले यहां मौजूद न था, और किसी ने इसको यहां देखा न था।

और सबसे अजीब बात यह थी कि शाह बिलूत के तने पर धरती से लगभग तीन गज ऊपर एक अनोखी तस्वीर बनी हुई है, जैसे शाह बिलूत का तना बीच में जरा-सा फट जाए और अन्दर से लकड़ी की एक खुदी हुई तस्वीर निकल आए।

दौड़ती-दौड़ती तोरा उस तस्वीर के पास गई, और जब निकट पहुंची तो उसने तत्काल पहचान लिया, यह तस्वीर राक्सू की थी। राक्सू, जिसने इस दुनिया को बनाया है, जो इस दुनिया का सबसे बड़ा देवता है, जिसकी पूजा जमदयाल कबीले का हर इंसान करता है। इस लकड़ी की तस्वीर को उसके कबीले वाले काफिरिस्तान से लेकर आए थे।

इसी राक्सू ने तोरा और उसकी भेड़-बकरियों की जान बचाई थी।

तस्वीर को पहचानकर तोरा उसी समय घुटनों के बल बैठ गई, और उसने अपना माथा राक्सू देवता के सम्मान में तस्वीर के समक्ष धरती पर टेक दिया।

इसी हालत में कबीले वालों को, खोज करते-करते तोरा अपनी भेड़-बकरियों समेत इस पेड़ के घनेरे छतारे के नीचे पवित्र राक्सू की तस्वीर के नीचे अचेत मिली।

होश में आने पर सोलह साल की लड़की तोरा ने अपनी कहानी सुनाई। उस दिन से उसने बकरियां चराना छोड़ दिया और इस तस्वीर की पूजा करने लगी। वह शाह बिलूत वाले राक्सू देवता की पहली पुजारिन थी।

हौले-हौले, धीरे-धीरे, उसकी कहानी आसपास और फिर दूर-दूर तक फैलती गई, और दूर-दूर से जमदयाल कबीले के लोग आकर शाह बिलूत के राक्सू की पूजा करने लगे।

यहां लकड़ी का एक सुन्दर-सा मन्दिर बना दिया गया। और राक्सू की तस्वीर को मखमल के पर्दे से ढांक दिया गया। जिस पर सोने की तारों से बड़े-बड़े बारहसींगे कढ़े हुए थे। कुछ क्षणों के लिए दर्शन करने वालों को तस्वीर दिखाई जाती थी, और फिर असे मखमल के पर्दे से ढंक दिया जाता था, जिसपर हाथ से लिखी बारहसींगे की खाल पर खुदी हुई तेरह पुरानी जिल्दें थी, जिन्हें इस कबीले वाले काफिरिस्तान से लेकर आए थे।

यहां पर मोमबत्तियां जलती थी, और घी-तेल के दीये भी। यहीं पर दर्शन करने वाले चढ़ावा चढ़ाते थे, और छतारे के नीचे दबी-दबी सूखी घास की पत्तियां पवित्र और शुभ वस्तु समझकर दूर-दूर के गांव और चरागाहों में ले जाते थे।

धीरे-धीरे इस विशाल वृक्ष के नीचे पुजारियों के रहने के लिए एक लकड़ी का मकान बना दिया गया, क्योंकि यह शाह बिलूत का वृक्ष शताब्दियों पुराना मालूम होता था, और अब तो वह मकान भी इतना पुराना मालूम होता था कि उसने भी शाह बिलूत के काले तने का रंग धारण कर लिया था।

इस मकान में पूजा का सामान रहता था, और राक्सू का चढ़ावा भी, और यहीं पर कबीले के पुजारी उन तेरह पवित्र पुस्तकों का पाठ करते थे, जो कबीले के लोग काफिरिस्तान से यहां लाए थे।

शाह बिलूत के इस पेड़ की प्रसिद्धि इतनी दूर-दूर तक फैली कि कबीले के लोगों के अतिरिक्त दूसरे लोग भी अपनी मिन्नतें मनाने के लिए आने लगे। इस पेड़ के नीचे कभी-कभी साधु-संत, पीर और फकीर और सूफी लोग भी देखे जाने लगे।

वे लोग यहां कई-कई दिन और रात रहते, और संसार रचने वाले की ऊंचाई तक पहुंचने के लिए अपने आत्मिक अनुभवों का बखान करते। कभी कोई दूसरे धर्म का यात्री भी आ जाता और महीनों इस पेड़ के नीचे ठहरता और कबीले के पुजारी कभी उससे घृणा न करते,

क्योंकि उनकी दृष्टि में राक्सू इस दुनिया का सबसे बड़ा देवता है, इसलिए सब धर्मों के लोग इस पेड़ के नीचे ठहर सकते थे।

फिर उस पेड़ के नीचे एक अद्भुत घटना घटी और यह घटना शताब्दियों पुरानी है और इसी सुकोमल सुन्दर लड़की से संबंधित है, जिसका नाम तोरा था और जो इस पवित्र वृक्ष की पहली पुजारिन थी।

सात वर्ष तक तोरा इस पेड़ के नीचे रही, और सात वर्ष तक दिन और रात उसने पवित्र राक्सू की पूजा की। कहते हैं, वह हर दिन सुबह और रात सोने से पहले राक्सू की तस्वीर के नीचे, पेड़ के तने के नीचे की धरती को, जहां से पेड़ उगा था, अपने सुनहरे बालों से झाड़ू देकर साफ करती थी, और दोनों समय उसका यह काम था और पवित्र कर्तव्य था, जिसे वह पवित्र भक्ति-रस-भरे गीत गाकर पूरा करती थी।

एक शाम वह सोने से पहले उसी प्रकार अपने लम्बे बालों से झाड़ू दे रही थी, और अपने लम्बे-लम्बे सुनहरे बालों के लच्छों से धरती साफ कर रही थी कि वह एकाएक रुक गई, उसकी निगाहों के सामने दो पांव खड़े थे।

तोरा ने धीरे-धीरे अपनी आंखें उठाई और धीरे-धीर उसकी निगाहें पांव से उठकर उस छवि से सर तक पहुंचीं जो छवि उसके समक्ष खड़ी थी। वह एक नौजवान की छवि थी, और ऐसा सुन्दर नौजवान उसने अपने जीवन में कभी न देखा था : वह बारहसींग वाली वहशी मगर सुन्दर आंखों से उसे देख रहा था और देखता चला गया।

और धीरे-धीरे यों हुआ कि तोरा सब कुछ भूलकर अपने सुनहरे बालों से उसकी पांव की धूल साफ करने लगी।

अजनबी ने एक पग पीछे को हटा दिया तो तोरा ने वहीं बैठे-बैठे अपने बालों की लट आगे उसके पांव की ओर बढ़ा दी। अजनबी ने दूसरा पग पीछे हटाया तो उसने अपनी लट और आगे बढ़ा दी, क्योंकि तारा के बाल बहुत लम्बे थे और सुना है कि उसके टखनों तक आते थे।

तीसरा पग पीछे हटाकर अजनबी ने अजीब निगाहों से तोरा की ओर देखा, और तोरा को ऐसा लगा जैसे चारों ओर धुंध फैलती जा रही है, और प्रकाश का एक गोलाकार-सा है, जो उस धुंध में इस अजनबी की छवि के चारो ओर खिंचा हुआ है। वह इन आकर्षक आंखों के मार्ग पर उसके पीछे-पीछे चलती गई। यहां तक कि वे दोनों नीचे अच्छन ढोक के गांव में पहुंच गए।

मगर तोरा और अजनबी अच्छन ढोक से नीचे कहीं न जा सके, कबीले के सरदार ने उन दोनों को कत्ल कर दिया। उसके लड़की के घर के सामने ही उन दोनों की कब्र है, जहां राक्सू की पहली पुजारिन और वह अजनबी दफन किए गए थे। इस कब्र की आज भी पूजा होती है क्योंकि यह दो प्यार करने वालों की कब्र है।

मगर तोरा का दोष यही था कि उसने राक्सू की पुजारिन होकर एक आदमी से प्रेम करना चाहा। उस दिन से यह निर्णय कर लिया गया कि राक्सू देवता की पवित्र तस्वीर की पूजा करने के लिए कोई औरत पुजारिन नहीं बन सकेगी।

यह और इस प्रकार से सैकड़ों किस्से-कहानियां, चमत्कारों और चकित कर देने वाली घटनाओं का एक सिलसिला है, जो सैकड़ों साल से इस पेड़ के साथ एक देवमाला के रूप में इनके चारों ओर लिपटा हुआ है।

सबने इस मन्दिर के सम्मान, पवित्रता और इसकी मान-मर्यादा में बढ़ोतरी की है, शायद इसी प्रकार से इंसान धीरे-धीरे कण-कण अपने-आपको चुनकर इकट्ठा करता है, यहां तक कि एक दिन यह ढेर आकाश से भी ऊंचा और पवित्र हो जाता है।

आँगी गरजन ढोक में अपनी भेड़-बकरियां चरा रही थी। सैकड़ों भेड़-भकरियों का झुंड मै-मै करता हुआ घास चर रहा था। गरमी का मौसम पूर्ण यौवन पर था। आँगी ने ऊन का चोगा उतारके रेशम का चोगा पहन रखा था। जिसके सीने पर ऊदे रंग के बेल-बूटे कढ़े थे। उसकी दादी दूरमा दूर झील गिरोवर के किनारे ही-हरी नर्म दूब पर हवा के हल्के-हल्के झोंके खाती हुई सो गई थी। उसका मुँह थोड़ा-सा खुला था, और पोपले मुँह की झुर्रियों में किसी चींटियों के बड़े भट्टे के सुराख की तरह दिखाई दे रहा था।

आँगी ने सोचा, 'क्या बुढ़ापे में उसका चेहरा भी ऐसा हो जाएगा?'

उसने झुककर झील के पानी के दर्पण में अपनी छवि को झिलमिलाते देखा, अभी तो वह अठारह साल की भी नहीं है मगर

बादामी चोगे के ऊपर ऊदे-ऊदे फूलों वाले बेल-बूटों के अन्दर दो सेब-से उभरे हुए दिखाई दे रहे हैं। आँगी उन्हें देखकर शर्मा गई।

फिर उसने अपने होंठों को देखा, गहरे लाल रंग के कमान की भांति फटे हुए और छोटे। उसका मुँह किसी जंगली गुलाब के छोटे-से गहरे लाल फूल की तरह का था--जिसके बीच में बर्फ का गोला रख दिया गया हो। आंगी मुसकराई, और गरमी के मौसम की सफेद और चमकीली बर्फ की भांति दांत उसके होंठों के अन्दर दमकने लगे।

उसने अपनी गर्दन से सुनहरे रेशमी बालों की एक लट झटककर फिर अपनी दादी दूरमा की ओर देखा, ऊंह, अभी तो वह अठारह वर्ष की भी नही हुई और जब वह दादी सूरमा की तरह अठहत्तर वर्ष की हो जाएगी, फिर अपने पोपले मुँह के संबंध में सोचेगी।

दूध की रंगत ऐसी ठोड़ी, सीपी-सी कान, और सेब की लाली लिए हुए गाल और आंखें कितनी बड़ी, कितना वहशी; कितनी मनमोहक। वह अपनी आँखों को देखकर डर गई। उसने जल्दी से झील के पानी के दर्पण में दिखाई देती अपनी छवि के बीच में उंगली डालकर उसे तितर-बितर कर दिया।

अब उसकी छवि एक हजार गोलाकारों में टुकड़े-टुकड़ होकर झील के पानी में किरणों की शतरंजी फैला रही थी। छवि झील में खिले हुए कमल के फूलों से जा टकराई, और आँगी ने अपना चोगा जरा-सा ऊपर उठा लिया। उसे अपने सफेद पैर और बर्फ के गोलों जैसे कोमल टखने दिखाई दिए। फिर वह झील के किनारे के पानी में उतर गई और

हाथ बढ़ाकर कमल के चौड़े-चौड़े थालीदार पत्तों के बीच खिले हुए कमल के फूल, उनकी लम्बी डंडियों समेत, तोड़ने लगी।

अभी उसने आठ-दस फूल तोड़कर किनारे पर फेंके थे कि उसे एक बकरी के बच्चे के कराहने की आवाज सुनाई दी, जो जोर-जोर से चिल्लाकर रो रहा था और सहायता के लिए पुकार रहा था। उसके गले में एक अजब बेचैनी पैदा हो गई थी, और बहुत-सी बकरियां एक सुरमई चट्टान पर खड़ी हुई बा-आ-बा-आ कर रही थी।

आँगी पानी से निकलकर जल्दी से उधर भागी, जिधर से बकरी के बच्चे के कराहने और बकरियों के बेचैन होकर बा-आ-बा-आ करने की आवाजें आ रही थी। उसने वहां जाकर देखा, एक ऊँची चट्टान के नीचे गहरी खाई में बकरी का एक छोटा-सा सुन्दर बच्चा गिर पड़ा था। वह अपना छोटा-सा मुँह बार-बार खोलकर सहायता के लिए पुकार रहा था, वहाँ की गहरी खाई में अभी तक बर्फ पिघली न थी। वह बर्फ पर जा गिरा था, और अब बर्फ की ठंड में कांपते हुए रो रहा था -- और बच्चे की माँ और उसकी सहेलियाँ, वे समस्त बकरियाँ ऊँची चट्टान पर खड़ी बेबसी से बा-आ-बा-आ कर रही थी।

आँगी ने खाई के ऊपर खड़े हुए लम्बे-लम्बे भूरे बालों वाले अबोध बच्चे की पुकार सुनी, और उसका जी चाहा कि वह खाई में उतर जाए, और गोद में लेकर उठा लाए। मगर जब उसने सोचा तो उसे ज्ञात हुआ कि खाई इतनी गहरी है कि वह उसके अन्दर तो उतर सकती है और बकरी के बच्चे को अपनी गोद में भी ले सकती है, मगर खाई से बाहर नहीं निकल सकेगी।

हाँ, यदि इस समय उसका बाप सरदार बलवाल यहाँ होता जिसका कद छः फुट से ऊँचा है, वह अगर इस समय बकरी के बच्चे को बचा सकता था।

वह इस उलझन में थी कि क्या करे? उसका बाप तो नीचे अच्छन ढोक में था, और वहाँ जाते और उसे साथ लाकर यहाँ आते गहरी रात हो जाएगी, और रात-भर अगर बकरी का बच्चा यहीं पड़ा रहा तो सर्दी से मर जाएगा। अपनी बूढ़ी दादी दूरमा को जगाने से भी कोई लाभ नहीं है। कभी दादी दूरमा ऊंचे लम्बे कद की होगी, मगर अब तो वह झुक गई थी। वह न तो बकरी के बच्चे को खाई से निकाल सकती थी, और न आँगी को खाई में उतर जाने के बाद बाहर निकाल सकती थी, 'दादी दूरमा को जगाना बेकार होगा।' एकाएक उसने अपने पीछे एक आदमी को खड़े देखा, वह चौंककर पलटी।

"तुम कौन हो ?" उसने डरकर पूछा।

"मै एक परदेशी हूँ। मेरा नाम चनन है। मैं बहुत दूर से आया हूँ, और पुजारी शोपान से पढ़ने आया हूँ।"

शाह बिलूत के पुजारियों में शोपान पुजारी का दर्जा सबसे ऊँचा था। शाह बिलूत के मन्दिर का वही सबसे बड़ा महन्त था।

आँगी ने चनन को सर से पांव तक देखा : लम्बा, मगर उसके बाप की तरह बहुत लम्बा भी नहीं, आंगी से लगभग छः इंच ऊंचा होगा। दुबला, मगर इतना दुबला भी नहीं कि सूखा-सड़ा दिखाई दे। सर के बाल भूरे और बेढंगे-से बिखरे हुए, भूरी आंखें और खिंचे हुए

गाल, भूखे होंठ, सूखे हुए मगर पतले, वर्षों का भूखा आदमी मालूम होता था। वह हल्की सुर्मई ऊन का चोगा पहने हुए था और चोगे की खुली-खुली ढीली बांहें उसकी कलाई तक पहुंचती थी। वह बगल में कुछ पुस्तकें दबाए था। उसने कहा :

"बकरी का बच्चा खाई में जा गिरा है, मैं देख सकता हूँ। इसे निकालना भी होगा, मगर तुम उसे निकाल न सकोगी, यह भी देख सकता हूँ।"

वह हौले से मुसकराया। बड़ी अजब लजीली-सी मुसकराहट उसकी थी। और जब वह मुसकराया तो आँगी का सारा डर दूर हो गया। यह नौजवान पहली बहार की हल्की बर्फ की तरह भोला था और बनफशे के फूलों की तरह शर्मीला।

आँगी ने उससे कहा, "मैं नीचे खाई में उतर जाती हूँ बच्चा उठाकर ऊपर तुम्हारी ओर फेक दूंगी, फिर तुम मुझे ऊपर उठा लेना।"

"नहीं।" चनन बोला, "मैं स्वयं खाई में उतरकर बच्चे को निकाल लाऊंगा।"

"खाई गहरी है" आँगी बोली, "और उसके अन्दर बर्फ जाने कितनी गहरी और नर्म हो, तुम्हारे पांव धंस जाएंगे।"

उत्तर में चनन ने कुछ न कहा। उसने अपनी पुस्तकें बगल से निकालकर आँगी को दी और उससे कहा, "इन्हें जरा थाम लो।"

आँगी ने पुस्तकें ले लीं। अजनबी नौजवान ने उसके हाथों को स्पर्श करने की चेष्टा नहीं की। आँगी के हाथ में केवल पुस्तकें आई, उस नौजवान का स्पर्श नहीं।

फिर वह खाई में हौले से सावधानी से उतर गया। खाई में उतरकर उसने बकरी के बच्चे को गोद में लिया और फिर उसे उछालकर धीरे से खाई के बाहर फेंक दिया।

बकरी के बच्चे ने कराहकर अपने शरीर को फुरहरी लेते झटका ... बकरियां चट्टान पर से उतर आईं। उसकी मां बच्चे के पास आई और उसे चाटने लगी।

आँगी ने पुस्तकें हरी दूब पर रख दी, और दोनों हाथ, सेब की डाली की भांति सुडौल और सुन्दर हाथ, नीचे अजनबी की ओर बढ़ाते हुए कहा, "अपने हाथ मेरे हाथ में दे दो, मैं खाई से बाहर निकलने में तुम्हारी सहायता करूंगी।"

मगर अजनबी ने फिर उसके हाथों को नहीं छुआ। वह उचककर खाई के ऊपर वाली चट्टान से लटक गया। आँगी को आभास हुआ कि नौजवान दुबले और झुके चेहरे का होते हुए भी शक्तिमान और मनमोहक है। दोनों बार उसका जी चाहा था कि वह उसके हाथ छू लेती, मगर नौजवान ने ऐसा न होने दिया। दिल में उसके एक अजब-सी निराशा हुई।

"बड़ी मेहरबानी की तुमने चनन।" आँगी ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें झुकाकर कहा।

"ना, कोई मेहरबानी न हुई यह, अगर मैं बच्चे को अकेला खाई में गिरा देखता तब भी यही करता।"

एक क्षण के लिए आँगी का दिल कांपा, यह सोचकर कि वह स्वयं ही इस खाई में क्यों न गिर गई। वह ध्यान से उस नौजवान की दुबली, लम्बी-लम्बी अंगुलियों को देखने लगी, जाने इन हाथों का स्पर्श कैसा होगा। पहले क्षण की पहचान ही से वह क्यों इन हाथों के स्पर्श के लिए सोच रही है, उसने आज तक किसी के लिए ऐसा नहीं सोचा।

नौजवान बोला, "तुम्हारा नाम आँगी है क्या ?"

आँगी का दिल धक से रह गया, "तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम हो गया ?"

"मेरी सूरत पर क्या मेरा नाम लिखा है ?"

"तुम्हारी सूरत पर उस सुन्दरता का नाम लिखा है जो जमदयालों की सात पीढ़ियों में विख्यात है। दूर-दूर वादियों, घाटियों में सरदार बलवाल की लड़की आँगी की सुन्दरता की धूम है। आज का दिन बड़ा शुभ है, मैंने तुम्हें देख लिया।"

उसकी लम्बी सुन्दर अंगुलियों ने घास पर पड़ी हुई पुस्तकों को उठा लिया, और वह बोला, "अच्छा मैं चलता हूँ। शाह बिलूत का मन्दिर क्या यहां से बहुत दूर है ?"

आँगी इतनी लजा गई थी कि उसने कुछ पलों के लिए मुँह फेर लिया था। जाने क्या बात है, उसे इस अजनबी से अपनी प्रशंसा

बिल्कुल बुरी नहीं लगी। दूसरे नौजवानों और मर्दो की प्रशंसा सुनकर वह डर जाती थी, घबरा जाती थी।

उसकी निगाहें नौजवान की बेचैन उंगलियों पर पड़ीं। उसका जी चाहा कि वह इन हाथों की एक-एक पोर पर अपने कोमल हाथ फेरकर उनकी बेचैनी दूर कर दे।

आँगी ने धीरे से कहा, “राक्सू भगवान का मन्दिर यहाँ से बहुत दूर है। मगर अभी जाकर क्या करोगे? तीसरे पहर जब मैं बकरियां वापस ले जाऊंगी, मेरे साथ चलना। मैं तुम्हें वहां पहुँचा दूंगी।”

“फिर नीचे अपने गांव चली जाओगी।” चनन बोला, मगर बोलने से कुछ-कुछ हिचकिचाया, और आँगी ने देखा कि उसकी तड़पती हुई बेचैन उंगलियां आपस में उलझी जा रही हैं, जैसे उनमें किसी बात का निर्णय हो रहा हो।

फिर वह बोला, “बात यह है कि मुझे शीघ्र मन्दिर मैं पहुँच जाना चाहिए, क्योंकि मैं बहुत दूर से आया हूँ, और...”

एकाएक वह रुक गया, और उसकी उंगलियां एक-दूसरे में जोर से गुंथ गई, जैसे आगे वह कुछ न कह सकेगा।

आँगी ने नरमी से कहा, “यह दोपहर का समय है, खाने का समय है। एक टुकड़ा रोटी का मेरे साथ तोड़ लो, फिर नीचे चले जाना। मैं मार्ग दिखा दूंगी।”

उसकी उंगलियां कांपी, जैसे वह हाँ-ना, ना-हाँ में निर्णय कर रही हो, फिर वे पुस्तकों पर सख्ती से जम गई।

वह सर झुकाकर आँगी के पीछे-पीछे, चलने लगा, फिर जरा आगे बढ़कर उसके साथ-साथ चलने लगा। आँगी को ऐसा लगा जैसे धरती और आसमान उन दोनों के साथ चल रहे हों।

झील के किनारे पहुँचकर आँगी पहले फूलों की एक लम्बी-चौड़ी क्यारी में बैठ गई। यहीं पर उसकी दादी दूरमा सो रही थी, यहीं पर एक ओर कपड़े में लिपटा हुआ खाना रखा था, यहीं पर कमल के दो फूल रखे थे, जो वह झील के पानी में से तोड़ लाई थी।

आंगी फूलों की क्यारी के बीचोंबीच बैठ गई, जैसे कोई राजकुमारी सुनहरी किरणों के सिंहासन पर बैठ जाए।

चनन उसके पैरों की ओर बैठकर उन कोमल टखनों को देखता रहा, फिर उस फूलों के गुच्छे, ऐसे जिसका रंग याकूत को भी लजा रहा था, को देखता रहा, फिर चमकते माथे की महराब को, जो माथे में बीचोंबीच दोनों भौहों के बीच सोच की लकीरों पर आधारित थी, सुनहरी बालों की लट खुलकर कपोलों पर लटक आई थी। कपड़े को खोलते-खोलते आँगी ने दो बार इस लट को परे पीछे, हटाना चाहा; मगर बड़ी शरीर लट थी, बड़ी नटखट थी, बार-बार उसके गाल पर आ जाती।

लिपटे हुए कपड़े में से मकई की रोटियों की सोंधी-सोंधी सुगंध आई। दो रोटियाँ थी, ऊपर-नीचे। आँगी ने दोनों रोटियों को खोला, अन्दर से लौकी का अचार निकला और एक तेज तीखी मिर्चों और तेल की महक, और अचार के साथ एक कोने में दबा हुआ भुना हुआ पनीर।

आँगी ने एक रोटी चनन को दी, लौकी के अचार का एक डला उसे दिया, और आधा भुना हुआ पनीर।

चनन ने एक टुकड़ा तोड़ा, रुक गया, और दादी माँ की ओर संकेत करके बोला, "वह नहीं खाएगी ?"

"नहीं...." आँगी बड़े धीरे से बोली, "दादी मां जल्दी भूख लगती है, वे खाकर सो गई है।"

देर तक वे दोनों बिछे हुए कपड़े पर एक साथ कौर तोड़ते रहे और खाते रहे।

चनन ने कहा, "यह भुना हुआ पनीर तीतर के मांस से भी ज्यादा स्वाद रखता है।" दोनों बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे थे, कहीं दादी माँ जाग न जाए।

आँगी बोली, "यह मेरे हाथों का पनीर है, इसकी कलाडी मैंने पिछली सर्दियों में तैयार की थी।"

चनन ने जैसे स्वप्न-काल में आँगी के हाथों के पनीर को मथकर अपने दोनों क्वारे हाथों में बादलों जैसे सफेद टुकड़ों को जोड़-जोड़कर दोनों हाथों से कलाडी को जमाने और फिर उसे धूप में सुखते देखा। मकई की रोटियों के बराबर कितनी ही कलाडियां थी, जो एक रस्सी के सहारे हवा में और धूप में झूल रही थी, पनीर की कलाडियां जिनमें आंगी के क्वांरे हाथों की सुगंध थी।

चनन ने जेब से बादामी रंग का एक कपड़ा निकाला और आधी रोटी, आधे आचार और आधे पनीर को उसमें सावधानी से रखकर लपेटकर वापस अपने चोगे की जेब में रख लिया, और बोला, "इसे रात को खाऊँगा।"

"क्यों ?" आँगी बोली, "रात को तुम्हें मन्दिर में खाना मिलेगा। कोई भी परदेशी वहाँ तीन दिन तक खाना खा सकता है।"

"नहीं।" चनन ने बड़े नर्म लहजे में कहा, "मैं बस इतना ही खाता हूँ, आधी रोटी मकई की या ज्वार की।"

"बस ?" आंगी ने आश्चर्य से पूछा।

"बस।" चनन ने हवा जैसी धीमी आवाज में कहा, "मैं रात को देर तक पढ़ता हूँ, इसलिए मुझे कम खाना चाहिए, और फिर ऐसा पनीर शायद मन्दिर में भी न मिले।"

आँगी के जी में आया कि वह उससे कहे, अगर तुम कहो तो रोज तुम्हारे लिए कलाडी का भुना हुआ पनीर मन्दिर में ले आया करूं। मगर फिर उसे इस विचार पर बड़ी झिझक सी आ गई। वह अपने विचार से स्वयं ही लजा गई और धीरे-धीरे कपड़े को तह करने लगी।

और जब वह कपड़ा तह कर रही थी, तो अजनबी ने झील के किनारे जाकर हाथ धो लिए थे, और अब वह इन कमल के फूलों की डंडियों को एक-दूसरे से मिलाकर एक गोलाकार के रूप का हार गूंथ रहा था।

"किसके लिए ?" आँगी ने सोचा।

उसका चेहरा लाल हो गया, सुनहरे रंग पर लाली दौड़ गई। "क्या मेरे लिए ! मगर इस अजनबी को क्या अधिकार है ?"

वह उसकी बेचैन उंगलियों को हार गूंथते देखती रही, फिर जब हार पूरा गुंथ गया तो चनन ने आँगी की ओर देखे बिना उस गोलाकार कमल के हार को झील के पानी में डाल दिया और धीरे से बोला, "अब मैं जाऊंगा, मन्दिर का रास्ता बता दो।"

इसका रास्ता तो मेरे दिल में से होकर जाता है, आँगी के मन में आया। मगर उसने तत्काल ही इस विचार को वहीं दबा दिया।

धीरे से बोली, "पश्चिम की ओर, नीचे उतरते जाओ। कोई आधे-पौने मील की दूरी पर नीचे तुम्हें शाह बिलूत का पेड़ मिलेगा। एक ही पेड़ है उस स्थान पर। आसपास इलाके में कोई पेड़ नहीं है, इसलिए तुम उस जगह को भूल नहीं सकते।"

चनन ने उसको धन्यवाद दिया और अपने मार्ग पर चला गया। एक बार भी उसने मुड़कर नहीं देखा। आँगी देर तक उसे देखती रही, फिर जब वह नजरों से ओझल हो गया, तो उसने मुड़कर खड़े-खड़े झील के पानी पर निगाह डाली।

झील के पानी में वह गोलाकार हार हौले-हौले तैरता हुआ उसकी परछाई के निकट आया, निकट आता गया। अब वह उसकी पड़ती हुई परछांई के चारों ओर घेरा डाले हुए था, आँगी को ऐसा लगा, जैसे किसी ने वह हार उसके गले में डाल दिया हो, वह सहम गई।

"लड़की, क्या देखती है पानी में ? जब देखो झील के दर्पण में अपनी सूरत देखती रहती है।"

एक कठोर आवाज आई।

आँगी ने मुड़कर देखा, दादी दूरमा जाग गई थी।

चनन को मन्दिर में आए हुए कुछ दिन ही हुए थे कि इतने समय में पुजारियों के बड़े महन्त शोपान ने देख लिया था कि उसके शिष्यों में चनन सबसे बुद्धिमान है। इन कुछ दिनों में उसने पवित्र और प्राचीन जेन्द के डेढ़ सौ पृष्ठ पढ़कर याद कर लिए थे। और अब वह उन तेरह पवित्र पुस्तकों के पाठ करने में व्यस्त रहता था, जो जमदयाल कबीले के बुजुर्ग काफिरिस्तान से लाए थे।

आज शोपान नीचे अच्छन ढोक के गांव में किसी बहुत बीमार और मृत्यु के निकट पहुँची हुई एक बुढ़िया के झाड़-फूंक के लिए गया हुआ था, और दूसरे उसके कई शिष्य नीचे की ढोक में मन्दिर के लिए रोटियां और तरकारी इकट्ठी करने के लिए गए हुए थे।

शाह बिलूत के मन्दिर में इस समय शोपान के पांच शिष्य मौजूद थे : सोमा, डंजी, चाकर, कागर और कोलात। साधारणतः चनन दूसरे शिष्यों से अलग-अलग रहता था, या आंखें खोले पलकें झपकाए स्वप्नावस्था में वायुमण्डल में जाने कैसे-कैसे सपने देखते-देखते खो जाता, ऐसा लगता जैसे उसे आसपास के वातावरण से या दूसरे शिष्यों और पुजारियों की बातों और उनकी क्रिया में कोई रूचि नहीं है।

कुछ घंटों से इसी शाह बिलूत के पेड़ के नीचे लकड़ी के मन्दिर के बाहर अधेड़ आयु की एक नाइन, जिसका नाम सिम्मी था, वह भी कहीं दूर से आई थी और आराम कर रही थी। उसके बाल खिचड़ी थे, माथा चौड़ा था। चेहरे पर समझदारी और आंखों में बौद्धिकता की चमक थी। वह ध्यान से शिष्यों की बातें सुन रही थी।

चाकर कह रहा था, "कहते हैं तालान काहन सदा सोने की कुर्सी पर बैठता था, जिसकी पीठ पर राक्सू देवता का मुकुट बना हुआ था और उस मुकुट में एकसे हीरे-मोती जड़े थे, जो दिन में दस-बारह रंग बदलते थे।"

"और मैंने सुना है," डागर कहने लगा, "कि शोपियों का काहन सूसाशाह जब खाना खाता था तो दस नफीरी वाले नफीरी बजाते थे, और दो ढफ बजाते थे, और एक नट खंजरी लेकर नाच दिखाता था। और जब काहन सूसाशाह कहीं बाहर जाता तो इसकी पालकी को आठ वर्दी पहने हुए मजदूर उठाते थे, जिनकी वर्दियों पर सोने का काम टंका था।"

सोमा बोला, "और मैंने सुना है कि जब देरांग का काहन रात को अपने शयन-कक्ष में सोने को जाता तो उसकी खड़ाऊं सोने और चांदी की होती थी।"

सिम्मी नाइन ने उकताहट से खांसकर कहा, "क्या बात करते हो, किसी काहन की बड़ाई सोने की खड़ाऊं से नहीं होती। यहां से बहुत

दूर वल्नयाल कबीले का काहन रातम बकूला इतना गरीब था कि उसका ऊनी चोगा सदा फटा रहता था, और वह हर रोज गांव के किसी एक घर से एक रोटी भीख मांगकर खाता था; मगर नेकी, पवित्रता और विद्या में वह तुम्हारे किसी महन्त से कम न था।"

कोलात कहने लगा, "तुम बात को समझती नहीं हो सिम्मी नाइन! जब हम काहन तालान की सोने की कुर्सी या सूसाशाह की सोने की पालकी की बात करते हैं, तो हम उनकी दौलत की सराहना नहीं करते। बड़ाई दौलत से नहीं आती है, यह हम भी जानते हैं। हम इन चीजों के अन्दर छिपी हुई दूसरी बातों की ओर संकेत करते हैं, वह रहस्य जो सोने की कुर्सी, दस नफीरियों और सोने-चाँदी की खडाऊंओं में छुपा है।"

"और वह है क्या ?" डंजी बोला जो शिष्यों में कमजोर था।

कोलात गर्व-भरे लहजे में बताने लगा, "असल नुक्ता यह है कि वह सोने की कुर्सी कुर्सी नहीं थी, वह नफीरी वाले नफीरी नहीं बजाते थे, वे सोने की खड़ाऊं सोने की खड़ाऊँ न थीं, वह उन चीजों की परछाइयाँ थीं जो बड़ाई को उजागर करती है।"

चाकर ने कहा, "मुझे याद आया, एक दिन महन्त तालान को एक गरीब और एक अमीर के बीच का झगड़ा निपटाना था। काहन तालान ने गरीब आदमी की शिकायत सुनी, फिर उन्होंने अमीर आदमी का उत्तर सुना और वह उत्तर सुनकर उन्हें विश्वास हो गया कि गरीब आदमी के पक्ष में फैसला कर दिया।

अमीर आदमी इस फैसले पर बहुत बिगड़ा। उसने महन्त से कहा, "मैं इस फैसले को मानने से इन्कार करता हूँ।" इस पर काहन ने कहा, "यह मेरा फैसला है और तुम्हें यह स्वीकार करना होगा।"

अमीर आदमी ने उंगलियां चटखाकर कहा, "जाओ, जाओ, क्या तुम और क्या तुम्हारा फैसला ?"

"इस पर महन्त तालान उठकर खड़ा हो गया। उसके हाथ में पवित्र छड़ी थी। उन्होंने बड़े रोबदार लहजे में कहा, "अगर तुमने मेरा फैसला न माना तो मैं तुम्हें इस छड़ीदार असा से पीट-पीटकर ठीक कर दूंगा।"

"इस पर अमीर आदमी को बहुत क्रोध आया, और उसने काहन तालान को बहुत गन्दी-गन्दी गालियां दीं। काहन चुपचाप मुसकराता हुआ गालियां सुनता रहा। फिर एकाएक उसने अपना छड़दार असा घुमाकर जो उस अमीर आदमी की ओर फेंका तो वह असा सांप बन गया और अमीर आदमी का पीछा करने लगा।

अब तो अमीर बहुत घबराया, बहुत गिड़गिड़ाया। उसने कान पकड़े, काहन के पांव पकड़े और उसके हर आदेश को मानने के लिए तैयार हो गया। इस पर काहन तालान ने एक मंत्र फूँका और वह सांप फिर महन्त के हाथ में आकर असा बन गया।"

डंजी सुनकर बोला, "हा-हा-हा, महन्त का डंडा बड़े-बड़े अमीरों को सीधा कर देता है।

सोमा बोली, "तुमने कहानी को गलत ढंग से सुनाया है : वह असा जन्नत का सांप था, जिसके कारण हजरत आदम जन्नत से निकाले गए।"

चाकर बोला, "निस्सन्देह वह सांप पहला सांप न था, पहला सांप तो शैतान को कहते हैं। महन्त तालान एक पवित्र कार्य के लिए शैतान को कैसे इस्तेमाल कर सकता था।"

"महन्त तालान को भली प्रकार मालूम होगा कि वह क्या कर रहा है ?" डागर ने कहा।

चाकर बोला, "मैं झूठ नहीं कहता हूँ जिस गाँव की यह घटना है, वहाँ के सैकड़ों लोग इसकी साक्षी दे सकते हैं। उन्होंने अपनी आंखों से उस असा को सांप बनते हुए देखा। और तुम कहते हो कि ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि तुम कुछ जानते नहीं हो, इसलिए केवल बहस के लिए..."

सोमा बोला, "मैं बहस करना नहीं चाहता मैं तो यह कहता हूँ कि उस सांप को किसी मंत्र-तंत्र या आदेश से बुलाया नहीं जा सकता।"

सिम्मी बोली, "हाँ, मैं तुमसे सहमत हूँ, अगर वह पहला सांप था, तो समझो वह शैतान था, और शैतान को किसी के आदेश से बुलाया नहीं जा सकता है। वह नाम जिसके अन्दर ऐसी आग की शक्ति है, जो पहाड़ों को पिघलाकर उन्हें समतल स्थान में बदल सकती है।"

सोमा बोला, "क्या उस दूसरे नाम को जुबान पर लाने से कोई खतरा आ सकता है ?"

“मैं नहीं जानती।” सिम्मी नाइन सर हिलाकर बोली, “मुझे इतना मालूम है कि किसी अत्यन्त तेज भावना के धारे में बहते हुए कभी वह नाम जुबान पर इस प्रकार आ सकता है, जैसे आग की लपट से चिंगारी फूटे और नाम लेने वाले को जलाकर राख कर दे।”

“जिस गाँव से मैं आया हूँ” चाकर बोला, “वहाँ पर एक जादूगर रहता है, जो सचमुच चमत्कार दिखा देता है। उदाहरण के रूप में वह एक मंत्र पढ़कर आग लगा देता है, दूसरा मंत्र पढ़कर उस आग को बुझा देता है। वह अपनी बंद आँखों से देख सकता है कि एक सौ मील पर क्या हो रहा है, वह दम देकर रूप बदल लेता है, और मुर्दों को जगा देता है। वह अपने-आपको अदृश् य कर सकता है, और बुरी आत्माओं को काबू कर सकता है। शैतान तक को वह बुला लेता है। मैंने स्वयं उसकी जुबान से उसे यह दावा करते सुना है।”

चनन, जो अब तक चुप रहा था, जिसने अब तक इस बहस में भाग नहीं लिया था, उसने आगे बढ़कर चाकर से पूछा, “वह कहाँ है?”

सब शिष्य उसका मुँह देखने लगे। चाकर ने पूछा, “वह कौन ?”

“वह चमत्कार दिखा रहा है।”

“वह और कहाँ हो सकता है सिवाय मेरे गाँव के।”

“और तुम्हारा गाँव क्या यहाँ से बहुत दूर है ?”

‘‘मेरा गाँव ?’’ चाकर ने कहा, ‘‘हाँ बहुत दूर है यहां से, उन दो ढोकों से भी नीचे भूमि स्तर में है।’’

‘‘कितनी दूर ?’’

‘‘यहाँ से दस-बारह रोज का रास्ता होगा।’’ चाकर बोला, ‘‘मगर तुम्हें उस आदमी में इतनी रूचि क्यों पैदा हो गई है ? क्या तुम उससे मिलना चाहते हो ? तो सुन लो, मेरे गाँव का नाम सोनापुर है।’’

‘‘और उस आदमी का नाम ?’’ चनन से पूछा।

‘‘उसका नाम चनन रा है।’’

चनन ने आश्चर्य में डूबकर कहा, ‘‘चनन रा, यानी मिस्त्री हिसाब से चनन का खुदा।’’ वह मुँह बड़बड़ाया, और इस बात पर ध्यान करके वह लगभग चौंक गया और कुछ सोचने लगा।

इतने में डंजी ने कहा, ‘‘बस, बहुत हो गया, रात के समय में हमें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए, विशेषकर इस पवित्र मन्दिर में। अब शाम ढलने वाली है, क्या पता हमारी जुबान से कोई ऐसा टोना निकल जाए, या कोई ऐसी चीज जो किसी की तबाही ले आए। अनजाने में अधिकतर ऐसा हुआ भी है। आओ, मन्दिर का दरवाजा बन्द कर लें।’’

डंजी मन्दिर का दरवाजा बन्द करने जा रहा था कि उसकी टक्कर एक लम्बे, ऊंचे कद के तगड़े आदमी से हो गई। वह उसे पहचानकर आदर से पीछे हटा और कहने लगा, ‘‘सरदार बलवाल आए हैं।’’

शाम की सर्दी कुछ बढ़ चली थी। सरदार बलवाल उन सब शिष्यों से ऊँचे दिखाई देता था। उसने सिम्मी नाइन से कहा, "मैं आज तुम्हारा इंतजार कर रहा था।"

"और मैं कल आने वाली थी।"

"आज क्यों नहीं ?"

"इसलिए कि आज रात तुम्हारी खराब जाती। मैंने सोचा, दिन में आऊँगी और बता दूंगी। कोई अच्छी खबर तो है नहीं, लड़के वालों ने तुम्हारी शर्तें नहीं मानीं।"

"अच्छी खबर हो या बुरी खबर हो, तुम्हें सीधे घर आना चाहिए था।" सरदार बलवाल ने बड़े ही रोबदार लहजे में कहा।

सिम्मी नाइन उठकर खड़ी हो गई।

सरदार बलवाल सीधा तना हुआ खड़ा था। उसकी बड़ी-बड़ी मूंछें ऊपर उठी हुई थीं। चेहरे का रंग तांबे जैसा था और वह भूरे रंग के पशमीने का एक सुन्दर कफतान पहने हुए था।

उसने शिष्यों पर कुछ घृणा-भरी नजर डाली और कहा, "तुममें से चनन कौन है ?"

चनन सबसे अलग बाईं ओर खड़ा था। चुपचाप आगे बढ़कर चनन बोला, "मैं ही चनन हूँ।"

सरदार बलवाल ने उसे सर से पांव तक घूरा। चनन भी सीधा और तना खड़ा था, मगर सरदार बलवाल के कंधे तक शरीर बड़ा ही छरहरा, बल्कि किसी सीमा तक दुबला था, मगर छरहरेपन के होते हुए भी उसके चेहरे और शरीर से स्वाभिमान और भरपूर शक्ति का अनुमान होता था। सरदार बलवाल को देखकर उसने दूसरे शिष्यों की भांति आंखें नीचे नहीं झुकाईं, सीधा खड़ा रहा।

सरदार बलवाल का लहजा कुछ नर्म पड़ गया, उसने कहा, ''पुजारी शोपान ने तुम्हारी बहुत सराहना की है इसलिए मैं चाहता हूँ कि आज से तुम मेरे घर ही रहो। सामान बांध लो, पढ़ने के लिए तुम रोज यहाँ आ सकते हो।''

इतना कहकर सरदार बलवाल घूम गया।

चनन के चेहरे पर एक अजब-सी चमक प्रकट हुई। उसने अपनी कुछ पुस्तकें उठाई और शिष्यों से बिना कुछ कहे तथा गले मिले, सरदार बलवाल के पीछे मन्दिर से बाहर निकल गया।

सरदार बलवाल का घर लकड़ी का बना हुआ था, और दो-मंजिला था। उसके कबीले के बाकी लोगों के पास घर न थे, केवल खीमें थे मगर सरदार का घर श्रेष्ठ लकड़ी का बना हुआ था, क्योंकि वह कबीले का सरदार था। और उस घर से एक और हटकर तोरा और उसके प्रेमी की शताब्दियों पुरानी कब्र थीं, जिस पर अंगूर की बेलें छाया किए हुए

थीं। इस कब्र से कुछ दूरी पर कबीले का कब्रिस्तान था, जिसमें आँगी की माँ भी दफन थी। आँगी जब कभी कब्रिस्तान से गुजरती, तो उसे अपनी माँ की कब्र से मीठी-मीठी लोरियों की अनसुनी आवाज अपने दिल की गहराइयों में आभासित होती थी, और जब वह वहां दीया जलाकर तोरा और उसके प्रेमी की कब्र पर जाती तो उसे लगता जैसे कोई उदास आत्मा उसके पीछे-पीछे आहें भरती हुई चल रही है।

आँगी को कब्रिस्तान वाला भाग बहुत पसन्द था। यहाँ अंगूर की बेलें थीं, और पंजतारे के गुलाबी फूलों वाले पेड़ थे, और आलूचों और खूबानियों के वृक्ष थे, जिनकी डालियां बसंत ऋतु में सफेद-सफेद फूलों से लद जातीं। कहीं-कहीं टीलों और कब्रों पर गहरी हरी-हरी दूब के अन्दर, लम्बी-लम्बी डंडियों के ऊपर नर्गिस के फूल अपनी अनगिनत आँखों से उसे ताकते हुए दिखाई देते - जैसे नर्गिस के वे फूल उससे कुछ कहना चाहते हों, मगर हिचकिचाकर चुप हो जाते हों, फूलों की आँखें जब आंगी की आँखों से मिलतीं, तो आँगी एक अजब-सी मोहकता का आभास करती। उसका जी चाहता वह उन नर्गिसी फूलों को अपने कलेजे से लगा ले। बचपन में वह अकेली कब्रिस्तान में घूमती रहती थी, और अकेली खेलती रहती थी।

अब जवानी में भी इन कब्रिस्तान के लहलहाते पेड़ों और नर्गिसी फूलों के बीच हौले-हौले सैर करना बहुत अच्छा लगता है। उसे ऐसा लगता है जैसे वह यहाँ के रहने वालों को बहुत अच्छी तरह जानती है। दादी दूरमा उसे अधिकतर मना किया करती, ‘‘यों बार-बार हर दिन कब्रिस्तान नहीं जाया करते, कभी-कभी उनकी याद भी ठीक है,

लेकिन जो इस दुनिया से चले गए हैं, उनके निकट हर दिन जाना ठीक नहीं है, घूमने के लिए और बहुतेरी जगहें हैं।”

आँगी चुप हो जाती, सुनी अनसुनी कर देती, फिर जरासा अवसर पाते ही कब्रिस्तान में चली जाती। जाने क्या बात है, उसे यहाँ बड़ा चैन-सा मिलता था।

आँगी का कमरा ऊपर की मंजिल पर था, चनन का कमरा निचली मंलिल में था। चनन के कमरे का दरवाजा घर के बाहर की ओर खुलता था, और पीछे की ओर एक खिड़की थी जो पीछे घर के बरामदे में खुलती थी, जहाँ से चनन घर के खुले आंगन को देख सकता था। उससे मिला-जुला दादी माँ का कमरा था, क्योंकि किचन की देखभाल वह स्वयं करती थी।

चनन अधिकतर यह खिड़की बन्द रखता था, मगर दिन में दो बार यह खिड़की जरूर खुलती थी। कोई बरामदे से बन्द खिड़की के सामने आके घर के अन्दर से उसे बुलाता और खिड़की खटखटाता। चनन खिड़की खोल देता। कभी दादी दूरमा होतीं, अखरोट की थाली में उसका नाश्ता लिए हुए या नौकरानी रजी होती। वे दोनों खिड़की में से नाश्ता बढ़ा देती थीं। नाश्ता रखकर चनन खिड़की बन्द कर देता था। और नाश्ता करके और किताबें उठाकर ऊपर मन्दिर में चला जाता था, जहाँ तक जाने में उसे दो घंटे लग जाते थे। दोपहर का खाना उसे मन्दिर में मिलता था, दूसरे शिष्यों के साथ।

फिर रात को यह खिड़की खुलती, खट-खट से मालूम हो जाता कि उसके लिए खाना आया है, और अगर कभी दादी माँ बीमार होतीं,

या व्यस्त होतीं, या रजी किसी काम से बाहर गई होती, तो आँगी आती थी। मगर उसने कभी खिड़की को खटखटाया न था, कभी खिड़की से हाथ बढ़ाकर नाश्ता न दिया था। वह अन्दर के बरामदे से नाश्ता या खाना उठाए हुए बाहर के दरवाजे से जाती, जो आंगन के बाहर खुलता था और तीन सीढ़ियां नीचे उतरकर बाईं ओर मुड़ जाती, जिधर एक कोने में निचली मंजिल में चनन का कमरा था।

वह चनन के कमरे में सदा दरवाजा खटखटाकर प्रविष्ट होती थी, खिड़की खटखटाकर नहीं। शायद इसे वह असभ्यता में गिनती थी, कि इस प्रकार खिड़की के रास्ते किसी को खाना दे दिया जाए, जैसे किसी नौकर या गरीब भिखारी को देते हैं, या संभव है चनन के लिए उसके आभास दूसरे हों। कुछ भी हो उसने चनन को खिड़की के रास्ते से खाना न दिया था।

वह सदा दरवाजे के अन्दर आती थी, अखरोट की सुन्दर नक्काशीदार थाली हाथों में कंधे से ऊपर उठाए हुए। पहले वह दरवाजा खटखटाती थी। वह दस्तक, मानो किसी ने चनन के दिल पर दस्तक दे दी।

चनन दरवाजे की दस्तक से सदा चौंक पड़ता, धक-सा रह जाता, उसके चेहरे का रंग उड़ जाता। अगर दरवाजा खुला होता तो धीरे से कह देता, "अन्दर आ जाओ।" अगर कुण्डी लगी होती तो उठकर कुण्डी खोल देता था। आँगी थाली उठाए अन्दर आती, मुस्कराकर कहती, "कहो चनन, कैसे हो ?" कभी और कुछ न पूछती, मुसकरा देती। धरती पर कपड़ा बिछाकर, उस पर थाली में से सालन का प्याला

उठाकर सजा देती, मकई की रोटियों या सावल साग और मांस, पनीर या मक्खन, छाछ का कटोरा या दही, मोमी शहद, साफ किया हुआ शहद नहीं बल्कि बर्फ की टुकड़ियों ऐसा छत्ते की छोटी-छोटी मोमी टुकडियों में सफेद स्याल बर्फ की भांति ठंडा शहद, एक सब्जी सदा मांस की होती थी, दूसरी सब्जी कोई तरकारी या दाल या भुनी हुई कलाडी--जिस दिन आँगी खाना खिलाने आती थी, सदा अपने हाथ का बनाया हुआ कुछ तैयार करके लाती थी।

और वह हर दिन नहीं आती थी, वह सुबह या शाम चनन के दिल में एक तस्वीर की भांति चित्रित हो जाती, उसके दिल के चित्रकक्ष में कितने ही ऐसे सवेरे और सांझें टंगी हुई थी।

जब आँगी उसके लिए खाना लेकर आती थी, जब वह कपड़ा बिछाती थी, वह उसकी उंगलियाँ देखता रहता, गाल पर उलझी हुई लट, लाली दौड़ते हुए गाल, जो अधिक से अधिक लाल होते चले जाते थे, जब वह कुछ कहती नहीं थी केवल खाना परोसती जाती थी, धरती पर घुटनों के बल बैठ कर, उसका चोगा घुटनों तक खिंच जाता और वक्षस्थल उभरने लगता और सांस तेज चलने लगती, और बोझिल पलकें आभास के नशे में झुककर गालों से ऊपर न उठतीं और वह खाना परोसकर धीरे से शहद-भरी आवाज में कहती :

"चनन, खाना खा लो।"

'तुम ?"

"मैं खाना खाकर आई हूँ।"

और चनन धीरे-धीरे परोसे हुए खाने की ओर हाथ बढ़ाता और चुपचाप खाना खाने लगता। धीरे-धीरे एक-एक चीज को चखकर, परखकर उसके स्वाद की प्रशंसा करता, या कभी खाते-खाते खोवे की कोई चीज उठाकर उसे देखते हुए उसके सम्बन्ध न रखती हुई सराहना करता। मगर ऐसा बहुत कम होता था, अधिकतर दोनों के बीच खाना खाने के समय एक गहरी चुप्पी रहती थी। गहरी गरम-नरम धारा की भांति इन दो इंसानों के बीच बहती हुई नदी के गुनगुने पानी की तरह शरीर और आत्मा को गुदगुदाती हुई चुप्पी कभी-कभी यह चुप्पी बड़ी कष्टप्रद हो जाती थी। खाना परोसते हुए, रोटी देते हुए, तरकारी का कटोरा चनन के हाथ में थमाते हुए। न सोचते हुए भी आँगी के दिल में यह इच्छा उत्पन्न हो जाती थी कि चनन उसकी उगलियाँ छू ले।

मगर चनन सदा अत्यन्त सावधान रहता था, और संभलकर हाथ बढ़ाता था, कि उसकी उंगलियों का कभी आँगी की उंगलियों से स्पर्श न होने पाए। अन्दर ही अन्दर आँगी इस बात पर झल्ला जाती। यह ऐसे क्यों करता है, यह दूसरे लड़कों की तरह क्यों नहीं है? फिर वह स्वयं ही उनका उत्तर ढूँढ़ लेती, यदि वह दूसरे लड़कों की भांति होता तो शायद आँगी के दिल में चनन के लिए एक आकर्षण भी पैदा न होता। बसन्त ऋतु के एक तीसरे पहर में जब आलचों की डालियों पर सफेद फूल की बदलियाँ छाई हुई थीं, कब्रिस्तान से घूमते-घूमते आँगी ने चनन की आवाज सुनी :

"दादी दूरमा आपको बुला रही हैं।"

"क्या कहती हैं ?"

"कहती हैं, कब्रिस्तान में अधिक घूमना क्वांरी लड़कियों के लिए अच्छा नहीं होता, चलिए।"

आँगी कुछ कहते-कहते रुक गई, फिर पलटकर अपने पीछे खिले हुए नर्गिसी फूलों की एक वसन्तमयी क्यारी को देखकर बोली, "चनन, वहाँ से नर्गिस के फूलों के कुछ गुच्छे तोड़ लाओ और मेरे बालों में लगाओ।"

ऐसी शर्म-भरी बात उसने आज तक न कही थी।

चनन चुपचाप नर्गिस की क्यारी की ओर बढ़ गया। उसने पाँच फूल नर्गिस की डंडियों से तोड़े, पाँच बड़ी-बड़ी वहशी आंखें उसकी ओर देख रही थी।

वापस आकर उसने आँगी को वह फूल देते हुए कहा, "मैंने आज तक किसी के जूड़े में फूल नहीं लगाए हैं, इसलिए स्वयं ही लगा लो इन्हें।"

और आँगी की आखों में आँसू उभरते-उभरते रह गए। उसने होंठ काटकर फूल अपने हाथ में ले लिए। फूल लेते समय भी दोनों के हाथों के स्पर्श अलग-अलग रहे, क्योंकि दोनों हाथों के बीच नर्गिसी फूलों की लम्बी-लम्बी डंडियां थीं।

आँगी तेज-तेज पगों से चलती हुई वापस घर की ओर चलने लगी, उसने चनन को पीछे छोड़ दिया।

एक दिन डाकुओं ने सरदार बलवाल के कबीले पर आक्रमण कर दिया। रात के अंधेरे में उन लोगों ने कई खीमें लूट लिए, कई खीमों

में आग लगा दी। सरदार बलवाल और उसके कबीले के दूसरे लोगों ने सामना किया, मगर डाकुओं का आक्रमण इतना अचानक हुआ था कि सब बकरवाल बौखला गए थे।

डाकू ढाटा बांधे हुए घोड़े पर चढ़कर आए थे। वे खीमों को रौंदते-लूटते चले गए। इससे पहले कि सरदार बलवाल को खबर होती, उसके लकड़ी के घर को आग लगा दी गई। चनन आंखें मलता-मलता बाहर निकल आया। इतना कोलाहल मचा हुआ था कि उसकी समझ में कुछ न आया कि क्या हो रहा है। एक लाठी लेकर वह डाकुओं पर पिल पड़ा।

एक डाकू जो देखने में सबका सरदार लग रहा था, बड़ी तेजी से आक्रमण किए जा रहा था। चनन के शरीर में जाने इतनी स्फूर्ति कहाँ से आ गई। वह एक टीले से उचककर उस घुड़सवार सरदार के घोड़े पर पीछे से सवार हो गया, और उसने डाकुओं के सरदार की कमर में हाथ डालकर इतने जोर से खींचा कि घोड़ा नीचे से निकल गया और दोनों पटखनियाँ खाते हुए एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते नीचे धरती पर लोटने लगे। डाकू का ढाटा खुल गया। चनन उसके सिर पर लाठी का वार करने ही वाला था, कि अचानक ढाटा खुल जाने से वह उस डाकू का चेहरा देखकर रुक गया।

ठीक उसी समय सरदार बलवाल के घर की दूसरी मंजिल से जोर की चीख सुनाई दी। आग की लपटें ऊँची हो रही थी, बाहर का दरवाजा जल रहा था, आग दूसरी मंजिल तक पहुँच रही थी। चनन

ने देखा कि ऊपर के एक कमरे की खिड़की खोलकर आँगी चीखें मारकर नीचे कूद जाने की तैयारियाँ कर रही है।

चनन भागा हुआ आगे गया। उसने हाथ के संकेत से आँगी को कूदने से रोका और स्वयं जलते दरवाजे से अन्दर चला गया। लकड़ी के जीने में भी आग लग चुकी थी। तेजी से दौड़ता हुआ चनन ऊपर की मंजिल में चला गया।

अब आग आँगी के कमरे में आ चुकी थी। चनन ने जल्दी से बिस्तर पर से एक कम्बल घसीटा, उसे पास ही रखे हुए घड़े के पानी में भिगोया और आँगी को वह गीला कम्बल उढ़ाकर उसने जल्दी से उसे अपनी बाँहों में उठा लिया और दरवाजे से बाहर कूद गया। फिर जलते हुए जीने से कूदता हुआ, आग की लपटों के बीच एक भौंरे की भांति नाचता, फलांगता, उछलता, आंगी की जान बचाकर बाहर ले आया।

उसके बाहर आते ही निचली मंजिल ढह गई, जलकर राख हो गई, और सरदार बलवाल का पूरा घर आग की भेंट हो गया।

गीला कम्बल खोलकर उसने आँगी की ओर देखा, जो उसकी बाँहों में बेहोश हो गई थी। अभी तक आँगी के हाथ की उंगलियाँ चनन के हाथ की उंगलियों में मुड़ी-तुड़ी फंसी थीं, इतनी मजबूती से कि उसे मालूम न हो सका कि उसकी अपनी उंगलियां कौन-सी हैं, और आँगी की कौन-सी। काले गीले कम्बल से आँगी का चेहरा यूं प्रकट हुआ जैसे काले बादलों से चांद, बेदाग, कहीं पर उसे कोई कष्ट न पहुँचा था। जब हवा के तेज-तेज झोंके आने लगे, तो आँगी की

आंखे खुलीं, धीरे से पलकें उठाकर उसने देखा, तो उसने चनन का परेशान चेहरा अपने ऊपर झुका पाया।

"आँगी, आँगी तुम ठीक तो हो ?"

"हाँ।" आँगी कमजोर आवाज में बोली, "मैं ठीक हूँ।"

धीरे-धीरे उसे एक टीले की ओट में लिटाकर, वह अपनी उंगलियाँ आँगी की उंगलियों से अलग करने लगा, मगर जैसे आँगी अपनी उंगलियों को उसकी उंगलियों से अलग करने को तैयार न थी । वह आधी धरती पर, आधी उसकी गोद में एक अजब आनन्द-भरे स्पर्श का आभास कर रही थी। उसका रोम-रोम चनन के स्पर्श से सराबोर हो रहा है, वीरानों में फूल खिलते जा रहे हैं, और आलूचों की नंगी डालियाँ फूलों से लदी जा रही हैं, नर्गिस के फूल धीरे-धीरे उसके कानों में खुसर-फुसर कर रहे हैं।

एकाएक वही डाकू इन दोनों के सिर पर आ खड़ा हुआ, जिसे चनन ने घोड़े से नीचे गिरा दिया था।

उसे अपने सिर पर आते देखकर चनन चुपचाप उसके सामने खड़ा हो गया।

डाकू आँगी की ओर संकेत करके बोला, "मैं इसे ले जाऊंगा।"

चनन ने एक अजब निगाह से उसकी ओर देखा और कहा, "ले जा सकते हो, मगर मेरी लाश रौंदकर।"

डाकू कुछ क्षण खड़ा चनन को घूरता रहा। चनन उनकी आँखों में आँखें डाले खड़ा था। डाकू की आँखों में आग की लपटें नाच रही थी और हवा के तेज झोंकों में दाढी के बाल उलझ रहे थें।

चनन ने एक कदम आगे बढ़कर कहा, "मुझे मार डालो फिर आँगी को हाथ लगाओ।"

फिर जैसे डाकू की आँखें बुझ गई, उसने दो उंगलियाँ मुँह में डालकर जोर से सीटी बजाई, और वह सीटी सुनते ही आक्रमणकारियों ने आक्रमण रोक दिया।

डाकू एकाएक अपने घोड़े पर सवार हो गया, और जिस तेजी से वे लोग आए थे, उसी तेजी से वे सब वापस चले गए। चनन ने आँगी को अपनी बाँहों में उठा लिया। आँगी की बांहें उसके गले में हार बनी थीं। और आँगी सोच रही थी, वह डाकू चनन पर हमला किए बिना क्यों चला गया ? चनन के शरीर से कैसी महक-सी आ रही है ! काश यह स्पर्श कभी समाप्त न हो। घर जलते रहें और चनन उसे बचाता रहे।

फिर उसने अपनी आँखें मूँद ली।

चनन ने आँगी को सरदार बलवाल के सामने ले जाकर उसके चरणों में डाल दिया। सरदार बलवाल ने उसे गले से लगा लिया, दादी माँ ने उसका मुँह चूमा, रजी ने बलाएं लीं। कबीले वालों ने उसकी बहादुरी की सराहना की। डाकुओं के सरदार को उसने जिस प्रकार घोड़े से नीचे उतार लिया था, उस दृश्य को बहुत-से कबीले वालों ने देखा था।

शायद डाकुओं का सरदार उस लड़के की बहादुरी से प्रभावित होकर आक्रमण रोककर भाग गया था।

टूटे हुए खीमे, जलता हुआ लकड़ी का घर, घायल चनन जिसके सर के आधे बाल जल गए थे -- कनपटी के निकट एक घाव आया था और बाएं जबड़े की खाल पर एक बड़ा आबला प्रकट हो रहा था।

एकाएक चनन अपने को बहुत थका-थका-सा पाने लगा। उसने आँखें बन्द कर लीं और सरदार बलवाल के चरणों में गिरकर अचेत हो गया।

कुछ महीनों में सरदार बलवाल का नया घर तैयार हो गया। चीड़ देवदार और बिलूत की लकड़ी इसमें लगी थी, यह मकान पहले से भी बड़ा और शानदार था।

इन कुछ महीनों में चनन के पांव पर आग जलने से जो जख्म आए थे वे अच्छे हो गए थे, सर पर झुलसे हुए बालों के स्थान पर नये बाल निकल आए थे, केवल जबड़े पर जली हुई खाल का एक गोल दाग रह गया था, जिसके अदृश्य होने की कोई आशा न थी।

वे लोग आंगन में बैठे हुए थे, दादी दूरमा धूप सेंक रही थी, आँगी तकली पर ऊन बट रही थी, रजी किचन में खड़बड़ कर रही थी, बर्तनों के इधर से उधर रखने की आवाजें चली आ रही थीं, सरदार बलवाल एक बड़े मोढ़े पर बैठा हुआ था, जिस पर चमड़ा चढ़ा हुआ था, और

सिम्मी नाइन उसके पांव दाब रही थी। इन दोनों से जरा हटकर चनन अंगूरों की बेल के नीचे टांगें फैलाए दीवार का सहारा लिए अपनी गोद में एक किताब लिए बैठा था।

सरदार बलवाल की पीठ उसकी ओर थी, और यह अच्छा था। वह इत्मीनान से जब जी चाहे धूप में ब्राउन ऊन की तकली घुमाने वाली लड़की को देख सकता था। आँगी को मालूम था कि चनन पढ़ कम रहा है, देख ज्यादा रहा है। कभी-कभी वह अपने-आप मुस्करा पड़ती, इठलाकर मुँह फेर लेती, या चोर निगाहों से एक क्षण के लिए उसकी ओर देख लेती।

"बहुत दिनों के बाद इधर का फेरा हुआ है, सिम्मी।" सरदार बलवाल ने नाइन से कहा।

"हाँ।"

"तरसंग कबीले के सरदार का बेटा कैसा है ?"

"मुझे तो बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।" सिम्मी नाइन पाँव दबाते नाक पर एक उंगली रखकर बोली, "सड़े चमड़े जैसा तो रंग है उसका, सूखा बदन....जैसे खुजली वाला कुत्ता छिः।"

सिम्मी ने मुँह फेरकर जोर से थूक दिया, फिर बटुआ खोलकर उसमें से हुलास की डिबिया निकालकर एक चुटकी नसवार लेकर अपने नथनों में सुड़क ली।

सरदार बलवाल को लगा जैसे आँगी कान लगाए उन दोनों की बातें सुन रही है। उसने आँगी की ओर चिल्लाकर कहा, "हुक्का गरम करके ला, ऊपर मेरे कमरे में रखा होगा।"

आँगी के जाने के बाद सरदार ने एक निगाह दादी पर डाली। वह धूप सेंकते-सेंकते सो चुकी थी।

"गिन्दालों के यहां भी गई थी?" सरदार बलवाल ने पूछा।

"हाँ, गई थी। गिन्दालों के यहाँ दो लड़के अच्छे मिले, मगर एक गरीब था।"

"गरीब नहीं चाहिए मुझे।" बलवाल ने जल्दी से कहा।

"दूसरा सरदार का बड़ा बेटा है और हर तरह से अच्छा है।"

"हाँ की तो," सिम्मी कहते-कहते रुक गई, और फिर सरदार बलवाल के पैर दबाने लगी, "मगर..."

"मगर क्या, जल्दी बताओ।"

"वे लोग भी तुम्हारी शर्तें मानने के लिए तैयार नहीं हैं।"

"तो चार महीनों में यह काम तुमने किया है," सरदार बलवाल जलकर बोला।

"क्या करूं, तुम्हारी शर्ते ही इतनी टेढ़ी हैं। सरदारों का लड़का मांगते हो मगर शर्त यह रखते हो कि घर-दामाद बन के रहे। कौन

मानेगा ? सभी लोग इज्जत वाले हैं, अपने घर में बहू लाना चाहते हैं, अपने घर का बेटा नहीं देना चाहते।"

"हूँ..." सरदार बलवाल नथुने फुलाकर जोर से फुंकारा। सिम्मी नाइन ने चोर निगाहों से चनन की ओर देखा, बोली, "लड़का तो तुम्हारे घर में मौजूद है। सातों विद्याएं जानता है। बहादुर इतना कि डाकुओं का ढाटा खुलवा दे। शरीफ, सुन्दर, कोई अकड़ नहीं, कोई फू-फां नहीं--फिर उसका तुम्हारी घर पर उपकार भी है, उसने तुम्हारी लड़की को बचाया है।"

"एक भूखे-नंगे छात्र से शादी कर दूं अपनी लाड़ली बेटी की ? बावली हुई है तू नाइन ?"

"लड़का लाखों में एक है।"

"खबरदार जो तुमने फिर उसका दोबारा नाम लिया।" सरदार बलवाल गरजकर बोला।

नाइन सर झुका के सरदार के पांव दबाने लगी।

कुछ क्षणों के बाद चनन ने पुस्तक बंद कर दी और सरदार के मोढ़े के पास जाकर खड़ा हुआ, बोला, "सरदार जिस दिन तेरी लड़की को बचाया था, तूने कहा था, जो मांगता है मांग ले। कहा था न ?"

"हाँ, कहा था, मगर तूने कुछ नहीं मांगा था।"

"वह समय नहीं था मांगने का, आज मांगता हूँ।"

"क्या मांगता है ?" सरदार बलवाल बड़ी कठोरता से बोला। वह कुछ-कुछ समझने लगा था, और जो कुछ उसकी समझ में आ रहा था, उसे समझकर उसका लहजा अपने आप कठोर होता जा रहा था।

"वही माँगता हूँ जिसका जिक्र सिम्मी नाइन इस समय कर रही थी।"

"यह तुम पुस्तक पढ़ते हो अंगूरों की बेल के साये में कि कान लगाकर दूसरों की बातें सुनते हो ?"

चनन चुप रहा।

सरदार बलवाल कुछ क्षण बाद बोला, "और अगर तुमने सब कुछ सुन लिया है तो फिर मेरा उत्तर भी सुन लिया होगा।"

"हाँ सुन लिया है," चनन भी बड़े कड़े लहजे में बोला, "इसीलिए तो पूछता हूँ, मेरे लिए तुम्हारी शर्त क्या है ?"

सरदार बलवाल ने तीखी निगाह से चनन की ओर सर से पांव तक देखा तो उसके होंठ भिंच गए, बोला, "दूसरों के लिए तो दूसरी शर्त है, तुम्हारी लिए बस एक ही शर्त है – सोने के सिक्कों से भरा एक घड़ा।"

"क्या ?" चनन आश्चर्य से बोला।

"हाँ, सोने के सिक्कों से भरा एक घड़ा ला दो, तुम्हारी कामना पूरी हो जाएगी।"

कई क्षणों तक चनन चुपचाप खड़ा सरदार बलवाल को घूरता रहा। एकाएक उसके जबड़े तन गए। बड़े मजबूत लहजे में बोला, "दो साल देते हो ?"

"दो साल," सरदार बलवाल ने पूछा।

"हां, केवल दो साल चाहिए। आज मैं अभी इस घर से जाता हूँ, और दो साल बाद इस घर में तभी पग रखूँगा, जब तुम्हारी शर्त पूरी कर दूंगा।"

"ठीक है," सरदार बलवाल ने लड़के के पागलपन पर हंसकर कहा, "मैं दो साल इंतजार कर लूंगा।"

चनन उसी हालत में आँगन के बड़े दरवाजे से बाहर जाने लगा। सरदार बलवाल ने चकित होकर पूछा, "मगर तुम जा कहाँ रहे हो ?"

"सोने के सिक्कों से भरा घड़ा लाने।"

चनन ने इतना कहा और फिर घर से बाहर निकल गया। वह आँगी से नहीं मिला, उसने अपना बिस्तर साथ नहीं लिया, कोई पुस्तक साथ नहीं ली। जिन कपड़ों में था, उन्हीं को पहने हुए उसी समय सरदार बलवाल के घर से निकल गया।

ढाई वर्ष से अधिक समय हो चुका था, जब चनन लौटकर शाह बिलूत के मन्दिर में आया। वह नीचे सरदार बलवाल के घर नहीं गया,

बल्कि सीधा मन्दिर में आकर चुपचाप राक्सू देवता की पवित्र तस्वीर के समक्ष दंडवत् करने लगा।

इन ढाई सालों में वह बहुत दुबला हो गया था, उसकी आँखें अन्दर को धंस गई थीं और उनमें एक असाधारण चमक पैदा हो गई थी। माथे पर सोच और चिन्ता से कई लकीरें उभर आई थीं और जबड़े का गोल दाग जामनी रंग का सा हो चला था, जो उसके बादामी चेहरे पर बड़ा अजब-सा लग रहा था।

जब वह मौनपूर्वक दंडवत् कर रहा था, तो एक कोने में कुछ छात्र उसे देखकर और पहचानकर चौंक गए और धीरे-धीरे खुसर-फुसर करते हुए उसके सम्बन्ध में बातें करने लगे।

एक नये छात्र ने जिसका नाम पोल्तन था, कोलात से पूछा ;

"यह नौजवान कौन है ? इसे मैंने पहली बार यहां देखा है !"

"तुम नये आए हो। यह ढाई साल पहले यहां इस मन्दिर में शिक्षा प्राप्त करता था, फिर एक दिन अचानक गायब हो गया।"

डागर कहने लगा, "बड़ा ही दिमाग वाला लड़का है। कुछ महीनों में इसने जेन्द के डेढ़ सौ पृष्ठ याद कर लिए थे और तेरह पवित्र पुस्तकों में से नौ पुस्तकों का पाठ करके समाप्त कर लिया था।"

सोमा कहने लगा, "मगर कहाँ का रहने वाला है यह ?"

"यह कोई नहीं जानता," डंजी बोला, "यह यहीं पर था, फिर यह चला गया। एक बार जब पवित्र पुजारी सूसाशाह यहाँ आया था, वह

इसकी बड़ी प्रशंसा करता था। कहता था यहाँ से जाकर यह कुछ महीने सूसाशाह के पाठशाला में भी रहा था, और हफ्ते में पांच दिन व्रत रखता था, और सब पवित्र पुस्तकों का पाठ कर लिया था !"

"मैंने सुना है इसने कुबला भी पढ़ा है।"

"कुबला क्या?" नये छात्र ने पूछा।

"काली विद्या को कहते हैं।" कोलात ने समझाया, "सुना है यह काली विद्या का खूब अनुभवी हो चुका है, इस कारण से सूसाशाह काहन ने इसे अपने पाठशाला से निकाल दिया। फिर यह दर-बदर भटकता रहा, दूर-दूर के कबीलों से खबरें आती थीं, सुना है लोग इससे तावीज, गंडे मांगने लगे थे, मगर उसने सदा इनकार कर दिया।"

नये छात्र ने चनन की ओर नई नजरों से देखकर खुसर-फुसर की, "हो सकता है यह कोई पवित्र हस्ती हो, जो इस फटे चोगे में हमें धोखा देने के लिए घूमती हो। इसके सम्बन्ध में अधिक बातें करना ठीक नहीं है। चलो सो जाएं, रात बढ़ रही है, और सर्दी भी। इस समय कहीं से दो घूंट बेगी शराब के मिल जाते तो सर्दी दूर हो सकती थी।"

चाकर ने होंठों ही होंठों में हंसकर धीरे से कहा, "इस चनन से कहो, अपनी काली विद्या से हमें एक मटकी बेगी प्रदान कर दे।"

"सुबह आधी रोटी मकई और घनार का साग खाया था, सौगंध ले लो जो इसके बाद एक दाना भी मुँह में गया हो, नींद कहाँ से आएगी।" नया छात्र बोला।

डागर बोल, "धीरज धरो। थोड़ी देर और इन्तजार कर लो। मैंने सुना है कि सरदार बलवाल अपनी इकलौती बेटी का सम्बन्ध कहीं पक्का करने ही वाला है, और मैं उसे जानता हूँ, वह बड़े विशाल हृदय का सरदार है, इस अवसर पर बहुत बड़ी दावत देगा।"

"अरे छोड़ो भी" कोलात उकताकर बोला, "वह क्या दावत देगा। मैं उसे जानता हूँ। उसे कोई लड़का पसन्द नहीं आता। तीन-चार बार वह दूसरे कबीलों के सरदारों के यहाँ जा-जाकर लड़के देख-देखकर वापस आ गया है। कहीं पर सिम्मी नाइन कुछ पक्का करती है, तो उसे भी नापसन्द कर देता है। कभी उसे लड़का पसन्द नहीं आता, कभी खानदान, कभी कबीला। माथा फिर गया है। सरदार बलवाल का। उसे कोई लड़का पसन्द नहीं आता।"

"सरदार बलवाल जमदयाल कबीले का सरदार है।" चाकर कहने लगा, "जो बकरवालों का सबसे बड़ा कबीला है। सरदार बलवाल सब सरदारों में सबसे धनवान और मान-सम्मान को पसन्द करने वाला है। वह किसी ऐसे-वैसे के घर अपनी लड़की क्यों देगा, वह घर-दामाद लाना चाहता है।"

"मगर घर-दामाद लाने के और भी ढंग हैं।" कोलात ने कहा।

"कौन-से ?"

कोलात अपने सूखे हुए होंठों पर जुबान फेरते हुए बोला, "पुराने जमाने में जब कोई अमीर बकरवाल या सरदार अपनी लड़की के लिए वर खोजने निकलता था, और किसी अच्छे, लड़के को घर-दामाद

बनाना चाहता था, तो वह किसी बड़े घर का मुँह नहीं देखता था, किसी अमीर सरदार के दरवाजे पर नहीं जाता था, बल्कि स्वयं किसी पाठशाला या मन्दिर घर में आकर नौजावान छात्रों को देखता था और उनमें से किसी नौजवान, सुन्दर, पढ़े-लिखे, स्वाभिमानी, पवित्र और श्रेष्ठ स्वभाव वाले छात्र को पसन्द कर लेता था, और उससे अपनी लड़की की शादी करके उसे अपना घर-दामाद बना लेता था।"

चाकर ने अपनी ठोड़ी पर उंगली रखकर कहा, "वह उस मन्दिर घर से किसी को चुन सकता था।"

"कैसे ?" डंजी ने पूछा।

"ऐसे ही मान लो।" कोलात बोला।

डागर ने कहा, "ऐसे मान लेने से क्या लाभ ? हमें अपने कबीले के सरदार के बारे में ऐसी बात करने का अधिकार नहीं है।"

सहसा मन्दिर घर का दरवाजा खुला और एक बूढ़ी औरत दो बच्चों को लेकर दाखिल हुई। उसके बाल उलझे और परेशान थी, और दोनों लड़कों के दम भी फूले हुए थे।

बूढ़ी औरत के संकेत करने पर उन दोनों बच्चों ने जो सामान उठाया हुआ था, वह उन्होंने राक्सू देवता के चरणों में रख दिया और झुककर उसको प्रणाम करने लगे। बूढ़ी औरत ने भी अपने दायें हाथ में उठाई हुई मटकी को नीचे धरती पर रखा और हाथ जोड़-जोड़कर विनती करने लगीः

"पाक और पवित्र राक्सू, इन दोनों बच्चों को देख, इनकी

बीमार और मरती हुई माँ को बचा ले। मैं तेरे दरबार में इन दो मासूमों को लेकर उपस्थित हुई हूँ, इन पर दया कर, मेरे खानदान पर कृपा कर।"

एकाएक वह औरत ऊंची आवाज में रोते हुए कहने लगी :

"दो दिन से वह जीवन और मृत्यु के बीच फंसी हुई है। उस पर रहम कर, दया कर, नहीं तो मैं दुनिया हिला दूंगी। सारा संसार पलटकर रख दूंगी, राक्सू देवता !"

बूढ़ी औरत ने छाती पीटी और क्रोधभरी निगाहों से अपने चारों और देखा।

"धीरज धरो।" कोलात बोला, "गोरां माई सब्र करो और क्रोध से बात करने के बजाय दया करने को कहो।"

डागर बोला, "हमसे कहो, हम लोग रात-भर जागकर उसके लिए प्रार्थना करेंगे।"

"तेरह पवित्र पुस्तकें पढ़ोगे ?" बूढ़ी गोरां ने पूछा।

"तेरह तो नहीं, पाँच पढ़ेंगे, रात-भर में पाँच से अधिक न पढ़ी जाएंगी।"

बूढ़ी गोरां ने बेगी शराब की मटकी कोलात को सौंपी, और राक्सू देवता के चरणों में रक्खा सामान, खाने की चीजें, जो मकई की आठ रोटियाँ, अचार ओर पनीर था, वह भी छात्रों को दे दिया। जेब से और दो रुपये निकाल के कहा, "यह लो दो रुपये रात-भर प्रार्थना करने

के।"

फिर वह अपने पोतों को सम्बोधित कर बोली, "चलो, प्रार्थना का प्रबंध हो गया। चलो, अब घर चलें।"

जब बूढ़ी गोरां बच्चों को लेकर चली गई तो डागर ने कहा :

"अजीब बात है, आज सुबह एक औरत आई थी, जिसकी लड़की दो दिन से बच्चे के जन्म देने के दर्द में बेचैन है और उसके अभी बच्चा पैदा नहीं होता, और आज रात को वह औरत आई, जिसकी बहू मौत के अंधेरों में डूब रही है।"

"इसमें अजीब बात क्या है ?" नये छात्र ने पूछा।

डागर बोला, "जब किसी मरने वाली की आत्मा, जो अभी मरी नहीं है, किसी ऐसे शरीर में प्रविष्ट होना चाहती है, अभी जो पैदा नहीं हुआ, तो एक अजीब उलझन होती है। पवित्र पुस्तकों में लिखा है कि ऐसे अवसर पर, अगर बीमार मर जाए, तो बच्चा पैदा होता है और अगर दूसरी सूरत में बीमार बच जाए तो दूसरी जगह बच्चा मुर्दा पैदा होता है, ऐसा पवित्र पुस्तकों में आया है।"

"अरे जाने दो।" कोलाता बोला, "आजकल कौन ध्यान देता है ऐसी बातों पर। हालांकि इस प्रकार की आश्चर्यजनक घटनाएं रोज घटती हैं, मगर कौन सुनता है, किसके पास आंखें हैं जो इन्हें देखे।"

नये छात्र की आंखें शराब की मटकी पर लगी थीं, "इस बढ़ती हुई सर्दी में हमने पवित्र राक्सू देवता से शराब मांगी थी, सो मिल गई, खाने को भी बहुत कुछ मिल गया। अब आओ, मिलकर बीमार बहू

के लिए प्रार्थना करें, बेचारी ठीक हो जाए।"

"चलो पाठशाला के अन्दर।" सोमा बोला, "वहीं पहले खाएं-पिएंगे, बाद में प्रार्थना करेंगे--अभी बहुत रात बाकी है।"

सब छात्र हंसते हुए शाह बिलूत के मन्दिर से निकलकर निकट के घर में चले गए जो उनकी पाठशाला थी और रहने का स्थान भी था। शराब और खाने का सामान भी लेते गए।

उनके जाने के बाद चनन का सर दंडवत् से उठा, उसने काले मखमल में सोने के काम वाले बारहसींगों वाले पर्दे को हटाकर राक्सू की तस्वीर को देखा और सामने लकड़ी के तख्त पर रक्खी हुई अपने पूर्वजों की तेरह पवित्र पुस्तकों को गिना जिनमें उनके कबीले की मान्यताएं और विश्वास छुपे थे।

वह धीरे-धीरे मुँह ही मुँह में बड़बड़ाने लगा, "खुल जाए वह भेद का दरवाजा ? मगर कैसे खुले...सामने तेरह पवित्र पुस्तकों का हर शब्द याद है, मगर हर शब्द एक गोरखधंधा है, जो प्रकट के अर्थ में छुपे अर्थ का रूप धारण किए बैठा है और किसी प्रकार अपना वास्तविक रूप दिखाने को तैयार नहीं है। ढाई साल से सर टेक रहा हूँ मगर वह कुंजी नहीं मिली जो भेद बता दे।"

"कहने को यह पुस्तकें हैं, एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, तेरह पवित्र भी, और बुराई लाने वाली भी, ... सच भी, ... और फिसल जाओ ... तो झूठ भी। आँगी के नाम के तीन शब्द होते हैं, और मेरे नाम के तीन। उधर तीन को

तेरह से गुणा कर दो तो उन्तालीस होते हैं, हालांकि मेरे सामने केवल छत्तीस का हिंदसा घूमता है, केवल तीन मुझसे बाहर हैं, वह तीन कौन से, आँगी के केवल आँगी आ-न-गी यानी नां आएगी-कितना भयानक ख्याल है।"

कोलात एकाएक पाठशाला से बिलूत के मन्दिर में आया और बुदबुदाते चनन को देखकर बोला, "क्या सोचते रहते हो हर समय, तुम्हारी आँखों में कैसे सपने जागते हैं। चलो, अन्दर चलो, हमारे साथ खाने में सम्मिलित हो जाओ।"

"मुझे भूख नहीं है।"

"सुना है तुम सप्ताह में पांच दिन व्रत करते हो।"

"कभी पाँच दिन, कभी छः दिन, कभी सप्ताह का सप्ताह व्रत कर लेता हूँ। भूख ही नहीं लगती।"

"तुम्हें हुआ क्या है, तुम कैसे छात्र हो, तुम्हारे हाथ में कोई पुस्तक तक नहीं है ?"

"किसी पुस्तक में क्या रखा है, नियम -- जीवन के, अमल के फलसफे के ?"

"सब सूखी और बेकार हैं, हमारी दुनिया की पुस्तकें। चनन आवेश में बोला, फिर कोलात की ओर एक गहरी निगाह डालकर बोला, "क्या तुम्हें मालूम है कि हमारी धरती की गहराइयों में एक

दूसरी दुनिया बसी हुई है, बिलकुल ऐसी जैसी हमारी दुनिया है। उसमें भी ऐसी ही नदियाँ और पहाड़, जंगल और झीलें और झरने, शहर और गांव, बंजर और खेत हैं। उस दुनिया में भी ऐसे तूफान चलते हैं, बर्फ गिरती है और खतरा हर तरफ लगता है। केवल एक बात में वह दुनिया हमसे अलग है, वहाँ कोई आसमान नहीं है, इसलिए गरमी बरसाने बाला कोई सूरज नहीं दहकता।"

"बस ऐसी है तुम्हारी इस दुनिया की पुस्तक, यह और इनके कानून और इनके शब्द अपनी जंजीरों से हमें बांधकर इस दुनिया में रखते हैं, मगर उड़ने नहीं देते, मगर कुबाले की काली विद्या--काली विद्या वह जादू है, जो आत्मा को इस दुनिया से स्वतन्त्र करके हर जगह वायुमण्डल में ऊँचा उड़ने देती है, जहां देवताओं के भी पर जलते हैं, वहाँ...वहाँ...मेरा सर दुख रहा है, मुझमें शक्ति नहीं रही।"

कोलात कहने लगा, "वह तुम ठीक कहते हो, मगर उन ऊँचे वायुमण्डलों में उड़ना भी खतरे से खाली नहीं है। एक क्षण में इंसान ऊपर है, सूरज और चांद से ऊपर; दूसरे क्षण में गंदी से गंदी नीचाइयों में उतर जाता है। काली विद्या के पास कोई शक्ति नहीं है, कि वो हमें हमेशा ऊपर की ओर रखता है लेकिन हमारी पवित्र पुस्तकें हमें धीरे-धीरे, सीढ़ी-सीढ़ी ऊपर ले जाती हैं, सीधे रास्ते पर।"

"और जहाँ तक काली विद्या का सम्बन्ध है, शोपन पुजारी ने हमें बताया था औेर तुम्हें भी; वह कहानी याद करो -- चार आदमी राक्सू देवता को ढूंढ़ने निकले। पहले ने बाहर देखा और मर गया, दूसरे ने अंदर देखा और मर गया। तीसरे ने पवित्र नियमों को

अस्वीकार किया और पागल हो गया, केवल चौथा पुस्तक लेकर अन्दर गया और पवित्र तस्वीर साथ लेकर बाहर आया।"

"मुझे ये पहेलियां मत सुनाओ। तुम नहीं जानते वे किस विद्या के मार्ग से गए थे, कब और कैसे, और क्या लेकर गए थे। संभव है वे इसलिए असफल रहे हों कि वे कुछ पाने के लिए गए थे अपना बलिदान करने के लिए नहीं गए थे, जैसे महन्त तोलान गया था।"

"क्या तुम अपनी बराबरी काहन तोलान से करने चले हो ?" कोताल ने चकित होकर चनन से पूछा।

चनन बोला, "मैं अपनी बराबरी किसी से नहीं करता, मैं बस अपने मार्ग पर जाता हूँ।"

"कैसा मार्ग है तुम्हारा ?"

"तुम नहीं समझोगे।"

"मैं समझ लूंगा, मेरा दिल भी ऊँचाइयों की ओर उड़ान भरना चाहता है।"

चनन कुछ क्षण चुप रहा, फिर बोला, "हमारे पवित्र बड़े-बूढ़े दिन-रात इन्सानी आत्माओं की स्वच्छता में लगे रहते हैं। यह उन आत्माओं से पाप का मैल धोकर उन्हें उपनी पवित्रता से चमका देते हैं। लेकिन उनका काम बड़ा कठिन है, क्योंकि पाप हर द्वार में से झांकता है। एक आत्मा साफ नहीं होती कि दूसरी गन्दी आत्मा उसकी जगह लेने को आ जाती है। एक सन्तान ठीक नहीं होती कि

दूसरी सन्तान पहली से अधिक मूर्ख और पापी आकर उपस्थित हो जाती है। पाप बढ़ता जाता है, अपराध फैलता जाता है, और पवित्रता कम होती जाती है।"

"तो तुम्हारे ख्याल में इसका इलाज क्या है ?"

"पापों को धोने की कोई जरूरत नहीं, पापों को केवल जला देना चाहिए जैसे सुनार अपनी भट्टी में सोने को जलाके उसे स्वच्छ करता है। ऐसे ही पाप को दिल की भट्ठी में डालकर उसकी गंदगी को जला देना चाहिए, जो शेष रहेगा, वह पवित्र होगा।"

"पाप पवित्र होंगे, क्या कह रहे हो तुम ?"

"राक्सू देवता ने हर चीज पैदा की है, इसीलिए हर वस्तु में उसका अंश मौजूद है।"

"मगर पाप को राक्सू ने पैदा नहीं किया, पाप को शैतान ने पैदा किया है।"

"तो शैतान को किसने पैदा किया ?" चनन ने क्रुद्ध होकर पूछा।

"राक्सू ने, इसलिए शैतान भी राक्सू का एक भाग है, और अगर यह राक्सू का एक भाग है तो उसके अन्दर भी पवित्रता मौजूद है।"

"शैतान के अन्दर पवित्रता !" कोलात बिलकुल आश्चर्य में डूबा हुआ दिखाई दे रहा था, "मै समझ नहीं सका, मुझे सोचने दो।"

चनन उसके निकट जाकर बोला, "कौन-सा पाप सबसे शक्तिशाली है, कौन-सा पाप लगभग मानने योग्य नहीं है ? एक औरत की इच्छा है ना?"

कोलात ने अपना सिर उठाए बिना कहा, "हाँ।"

"लेकिन जब तुम इस पाप को अपनी अंदरूनी भट्ठी में जलाकर स्वच्छ कर लेते हो, तो यही पाप कुन्दन बन जाता है, और एक पवित्र भावना से भरकर चमकने लगता है - और मेरे महबूब, तुझसे सुन्दर मुखड़ा किसी का नहीं है, तेरी आंखों में मृग की आंखों-सा आकर्षण है, तेरे बालों में रेशम का सा सोना है, तेरी बांहें सेब की डालियाँ हैं, और आवाज शहद के छत्ते की गूंज है, कहाँ हो तुम मेरी महबूब ?"

चनन ऊँची आवाज में बोलता हुआ वायुमंडल में घूर रहा था। श-श-श..........एकाएक कोलात ने उससे कहा, "चुप हो जाओ, सरदार बलवाल की लड़की आँगी आ रही है।"

आँगी को देखकर चनन का दिल धक-से रह गया। आँगी भी उसे देखकर एक क्षण के लिए चौंक पड़ीं। फिर उसने अपनी आंखें झुका लीं, और अपनी दादी से बोली, "दादी माँ, तुमने कहा था, तुम मुझे राक्सू देवता के मंदिर में रखे जाने वाले बहुत पुराने पर्दे दिखाओगी।"

चनन आँगी को देखता ही जा रहा था, जैसे वह बेबस और लाचार हो गया हो। उसकी आँखें आँगी के चेहरे पर पड़ी थी।

कभी-कभी वह पलकें झपका लेता, फिर देखने लगता, कोई दूसरा ध्यानपूर्वक देखने वाला होता, तो उसे महसूस होता जैसे चनन को दम पर दम नशा-सा चढ़ रहा है।

दादी दूरमा ने कोलात से कहा, ‘‘एक बार राजा साहब ने, जो हमारे धर्म के नहीं हैं, बीमार होने पर हमारे देवता के सामने मिन्नत मांगी थीं, और सोने के काम के पर्दे भेंट किए थे।”

कोलात बोला, ‘‘वह तो बहुत पुरानी कहानी है। कोई सौ वर्ष से भी अधिक हो गए, पिछले राजा साहब की कहानी है।”

‘‘हाँ, वही, वही।” दादी दूरमा धीरे से बोली, ‘‘वही पर्दे मैंने भी अपनी जवानी में एक बार देखे थे, वही पर्दे तुम इसको भी दिखा दो, यह लड़की वैसे ही पर्दे बनाएगी और अपनी माँ की बरसी पर उन पर्दों की नजर चढ़ाएगी। सच्चे सोने के तारों का काम होगा, छोटे-छोटे शेर ओर बाजों की तस्वीरें; और जब बढ़िया मखमल के पर्दे यहाँ राक्सू देवता के चरणों में बिछेंगे तो इसकी माँ ऊपर स्वर्ग से इसके लिए शुभ कामनाएँ भेजेगी।”

इतने समय में आँगी ने एक बार फिर आंखें उठाकर चनन की ओर देखा और जब उसे अपनी ओर खोई हुई निगाह से देखते हुए पाया, तो उसकी निगाहें अपने-आप नीची हो गई, और गालों पर हल्की-सी लाली छाने लगी, मारे लज्जा के वह फिर निगाहें ऊँची न कर सकी।

‘‘अभी लेकर आता हूँ।” कोलात बोला। इतना कहकर वह

आँगी की ओर ध्यान से देखता हुआ पाठशाला के अन्दर पर्दे लाने के लिए चला गया, जहाँ चढ़ावे का सामान रखा हुआ था। एक बड़े सन्दूक को खोलने लगा जिस पर ताला पड़ा था।

दादी दूरमा ने आँगी से पूछा, ''तुम्हें आज रात के समय शाह बिलूत के मन्दिर में आते हुए डर तो नहीं लगा ?''

आँगी बोली, ''मै रात को कभी यहाँ नहीं आई सिवाय राक्सू देवता के जन्म-दिन पर, मगर उस रात को खाना होता है यहाँ, और सब मिलकर नाचते हैं, और खूब रोशनी होती है, वह रात बड़ी चमकदार होती है, मगर आज इस समय यह...इस मन्दिर में कितनी चुप्पी और उदासी है।''

दादी दूरमा एक अजीब ढंग से हंसकर बोली, ''चुप्पी और उदासी क्यों न हो, यहाँ आधी रात को मरे हुए लोगों की आत्माएं आती हैं, राक्सू के चरणों को छूकर वापस चली जाती हैं, और अपने सब गम यहाँ छोड़ जाती हैं, इसलिए यह मन्दिर इतना उदास है।''

''मरे हुए लोगों की बात मत करो दादी दूरमा, मुझे डर लगता है।'' आँगी ने धीरे से कहा।

दादी दूरमा जरा ऊँचा हंसती थी, इसलिए आँगी का यह वाक्य न सुन सकीं। आँगी को उनकी हंसी बड़ी अजीब और बुरी लगी। उस हंसी में मौत से गहरे परिचय का अनुभव मौजूद था, जो अधिकतर बूढ़ों में पाया जाता है, और जो उन्हें दुःख के आभास से परिचित कराता जाता है।

"यह शाह बिलूत का मन्दिर कितना पुराना होगा ?" आँगी ने पूछा।

"कितना पुराना, मेरी बच्ची, यह मन्दिर बहुत पुराना है। कुछ लोग कहते हैं कि यह पेड़ और यह मन्दिर उस समय भी धरती के अन्दर मौजूद था, जब धरती के बाहर कुछ नहीं था। इस दुनिया में कितने तूफान आए, भूचाल आए, बर्फ की बरसातें हुई, मगर यह पेड़ और उसका मन्दिर शताब्दियों से ज्यों का त्यों है, पाप और सच्चे राक्सू की मेहरबानी से।"

"कैसी उदासी है यहाँ पर और कितनी सुन्दरता !"

आँगी पेड़ के चारों ओर देखकर बोली, "मेरा जी यहाँ से हटने को नहीं चाहता, मेरा जी चाहता है, मैं इस पेड़ के तने से बांहें फैलाकर एक बेल की भांति लिपट जाऊँ, इस मन्दिर से मुझे रोते हुए सपनों और उदास दिलों की सुगन्ध आती है, और मेरा जी चाहता है, मेरा जी चाहता है जाने मेरा जी क्या चाहता है, लेकिन मेरा दिल अन्दर से आंसुओं से भर गया है।"

इतने में कोलात अपने दोनों हाथों में भूरा मखमल के भारी काम के पर्दे उठाए ले आया। यह पर्दे जो राक्सू देवता के जन्म-दिन पर उसकी तस्वीर के सामने लगाए जाते थे, कोलात उन्हें दिखाते हुए बोला, "यही वह पर्दे हैं, कोई सौ वर्ष से भी पुराने, और बड़े राजा साहब की ओर से भेंट किए गए थे। यह केवल राक्सू देवता की वर्षगांठ पर इस्तेमाल होते हैं।"

और इस समय तक रजी दादी माँ और आँगी के पास पीछे-पीछे खड़ी थी, चुपचाप मौन, मगर उन सुन्दर पर्दों को देखते ही हर्ष की एक हल्की-सी चीख मारकर सामने आ गई और पर्दों को छूकर और घुटनों के बल बैठकर बोली, "हाय कितने अच्छे पर्दे हैं, कितनी गहरी और मोटी मखमल है, और यह दो सेर सोने के तारों के बने हुए ! कितना भारी काम है, यह नन्हे-नन्हे कबूतर और कबूतरियाँ दोनों ओर पर फड़फड़ाती हुई ! आजकल न ऐसा सोना मिले, न ऐसा काम ही दिखाई दे।"

"यह पर्दा भी बड़ा उदास है, मुझे बड़ा अच्छा लगता है।"

आँगी ने पर्दे को छाती से लगा लिया, फिर अपने होंठों से चूम लिया। फिर कुछ झिझककर शरमा गई, जब रजी ने उसका हाथ पकड़कर इतने धीमे लहजे में कहा था, ताकि दादी दूरमा न सुन लें, "एक पतला-दुबला लड़का है, नौजवान, तुम्हें, जब से आई हो, घूर-घूरकर देख रहा है।"

आँगी ने धीरे से बताया, "वह चनन है, तू भूल गई उसे ! दो-ढाई साल पहले इसी पाठशाला में पढ़ने के लिए आया था और हमारे घर पर ठहरा था।"

"आएं हाँ।" एकाएक रजी ने उसे पहचानकर कहा,

"मगर कितना दुबला हो गया है और माथा भी इसका कितना चौड़ा हो गया है शायद सोच-सोचकर।" फिर एकदम हंसकर कहा, "मगर मुटुर-मुटुर तुम्हारी ओर देख रहा है, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें

जैसे तुम्हें बुला रही हों, शायद वह तुमसे बात करना चाहता है, मगर डरता है।"

"हां।" आँगी बोली, "बड़ा निराश और उदास हो गया है। जाने इतने दिन कहाँ रहा, मुझे तो बीमार भी लगता है।"

"बीमार नहीं है, उसकी आंखें चमकती है।"

"वे सदा से चमकती थीं, आँगी धीरे से बोली, "बड़ी सुन्दर आँखें पाई हैं उसने, और जब वह मुझसे बात करता था, तो बात करते-करते रुक जाता था, और मैं भी उससे बात करते-करते एकाएक रुक जाती थी मगर शायद किसी लड़की का किसी लड़के से यों बात करना ठीक न हो।"

एकाएक दादी दूरमा बोली, "मेरे ख़्याल में अब चल देना चाहिए। सर्दी बढ़ रही है, रात अंधेरी होती जा रही है।"

"जाने से पहले इन पर्दों को एक बार फिर चूम लूं -- जी चाहता है।" आँगी ने कोलात से पूछा।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं", दादी माँ बोली, "मगर हमने तो अभी अपने होंठों से लगाया तक नहीं, आई...आह, रजी पहले तुम।"

रजी घुटनों के बल बैठकर पर्दे चूमने लगी, फिर दादी माँ झुककर पर्दे चूमने लगी। इस बीच आँगी वहाँ से हटकर चनन के पास आकर बोली, "चनन, तुम कब आए ?"

"आज ही।"

"इतने दिन कहाँ रहे ?"

वह कुछ उत्तर देने ही वाला था कि दादी माँ ने आँगी की ओर देखकर कहा, "लो अब तुम्हारी बारी है।"

आँगी घुटनों के बल बैठकर पर्दे चूमने लगी। अपने सीने से लगाकर, आँखों से लगाकर, होंठों से बार-बार अत्यन्त भावुकता की दशा में इन पर्दों को चूमती गई, यहाँ तक कि दादी माँ को उसे रोकना पड़ा, "बस-बस, पवित्र पर्दों को अधिक समय तक नहीं चूमते बेटी, यह बड़ी बहुमूल्य वस्तु है। इन पर्दों पर जो काढ़ा गया है वह सोने का है, लेकिन जो लिखा गया है वह नजर नहीं आता।"

"क्यों नजर नहीं आता ?" आँगी ने पूछा।

"क्योंकि वह सफेद आग के ऊपर काली आग से लिखा गया है मखमल के अन्दर, इसीलिए किसी को दिखाई नहीं देता। चलो बच्चियों, अब यहाँ से चल दो।"

दादी माँ रजी और आँगी को लेकर चली गई। चनन मानो

आँगी की अन्तिम पदचापें अपनी आत्मा के अन्दर अंकित करता गया। धीरे-धीरे बुदबुदाने लगा, "तेरे होंठों के गुलाब।"

"चनन, तुम क्या कर रहे हो ?" कोलात ने पूछा।

चनन ने कोई उत्तर नहीं दिया।

कोलात ने उसके माथे को छुआ, चनन का माथा पसीने से भीगा

था। कोलात ने आश्चर्य में डूबते हुए कहा, ''इस सर्दी में पसीना ! इतनी गर्मी कहाँ से आई ? क्या तुम काले जादू के संसार में चले गए थे ?''

''हाँ।'' चनन ने बड़े मजबूत लहजे में कहा।

''क्या तुम काले जादू के सब रहस्य जानते हो, उसकी सारी रस्में पूरी करते हो, जो तंत्र-विद्या की पुस्तक में लिखी हैं ?''

''हाँ, मैं सब जानता हूँ।''

''तुम्हें डर नहीं लगा ?''

''नहीं।''

''और तुम सात दिनों में पांच दिन व्रत करते हो ?''

''कभी सातों के सातों दिन व्रत करता हूँ। मुझे अब भूख नहीं लगती, भूख की इच्छा भी नहीं रही।'' चनन ने क्षीण लहजे में कहा।

''यह सब कुछ तुम क्यों करते हो ? तुम्हें क्या मिल जाएगा, क्या प्राप्त करना चाहते हो तुम ?''

''मैं एक हीरा पाना चाहता हूँ, साफ और चमकदार, जिसे मैं अपने आँसुओं में पिघलाकर उसकी महक को अपनी आत्मा का केन्द्र बना लूं। मैं सुन्दरता की सातवीं मंजिल पर पहुंचकर उसका दर्शन करना चाहता हूँ, मैं...''

सहसा चनन रूक गया और उकताकर बड़ी तेजी से बोला, ''मैं

सोने के सिक्कों से भरा घड़ा चाहता हूँ। अपने लिए नहीं, किसी ऐसे लोभी को देने के लिए जो अपने-आपको केवल सोने के सिक्कों में गिन सकता है।"

कोलात ने सन्देह-भरे लहजे में कहा, "चनन, चनन, तुम गलत मार्ग पर जा रहे हो। दुनिया की कोई पवित्र शक्ति तुम्हें यह शक्ति नहीं दे सकती।"

चनन ने साहस-भरे लहजे में कहा, "और अगर पवित्र शक्ति ने मेरी सहायता से इन्कार कर दिया तो मैं क्या करूं ?"

कोलात ने भयभीत होकर कहा, "मुझे तुमसे बातें करते हुए डर लगता है, तुम्हारे निकट खड़े होने पर डर लगता है।"

इतने में डंजी और चाकर प्रार्थना-गृह से निकलकर आए और बोले, "हो गया तीन पुस्तकों का पाठ, बाकी दो कल सुबह पढ़ेंगे, अब क्या रात-भर थोड़ी पढ़ने का इरादा है। कोलात, अन्दर आओ, कुछ खा-पी लो।"

इतने में सिम्मी नाइन कहीं से भागती-भागती शाह बिलूत के पेड़ के नीचे आ गई, और राक्सू के सामने शीश झुकाने के पश्चात् मुड़कर छात्रों से कहने लगी, "इस बार सरदार बलवाल ने मेरे बजाय काका नाई को बल्दयालों के सरदार के यहाँ भेजा था, जिसके लड़के से वह अपनी लड़की की शादी करना चाहता है बल्दयालों के सरदार ने यह शर्त रखी कि वह पहले पाँच साल अपने लड़के और अपनी बहू को अपने घर में रखेगा, और उसके बाद उन्हें सरदार बलवाल के घर भेज

देगा। सरदार बलवाल का खयाल था, शायद मै भांजी मारती हूँ। अब यह सातवां रिश्ता है, जो इस प्रकार लगभग पक्का होकर टूट गया है।"

चनन ने आँखें ऊपर उठाईं और वायुमंडल में घूरते हुए बोला, "मैं फिर जीत गया।" सहसा चनन की टांगें कांपने लगी और वह लकड़ी के बेंच पर बैठ गया, जो एक कोने में पड़ा था।

कोलात ने सिम्मी नाइन से कहा, "आओ, तुम भी अन्दर चलो, और कुछ खा-पी-लो।"

सिम्मी नाइन कोलात की बांह पकड़कर अन्दर जाने को ही थी कि इतने में सरदार बलवाल लम्बे-लम्बे डग भरता शाह बिलूत के मन्दिर मे आया और घुटनों के बल बैठकर नतमस्तक हुआ, और देर तक प्रार्थना करता रहा।

फिर प्रार्थना करके उठा और लाल वरण चेहरे से छात्रों की ओर देखकर बोला, "मैं समझता था आज रात-भर जागरण होगा, और प्रार्थनाएं पढ़ी जाएंगीं; मगर मुझे तो आज यहाँ से बेगी शराब की सुगंध आ रही है, वाह।"

डागर बोला, "अमीर सरदार, हमारे साथ एक कौर खा लो, एक घूंट चख लो।"

"अरे मूर्ख, मुझे तुम्हारे साथ खाने की क्या जरूरत है ? आज

मैं बहुत मगन हूँ, आज मैं स्वयं दावत देने आया हूँ। आज का दिन मेरे जीवन में यादगार रहेगा। आज मैंने अपनी बेटी की मंगनी पक्की कर दी है।"

"बधाई हो, बधाई हो !" सब छात्र चिल्ला पड़े।

सिम्मी नाइन बोली, "मगर मैंने तो सुना था कि काका नाई लड़के वालों से तुम्हारी शर्तें मनवाने में असफल रहा।"

डंजी ने कहा, "हाँ जब सिम्मी नाईन ने हमें यह बताया तो सरदार बलवाल, हम क्या बताएं, यह सुनकर हमें कितनी निराशा हुई।"

सरदार बलवाल ने बताया, "हाँ, बातचीत लगभग टूट चुकी थी, मगर लड़के वाले अन्तिम समय में मान गए और सब पक्का हो गया। लिखा-पढ़ी हो गई। मैं शोपान पुजारी को बताने आया था। कहाँ है महंत !"

सरदार बलवाल पाठशाला के अन्दर जाते-जाते बोला। कोलात उसके पीछे-पीछे चलते हुए बोला, "उनके सर में दर्द था, आज वह जल्दी सो गए, क्या जगा दूँ ?"

चनन ने निराशा से हाथ मलते हुए कहा, "मंगनी हो गई, हो गई मंगनी...? तो यह सब झूठ था, बेकार था व्रत, जादू तावीज, काली विद्या सब अथाह गहराइयाँ, जहाँ मुझे उसकी खातिर डूबना पड़ा, फिर क्या शेष रहा ?"

चनन ने हाथ मारकर अपना चोगा सामने से फाड़ डाला और

एकाएक वायुमंडल में निराशा से घूरने लगा। उसके चेहरे पर एक अजब चमकदार मुसकराहट आई और वह चल पड़ा।

"हाँ, मैं देख सकता हूँ, देख सकता हूँ, मुझे राक्सू देवता का छुपा हुआ नाम मालूम हो गया है, मुझे वायुमंडल में लिखा हुआ दिखाई दे रहा है, मेरे कानों में सुनाई दे रहा है, मेरे दिल में गूंज रहा है, वह दूसरा नाम जिससे असीम शक्ति मिलती है, आज इस समय मुझे बता दिया गया है, मैं जीत गया हूँ।"

चनन की दोनों बांहें फैल गईं, फिर उसका सर झुकता गया और वह कांपते हुए फर्श पर औंधा गिर गया।

सिम्मी नाइन भयभीत होकर बोली, "लालटेन क्यों बुझ गई? अंधेरा क्यों बढ़ गया ? अरे कोई लालटेन लाओ, मशाल लाओ।"

"घबराती क्यों हो," कोलात बाहर से एक मशाल लाते हुए बोला, "यह लो मशाल, अपनी लालटेन जलाओ।"

उजाले में सिम्मी नाइन की जान में जान आई। इतने में सरदार बलवाल जो सोते हुए छात्र पुजारियों के पांव छूकर बाहर निकल रहा था, सिम्मी नाइन को देखकर ध्यान से उसकी ओर देखने लगा।

सिम्मी नाइन बोली, "क्या सब पक्का हो गया ?"

"हाँ नाइन, क्या इसलिए उदास हो कि तुम्हारे द्वारा नहीं हुआ यह काम ?"

"नहीं, यह लग्न का काम जिसके हाथों भी हो जाए, अच्छा है।

मैं तो तुम से यह कह रही थी कि कहीं ऐसा तो नहीं कि वे लोग वचन देकर फिर जाएं, ऐसा भी होता है। बाद में झगड़े बड़े होते हैं।"

"झगड़ों की बात मत करो इस समय सिम्मी नाइन, यह खुशी का अवसर है। चाकर, तुम मेरे घर जाओ और बोलो, घर पर कुछ खाने-पीने और बेंगी के चार मटकों का प्रबन्ध करें, यहाँ से सब लोग वहाँ चलेंगे।"

चाकर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ, नीचे की ओर चल पड़ा ।

कोलात बोला, "जब तक वहाँ दावत का प्रबन्ध होता है, इस मटकी में से एक-एक घूँट पी लिया जाए।"

"हाँ, ठीक है।"

सरदार बलवाल ने सबसे पहले मटकी में से एक घूँट चखा। फिर उसने मटकी आगे बढ़ा दी। सबने हर्षपूर्वक बेंगी चखी। सरदार बलवाल अपने होंठों पर जुबान फेरते हुए बोला, "कोई अच्छी-सी कहानी सुनाओ, सिम्मी नाइन, तुम्हें तो बहुत-सी कहानियाँ याद होंगी।"

सिम्मी नाइन बोली, "सूसाशाह के संबंध में प्रसिद्ध है--एक बार इनके पास एक अत्यन्त धनवान लेकिन बड़ा ही कंजूस आदमी आया तो सूसाशाह महन्त उसे अपने कमरे की खिड़की में ले गया, और बोला, "क्या देखते हो बाहर ?" अमीर आदमी बोला, "बाहर एक गली देख रहा हूँ।" फिर सूसाशाह उसे अपने कमरे के आईने के सामने ले गया और बोला, "क्या देखते हो ?" वह अमीर बोला, अब

मैं अपनी सूरत देखता हूँ।" सूसाशाह ने कहा, "तो समझ लो, खिड़की में भी कांच लगा है, और आईने में भी कांच लगा है, मगर तुम खिड़की के कांच से बाहार देख सकते हो, और तुम्हें दूसरे लोग दिखाई नहीं देते, क्योंकि उसके पीछे थोड़ी-सी चांदी लगी है।"

"वाह-वाह क्या बात पैदा की है !" कोलात ताली बजाकर बोला।

सरदार बलवाल ने सिम्मी नाइन को हल्का-सा टहोका दिया और हंसकर बोला, "तुमने धनवान आदमियों पर चोट की है, खैर कोई बात नहीं, आज मैं बहुत मगन हूँ, आज मैं तुम सबके संग नाचूंगा।"

सरदार बलवान ने हंसकर सिम्मी नाइन का हाथ पकड़ लिया। सिम्मी नाइन ने दूसरे हाथ से लालटेन नीचे रख दी और कोलात का हाथ पकड़ लिया, कोलात ने डागर का , डागर ने सोमा का, सोमा ने डंजी का और वे सब शाह बिलूत के नीचे एक गोल दायरा-सा बनाकर नाचने लगे।

एकाएक सरदार बलवाल की निगाह धरती पर औंधें पड़े हुए चनन पर गई। वह घेरा तोड़कर उसकी ओर देखकर बोला, "यह कौन है ?"

"चनन है।"

"वह वापस आ गया ?"

"हाँ।"

"तो इसे बुलाओ, हमारे संग नाचे।"

कोलात ने कहा, "वह थका हुआ है, सो गया है।"

"इसे जगाओ," सरदार बलवाल ने हाकिमाना लहजे में कहा, "आज हर्ष और आनन्द का दिन है। एक बार इसने मेरी बेटी की जान बचाई थी, आज जब सुनेगा कि उसकी मंगनी पक्की हो गई है, तो बहुत खुश होगा।"

वे सब लोग ध्यान से धरती पर पड़े हुए चनन को देखने लगे। कोलात ने आगे बढ़कर उसे धीरे से झिंझोड़ा फिर पलटाकर उसे सीधा किया। जब कोलात ने चनन का चेहरा देखा, तो एकदम घबराकर बोला, "मगर यह तो मर चुका है।"

"क्या ?" एकदम वातावरण में बहुत-से स्वर गूंजे।

"हाँ...चनन मर चुका है।"

चनन को तोरा और उसके प्रेमी की कब्र के निकट अपनी कब्र मिली। इस घटना के सात दिन बाद बकरवालों के गांव में एक परदेसी आया और उसने चनन की कब्र को देखने की इच्छा प्रकट की।

एक बकरवाल उसे कब्रिस्तान में ले गया और बताने लगा, "यह पवित्र कब्र पुजारिन तोरा और उसके प्रेमी की है--यह उस सिरफिरे

लड़के चनन की कब्र है, जिसने काली विद्या प्राप्त की थी।"

अधेड़ आयु के मजबूत शरीर वाले आदमी ने पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम है कि उसने काली विद्या प्राप्त की थी।"

"वाह, क्यों मालूम नहीं--सारी दुनिया जानती है, वह सूफी जमाल के मदरसे में गया था। छः महीने वह नन्दू भगत योगी के यहां रहा, सूसाशाह की पाठशाला में उसने शिक्षा पाई, मगर कहीं पर सीधी विद्या सीखी, उलटे शब्द पढ़ता रहा, इसी गलत पढाई में उसकी जान गई।"

"वह कैसे मरा ?"

"बस आप ही आप मर गया, एक पल पहले भला-चंगा था, दूसरे क्षण आप ही आप मर गया। जो उलटे शब्द पढ़ते हैं, उनका यही हाल होता है।"

अधेड़ आयु के आदमी ने कहा, "जो मर गया उसके सम्बन्ध में ऐसी बुरी-बुरी बातें नहीं कहते।"

"यह तुम ठीक कहते हो। बकरवाल ने दोनों कानों को हाथ लगाया और तौबा की। फिर परदेसी से पूछने लगा, "तुम कहाँ से आए हो ?"

"मैं उसी गाँव का हूँ, जिस गांव का यह लड़का था।"

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"बोरीन दाहल।"

"बोरीन दाहल ?"

"हाँ, बोरीन दाहल। मैं यहां इसकी कब्र पर दुआ पढ़ूँगा और कुछ देर बैठूंगा, तुम जाकर बलवाल को खबर करो कि बोरीन दाहल तुमसे मिलने के लिए आया है।"

बकरवाल बोला, "सरदार बलवाल तो है नहीं यहाँ। उसकी लड़की की मंगनी की बातचीत पक्की हो गई है, वह दावत के प्रबंध के सिलसिले से बाहर गया है, कल शाम तक लौटेगा।"

"ठीक है, मैं कल शाम तक तुम्हारे गाँव में ठहरूँगा, उससे मिलकर जाऊँगा, आज्ञा है ?"

"राक्सू देवता की दया है हमारे गाँव पर।" बकरवाल बोला, "जो परदेसी हमारे गाँव में आता है, हमारे लिए इज्जत के योग्य होता है।"

"तो जाओ," बोरीन दाहल बोला, "सरदार बलवाल के घर वालों को खबर कर दो, उसकी माँ होगी, उससे कह दो, वह मुझे जानती है। उससे कह दो कि ज्यों ही सरदार बलवाल आए, उसे मेरा नाम बता दे। वह मुझसे आकर मिल लेगा, या वह मुझे अपने घर मिलने के लिए बुला लेगा। और मेरी पहचान के लिए यह अंगूठी दे देना।" इतना कहकर बोरीन दाहल ने एक अंगूठी अपनी अंगुली से निकाली और बकरवाल की हथेली पर रख दी।

"जाओ, इतना कह दो उसके घर जाकर। जब तक मैं इस लड़के के लिए दुआ पढ़ता हूँ।"

बकरवाल चला गया।

आधे घंटे बाद जब वापस आया, तो उसने देखा कि यह परदेसी चनन की कब्र से लिपटा हुआ मुर्दा पड़ा है।

यह दोनों मौतें बड़ी अजीब हालत में हुई थीं, गाँव में भय-सा फैल गया था। लोग भांति-भांति की कहानियाँ गढ़ने लगे, मगर काहन सोपान की आज्ञानुसार उस आदमी को भी चनन की कब्र के पास ही दफ़न कर दिया गया।

मालूम हुआ बोरीन दाहल उसका बचपन का दोस्त था। दोनों दोस्त बचपन से जवानी तक साथ रहे। जब दोनों की शादियाँ हुई, तो अलग-अलग हुए। उन दोनों ने अपनी-अपनी अंगूठियाँ बदल ली थीं और उस समय वह अंगूठी सरदार बलवाल की हथेली पर थी।

"मैंने बुध के दिन मंगनी की दावत पक्की की थी," सरदार बलवाल दुःख-भरे लहजे में बोला, "मगर अब अपने दोस्त की इस मौत के कारण मैं इस दावत को अगले शनीचर तक स्थगित करता हूँ। अभी मैं दूल्हा और उसके परिवार वालों को न्यौता देकर आया हूँ, अब सिम्मी नाइन को भेजूंगा और उन्हें बताऊंगा कि मेरा एक बड़ा ही घनिष्ठ मित्र मर गया है, इसलिए यह मंगनी की रस्म अगले शनिवार तक स्थगित है।"

दादी दूरमा माथे पर हाथ रखकर बोली, "जाने किस घड़ी में तुमने इस लड़की की बातचीत चलाई, "शादी तो क्या, अभी तक मंगनी भी पक्की नहीं हुई।"

सरदार बलवाल ने कहा, "मंगनी हो जाए तो मैं तत्काल शादी करके अपने कर्तव्य से छुटकारा पा जाऊंगा, अम्मा तुम चिंता न करो।"

"कैसे चिन्ता न करूँ, बीच-बीच में बाधाएं जो पड़ जाती हैं?"

"राक्सू देवता की कृपा से सब ठीक होगा।" सरदार बलवाल एक ठंडी सांस भरकर बोला, "आखिर मेरी भी तो एक ही औलाद है, एक ही लड़की है। आगे-पीछे और कोई नहीं। इसीलिए एक अच्छा-सा घर-दामाद ढूंढ़ रहा हूँ, वर्ना लड़के तो सैकड़ों मिलते हैं। अब यह लड़का बहुत अच्छा मिल गया है, अगले शनीचर को मंगनी हो जाएगी तेरी पोती की।"

बूढ़ी दादी दूरगा अपने बेटे की बातों से खुश हो गई, चटचट अपनी की बलाएं लेने लगी।

सरदार बलवाल बोरीन की अंगूठी को देखता हुआ, उसके दुःख में डूबा हुआ घर से बाहर निकल गया।

कबीले की रस्म के अनुसार सरदार बलवाल या तो खीमे में रह सकता था, या लकड़ी का मकान पटवाकर उसमें रह सकता था। मगर बकरवालों को आज तक अपने कबीले की ओर से पक्के मकान में रहने की आज्ञा नहीं है। इसलिए सरदार बलवाल ने अपना दूसरा मकान पहले मकान के जल जाने के बाद भी लकड़ी का बनवाया।

लेकिन पहले से बड़ा और शानदार।

एक तो उसे अपनी बेटी की शादी करनी थी, फिर अपने घर में दामाद को रखना था, इसलिए उसने यह सब सोचकर पहले से लगभग दुगना मकान बनवाया। बड़े-बड़े लकड़ी के बरामदे, जिनमें सैकड़ों लोग एक समय में बैठकर दावत खा सकते थे। लकड़ी के बरामदों के आगे एक लम्बा-चौड़ा आंगन पहले से भी दुगना, जिसमें सैकड़ों फकीर, साधु, गरीब, अमीर बैठकर शादी का दृश्य देख सकते थे।

छः कमरे निचली मंजिल में थे, छः ऊपर की मंजिल में। शादी के बाद सरदार बलवाल ने यह निश्चय किया था कि वह अपने दामाद और आँगी को ऊपर की पूरी मंजिल दे देगा, जहाँ वे लोग पूरे ठाठ-बाट से रह सकेंगे और स्वयं वह नीचे की मंजिल में रहेगा।

आज शनिवार के दिन मंगनी की दावत पर सरदार बलवाल के घर का निचला भाग मेहमानों, पुजारियों, फकीरों, पुरुषों औरतों और बच्चों से भरा हुआ था।

डंजी ने चाकर से कहा, "ऐसी शानदार दावत तो मैंने कभी खाई नहीं अपनी जिन्दगी में, आज तक नहीं खाई। कोर्मा, कीमा, परांठे, पुलाव, रोटी, पनीर और फिरनी, हरेक छात्र पुजारी के लिए।"

"और दो गिलास बेंगी शराब।"

"हाँ, साहब," कोलात बोला, "यह तो हम छात्र पुजारियों के लिए सम्मान का भोज है। मगर हमारा सरदार बलवाल ऐसे अवसर पर गरीबों को भी नहीं भूला। आँगन में जाकर देखो, वे गरीब और फकीर लोग कैसे अच्छे खाने खा रहे हैं। उनके लिए मछली का कोर्मा है, चावल है, और एक गिलास बेंगी जो पीना चाहे पी ले।"

डागर बोला, "सरदार बलवाल समझता है कि ऐसे अवसर पर फकीरों, साधुओं की कैसे खातिर की जाती है। ऐसे अवसर पर कोई नहीं कह सकता कि किस फकीर के भेस में कौन है, सम्भव है कोई पवित्र शक्ति या कोई पूर्वज हो, कोई ऋषि हो, पवित्र छत्तीस महान आत्माओं में से कोई महान आत्मा हो, जिन्हें सर्व-महान राक्सू दुनिया देखने के लिए भेजता है।"

"क्यों नहीं, स्वयं पवित्र राक्सू भी हो सकता है, भिखारी भेस में।"

"केवल गरीबों ही पर ध्यान देना काफी नहीं है। आजकल कोई नहीं कह सकता कि वह आदमी पिछले जन्म में कौन था और इस जन्म में क्या कर रहा है ?" सोम बोला, "ऊपर से देखने से कोई भी बनिया, लोहार, बढ़ई दिखाई दे सकता है, मगर अन्दर से कौन जाने वह कौन-सा गुनी-गुनी ज्ञानी-ध्यानी, सूफी-संत और महात्मा का भेस धारे हुए है।"

"हाँ, कुछ नहीं कह सकते।" डागर ने हाँ भरते हुए कहा, "लो यह सिम्मी नाइन किधर से भागी-भागी चली आ रही है।"

"दावत खाने की खुशी में भागी-भागी आ रही हो नाइन ?"

सिम्मी ने मुस्कराकर कहा, ‘‘क्यों न आऊंगी, सारे इलाके में इस शादी की धूम है।”

कोलात ने पूछा, ‘‘अभी तक दूल्हा नहीं आया और उसकी बारात के लोग भी नहीं पहुँचे।”

नाइन बोली, ‘‘मैं उन्हीं के घर से आ रही हूँ। वे लोग चल चुके हैं, अब आते ही होंगे। पहाड़ी यात्रा है, समय तो लगता ही है, वे अब आते ही होंगे।” इतने में नाइन की निगाह दुल्हन पर पड़ी। आँगी इस समय सजी-संवरी आँगन में औरतों के साथ नाच रही थी।

सिम्मी ने अपने सीने पर हाथ रखकर बड़े प्यार से कहा, ‘‘हाय कितनी अच्छी लग रही है दुल्हन !”

एक भिखारिन सिम्मी के निकट आकर खुशी से कहने लगी, ‘‘मैं भी नाची थी दुल्हन के संग, मैं भी नाची थी !”

एक लंगड़ी और बोली, ‘‘मैं भी नाची थी, उसे कमर से पकड़कर चार-चार चकफेरियाँ लीं, ही-ही-ही।”

लंगड़ी खांसती और हंसती हुई आगे चली गई।

एक कुबड़ा बोला, ‘‘सिम्मी नाइन, यह क्या है ! दुल्हन केवल औरतों के संग नाच रही है। मैं स्वयं उसके निकट आने वाला हूँ, और उसके संग नाचने वाला हूँ कमर पकड़कर वह चकफेरियाँ दूंगा, वह चकफेरियाँ दूंगा कि दुल्हन का सिर चकराने लगेगा।”

‘‘अरे जा कुबड़े,” सिम्मी नाइन उसे धुतकारते हुए बोली, ‘‘वह

बच्ची है, वह मर्दों के संग नहीं नाचती। हाँ जब उसकी आयु तीस से ऊपर हो जाएगी और तीन बच्चे को जाएंगे, फिर वह तेरे संग भी नाच सकती है--ऐसा रिवाज है हमारे कबीले का।"

"वह तो मुझे मालूम है , पर तीन बच्चों के बाद किसीका जी नाचने को चाहेगा," कुबड़ा बोला, "मेरा जी तो अभी उसके संग नाचने को चाह रहा था।"

दादी दूरमा ने रजी से कहा, "मना कर आँगी को, अब न नाचे, नहीं तो उसका मन फिर जाएगा। बहुत नाची है वह।"

रजी आँगी को मना करने गई, मगर एक गरीब भिखारिन ने उसी समय आकर बड़ी नम्रता से कहा, "मेरे संग तो नहीं नाची है आँगी, दो चक्कर मुझे भी लेने दो।"

"नहीं, नहीं, वह थक चुकी है बहुत।"

"क्यों, मुझमें क्या बुराई है ? वह सब औरतों के संग नाची है, क्या मुझे यह अवसर नहीं मिलेगा?" भिखारिन जिसके कपड़े फटे-पुराने थे, और आँखें अन्दर को धंसी हुई थीं, और वह अत्यधिक दुबली-पतली, बीमार दिखाई दे रहीं थी, बड़े तीखे लहजे में बोली, "मैं क्यों नहीं दुल्हन के संग नाचूंगी ?"

"रजी ने जेब में हाथ डालकर उसे एक अठन्नी निकालकर देते हुए कहा, "यह ले एक अठन्नी और जान छोड़ दे आँगी की।"

"ना।" वह हठी भिखारिन सर हिलाकर बाली, "मैं अठन्नी न लूंगी, मैं तो नाचूंगी आँगी के संग। सब औरतें दुल्हन के संग नाची

हैं, फिर मैं क्यों न नाचूं ?"

इतना कहकर उस औरत ने आँगी को कमर से पकड़ लिया, और उसे अपने संग घुमा-घुमाकर चकफेरियां देने लगी। और जब चकफेरियां लेते हुए आँगी बस करने को कहती तो वह भिखारिन उसे एक नई चकफेरी से ले जाती। उसके बड़े-बड़े मैले नाखून वाले हाथ आँगी के सुन्दर लिबास को मैला कर रहे थे, और कांटों की भांति चुभते मालूम होते थे।

"एक और... एक और" कहकर दस चकफेरियां इस भिखारिन ने ले डालीं। फिर जो उसने आँगी को छोड़ा, तो जल्दी से निकल भागी।

आँगी का सर घूम रहा था। वह कांपती-हांपती वहीं आंगन में लकड़ी के एक बेंच पर बैठ गई और माथे पर हाथ रख लिया।

दादी माँ उसके पास पहुँची और प्यार से एक हाथ उसके सिर पर रखकर बोली, "हाय, हाय, थका दिया इन जालिमों ने मेरी बच्ची को ! अरे देखो तो कैसा हल्दी की तरह इसका रंग हो गया। आँगी ! आँगी ! मेरी बच्ची, क्या बहुत थक गई है तू ?"

आँगी की आंखें बन्द थीं, और वह ऐसे बोल रहीं थी जैसे किसी गहरे सपने में हो वह कह रही थी, "उन्होंने तुझे पकड़ लिया..और चकफेरियाँ देते हुए अपने गन्दे-मैले हाथों से मेरी कमर को जोर से पकड़कर मुझे यहाँ अपने दोनों हाथों में उठाकर बहुत दूर ले गया।"

दादी माँ ने कहा, "चच चच, तुम्हारा दुल्हन का लिबास कमर पर कितना गंदा और मैला हो रहा है...यह क्या किया उन भिखारिन

औरतों ने...अब तुम क्या करोगी ?"

आँगी स्वप्न-भरे लहजे में बोली, "वह कह रहे थे, शादी से पहले अगर दुल्हन को अकेला छोड़ दिया जाए तो आत्माएं उसे उठाकर ले जाती हैं।"

दादी दूरमा घबराकर बोली, "कैसे-कैसे ख्याल तुम्हारे दिल में आ रहे हैं...मेरी बच्ची, उन काली आत्माओं के सम्बन्ध में नहीं सोचा करते जो हर समय हमारे आसपास रहती हैं, कोनों-खुदरों में, अवसर की खोज में--कि कहीं पर हम लोग उनका नाम ले दें और वे हमारे ऊपर पिल पड़ें।"

एकाएक आँगी ने आंखें खोल दी और बड़े धीरज से कहाः
"मेरी रूहें काली और बुरी नहीं हैं।"

"उनका भरोसा मत करो, बिल्कुल भरोसा मत करो। जिस क्षण तुमने उन पर भरोसा किया, तो तुम उन जैसी हो जोओगी।"

"दादी," आँगी अपने सूखे होंठों पर अपनी छोटी-सी जुबान फेरने लगी, बोली, "दादी, बुरी रूहें हमारे आसपास नहीं घूमतीं और न चक्कर लगाती हैं। हमारे आस-पास मंडराने वाली वह रूहें हैं जो समय से पहले मर गईं...वह फिर वापस आ जाती हैं, यह देखने के लिए कि हम क्या करते हैं, और क्या कहते हैं।"

"अरे मेरी बच्ची, किसने तुम्हारे दिल में बेबुनियाद संदेह डाल दिए हैं ! क्या तू नहीं जानती कि जितनी पवित्र और स्वच्छ, नेक और अच्छी आत्माएं होती हैं, मरकर सीधे राक्सू के पास चली जाती हैं और उसके चरणों तले स्वर्ग में आराम करती हैं।"

"नहीं दादी माँ।" आँगी पूर्ण विश्वास और मजबूती से बोली, "वे सब यहीं पर हैं।" एकाएक यहाँ पर उसका लहजा बदल गया और वह कहने लगी, "दादी, हममें से हर इंसान एक लम्बी आयु लेकर पैदा होता है, एक लम्बी जिंदगी। अब अगर वह समय से पहले ही मर जाए, तो उसकी उस जिंदगी का क्या होगा, जो उसने अब तक पूर्ण नहीं की। क्या होगा उस दुःख और हर्ष का जिससे अभी तक उसकी भेंट नहीं हुई कहाँ जाएंगे उसके वह बच्चे जिनकी उत्पत्ति वह इस दुनिया में नहीं कर सका, वह सब कहाँ जाएंगे, कहाँ ?"

आँगी कुछ देर अपने सपनों में डूबी हुई, इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ती रही। फिर घुटे हुए लहजे में बोलीः

"एक लड़का था यहाँ दादी, समझदार और पवित्र, हाथ-पांव का मजबूत। उसकी लम्बी आयु होने वाली थी : लम्बी जिंदगी। एक दिन अचानक उसकी जिंदगी समाप्त कर दी गई, और उसे अपने घर से दूर यहाँ परदेश में दफन कर दिया गया।" आँगी के लहजे में तीखापन आ गया और वह कहने लगी, "तो उसके शेष जीवन का क्या हुआ, शेष उस आवाज का जो चुप करा दी गई, उसकी वे प्रार्थनाएं जिनका हर अक्षर अनन्त काल तक के लिए दबा लिया गया--दादी माँ, जब एक मोमबत्ती बुझ जाती है, तो हम उसे फिर जला देते हैं, और वह फिर अन्त तक जलती ही रहती है, तो किस प्रकार वह जीवन समाप्त हो जकता है, जो बीच में बुझा दिया हो, मिटा दिया गया हो, वह अधूरा जीवन उस आधी बुझी मोमबत्ती की भांति है ना, दादी ?"

दादी माँ न आश्चर्य से आँगी की ओर देखते हुए कहा, ''बेटी! बेटी! ऐसी बातें नहीं सोचा करते...वह जो ऊपर वाला है, राक्सू, वही जानता है कि क्या सच है, और क्या सच नहीं है-हम लोग अन्धे हैं, कुछ नहीं जानते।"

इतने में सिम्मी नाइन इन दोनों के पास आ गई, लेकिन जरा पीछे खड़ी रही, और दादी-पोती की बातें सुनती रही।

आँगी विश्वासपूर्वक सिर हिलाकर बोली, ''नहीं दादी माँ, किसी इन्सान का जीवन व्यर्थ और बेकार नहीं जाता। अगर हममें से कोई समय से पहले मर जाता है, तो उसकी आत्मा इसी दुनिया में वापस आती है, अपना कार्य समाप्त करने, अपनी आयु पूर्ण करने; और वह जो सब कुछ उसने नहीं भोगा है, उसे भोगने यहाँ आती है। दादी माँ, तुमने ही तो मुझे बताया था कि आधी रात के समय कब्रिस्तान से आत्माएं निकलकर शाह बिलूत मन्दिर में राक्सू देवता के चरणों में प्रार्थना करने आती हैं।

कैसी होती हैं ये प्रार्थनाएं...? ये वही प्रार्थनाएं हैं जिन्हें वे आत्माएं अपने जीवन में न कर सकीं।

''मेरी माँ जवानी में ही मर गई, और वह सब कुछ देखने-भालने के लिए जीविन न रही, इन समस्त कामों को पूरा करने के लिए जो वह करती, अगर वह जीवित रहती। इसीलिए तो आज मुझसे कहा जा रहा है कि आज मैं मंगनी के बाद, मगर शादी से पहले, उसकी कब्र पर जाऊं और उसकी आत्मा को अपने साथ लाऊँ, ताकि वह और मेरा बाप दोनों मिलकर मुझे शादी में अपने दूल्हा को दे सकें।

इसलिए मैं उसकी कब्र पर जाऊंगी और उसे साथ लेकर आऊंगी। वह सारी रस्मों के समय मेरे साथ रहेगी और शादी के बाद हम दोनों इकट्ठे, दुल्हन और उसकी माँ, नाचेगी। मेरी माँ की आत्मा के साथ यों होगा, तो मैं कैसे समझ लूं, कि दूसरों की आत्माओं के साथ ऐसा न होगा, जो समय से पहले इस दुनिया को छोड़ गए, या समय से पहले जिनसे यह दुनिया छुड़ा दी गई।''

वे सब हमारे बीच में आते हैं, हम उन्हें देख नहीं सकते, लेकिन यदि इच्छा प्रबल है और हृदय स्वच्छ है तो हम उन्हें सुन भी सकते हैं, और उन्हें देख भी सकते हैं, और उनकी इच्छाएं अभिलाषाएं सब महसूस कर सकते हैं। मैं आभास कर सकती हूँ, देख सकती हूँ तोरा और उसके प्रेमी को जिन्हें समय से पहले सुला दिया गया, और वह भी हमारे ही पुरखों द्वारा एक ही कब्र में, ताकि वे दोनों सदा ही इकट्ठे रह सकें। इसलिए आज इस शादी के अवसर पर मैं कहती हूँ, ऐ पवित्र तोरा और उसके पवित्र प्रेमी, तुम दोनों आज की रस्में मेरे साथ पूरी करो, और मेरी शादी में शरीक रहो।"

एकाएक आंगन से बाहर शहनाइयों के जोर-जोर से बजने की आवाज आने लगी; नफीरियाँ और ढोल बजने लगे। आँगी ने डरकर एक लम्बी चीख मारी और लगभग बेहोश-सी हो गई।

रजी ने उसकी बांहें थामकर कहा, "क्या है आँगी ? क्या हो रहा है, तुम घबरा क्यों रही हो? शायद दूल्हा आ रहा है, इसीलिए नफीरियां और शहनाइयां बज रही हैं। ऐसा होता है, दूल्हे का स्वागत इसी प्रकार किया जाता है।"

इतने में एक चंचल लड़की जिसका नाम बरदा था, दौड़ी-दौड़ी आई और आंगी से कहने लगी, "मैं बाहर देखकर आती हूँ, और वापस आकर बताती हूँ कि दूल्हा काला है कि गोरा ?"

रजी के दिल में भी इच्छा जाग्रत हुई, वह भी कहने लगी :

"मैं भी बाहर जाती हूँ और फिर आकर बताऊँगी कि दूल्हा कैसा है, सुन्दर या कुरूप। जाऊँ ?"

"नहीं, नहीं" आँगी ने घबराकर कहा।

बरदा रजी का हाथ पकड़कर बोली, "चलो चलें, यह केवल लाज के मारे ऐसे कह रही है वरना इसमें बुरी बात क्या है, हम कोई तुम्हारा नाम थोड़ी लेंगे कि तुमने हमें बाहर भेजा है। चल रजी।"

रजी और बरदा बाहर गई तो दादी माँ पास आ गई, और आँगी को पुचकारते हुए बोली, "ऐसा ही होता है, यही, रीति-रिवाज है यहाँ के। दुल्हन सदा अपनी सहेलियों को बाहर भेजती है, यह मालूम करने के लिए कि दूल्हा कैसा है।"

"दुल्हन !" सिम्मी नाइन अजीब निगाहों से आँगी को देखते हुए बोली।

सिम्मी नाइन की आँखों में देखकर आँगी भयभीत होकर कांपी। फिर बोली, "बोलो क्या कहती हो ?"

"तुमने ठीक ही सोचा था कि मरने वाले की आत्माएं धरती पर वापस आती हैं, लेकिन वे बिना शरीर आत्माओं के लिबास में नहीं

आतीं। उन आत्माओं को पाक और पवित्र होने के लिए भांति-भांति के शरीरों में से निकलना पड़ता है। बुरे लोगों की आत्माएं हैवान या दरिन्दे बनकर आती हैं, या पक्षी या मछली बनकर या पेड़-पौधे बनकर, और वे अपने-अपको स्वयं पवित्र नहीं कर सकतीं, जब तक कि कोई राक्सू या इन्सान, कोई सूफी-संत, उनकी आत्माओं को स्वच्छ और पवित्र न कर दे...दूसरी प्रकार की आत्माएं नये पैदा होने वाले बच्चों के शरीर में घुस जाती हैं, और जीवन-भर अपने पापों का प्रायश्चित करती हैं।"

"अच्छा...अच्छा...तो।" आँगी की आवाज में कंपकपी पैदा हो गई।

"इसके अतिरिक्त तीसरी प्रकार की आत्माएं होती हैं, आवारा, जिन्हें कोई घर न मिला न कोई ठिकाना। वे आत्माएँ जीवितों के अन्दर घुस जाती हैं, प्रेत बनकर, और इस प्रकार अपने-आपको पवित्र और स्वच्छ करती हैं।"

नाइन इतना कहकर बाहर चली गई, जहाँ शोर बढ़ रहा था और पटाखे छूट रहे थे, और बाजों-गाजों का शोर अपनी सीमा को छू रहा था, जोड़ीदार ढोल बजाने वाले एक-दूसरे से ढोल बजाने में मुकाबला कर रहे थे, और क्षण पर क्षण लै तेज करते जा रहे थे।

आँगी सोच में डूबी हुई शामियाने के नीचे बैठी थी, जहाँ शादी की रस्में अदा की जाने वाली थी, मंगनी के बाद। इतने में सरदार बलवाल अन्दर आया और कहने लगा :

"आँगी, तू ऐसी उदास यहाँ क्यों बैठी है ? कुशल तो है ?"

दादी दूरमा उकताकर सिर हिलाकर बोली, "यह कुछ भिखारिनों के साथ नाची, रस्म के अन्तर्गत, तो कमजोर और नाजुक तो है ही, थक गई। अब आराम कर रही है। और कुछ नहीं हुआ मेरी बन्नो को।"

"भिखारिनों के संग ऐसे समय में नाचना भी एक शुभ कार्य है, मगर अब बहुत देर होती जा रही है। दूल्हा वाले बारात लेके आ पहुँचे हैं, क्या सब कुछ तैयार है ?"

"तैयार है।" दादी दूरमा ने कहा, "फिर थोड़ी-सी देर के लिए उसे अपनी माँ की कब्र पर जाना होगा।"

"तो जा, मेरी बच्ची," सरदार बलवाल ने आँगी को पुचकार कर कहा, "जाओ माँ के पास और अपने आँसू गिरा दो उसकी कब्र पर और उससे फिर कहना कि वह तुम्हारी शादी सम्मिलित हों, ताकि हम दोनों रस्मो-रिवाज के अन्तर्गत तुमको शादी में जा सकें, कहना कि मैंने उसका अन्तिम समय पर किया हुआ वचन पूरा कर दिया है, जो वादा मैंने उससे किया था। जाओ मेरी बच्ची, अपनी माँ की आत्मा को साथ लेकर आओ।"

इतना कहकर सरदार बलवाल की आँखें भर आईं, और वह उन आँसुओं को छुपाने के लिए घर के अन्दर चला गया।

उसके जाने के बाद आँगी ने पूछा, "दादी, क्या मैं माँ के अतिरिक्त किसी दूसरे को भी इस शादी में सम्मिलित होने को कह

सकती हूँ ?"

"केवल निकट के सम्बन्धियों को बेटी," दादी ने उत्तर दिया, "तुम अपने दादा की आत्मा को कह सकती हो, और अपनी माँ से और अपनी ताई कुंज से, जिसकी कब्र इसी कब्रिस्तान में है।"

आँगी धीरे से बोली, "एक और है, जिसे मैं बुलाना चाहती हूँ, पर वह कोई सगा-सम्बन्धी नहीं है।"

"नहीं बेटी, यह मना है। अगर तुम किसी अजनबी को शादी में बुलाओगी तो दूसरी अजनबी रूहें बुरा मानेंगी, और सम्भव है तुम्हें कष्ट पहुंचाएं।"

"वह कोई अजनबी नहीं था दादी, वह हमारे ही घर में रहता था, उसने मेरी जान भी बचाई थी।"

"बच्ची...बच्ची, यह तू क्या कह रही है ?" दादी माँ का चेहरा भय से पीला पड़ गया, "लोग कहते हैं वह काली विद्या जानता था, और उसी काली विद्या ने उसकी जान ली।"

आँगी रोने लगी।

दादी दूरमा ने उसकी बलाएं लीं, उसके आँसू पोंछते हुए पुचकारकर कहा, "अरे रे रे रे, रोती क्यों है, ऐसी ही जिद है तो उसे भी बुला ले, रो मत, उसे भी बुला ले, मैं स्वयं तुझसे कहती हूँ और इस अपराध का बोझ मैं अपने सर पर उठा लूंगी।" फिर जरा रुककर सन्देह से बोली, "पर मुझे मालूम नहीं है, उन लोगों ने उसे कहाँ

दफन किया है।"

आँगी ने धीरे से उठकर कहा, "मै जानती हूँ।"

"तुम जानती हो, कैसे ?"

"मैंने सपने में उसकी कब्र का स्थान देखा था, और मैंने सपने में उसे भी देखा था।" आँगी ने कुछ क्षणों के लिए आँखें बन्द कर लीं और धीरे से बोली, "उसने मुझसे अनुरोध किया था कि मैं अपनी शादी में उसे बुलाऊं।"

इतने में रजी और वरदा बाहर से भागी-भागी आईं और ताली बजाते हुए बोलीं, "हमने देख लिया, उसे हमने देख लिया।"

आँगी ने चौंककर कहा, "किसे ?"

"किसे ?" वरदा और रजी रुककर आंगी की ओर आश्चर्य से देखकर बोलीं, "दूल्हा को और किसको।"

वरदा बोली, "सांवला है तेरा दूल्हा।"

रजी बोली, "नहीं, गोरा है।"

वरदा रजी से बोली, "तो आओ एक बार और देख आएं।"

रजी और वरदा जेवरों में छमछमाती हुई फिर वहां से चली गईं। उनके जाने के बाद आँगी उठी और बोली, "तो आओ, दादी माँ, हम भी पवित्र कब्रिस्तान से हो आएं।"

दादी दूरमा बोली, "चलो बीबी, चलो।"

दादी ने अपने घुटनों पर हाथ रखकर 'हाय' की, क्योंकि अब उठने-बैठने में उसके जोड़ दुखने लगे थे।

रिवाज के अन्तर्गत दुल्हन ने एक काली शाल कब्रिस्तान जाने के लिए अपने सुहाग के लिबास पर ओढ़ ली, जो रेशमी सूती की घेरेदार मुगलई शलवार और कुर्ते पर आधारित थी।

दादी दूरमा और आँगी बाईं ओर से निकलकर, बरामदे से निकलकर, बाहर कब्रिस्तान की ओर बढ़ गईं। उनके जाने के कुछ मिनट बाद सरदार बलवाल अपने होने वाले दामाद मनाशी और उसके बाप नखमान के साथ आंगन में प्रविष्ट हुआ। शामियाने के नीचे पहुँचकर वह नखमान से गले मिला और अपने होने वाले दामाद मनाशी के चेहरे पर बोसा दिया।

मनाशी एक बीच के कद का सांवले रंग का घबराया हुआ नौजवान दिखाई देता था। उसकी आँखो में बड़ा भय भरा था और वह बार-बार घबराया हुआ इधर-उधर देखता था।

मनाशी और नखमान के साथ उनके दूसरे रिश्तेदार और बाराती भी मौजूद थे, जिनसे नखमान ने बारी-बारी से सरदार बलवाल को मिलाया।

सरदार बलवाल ने नतमस्तक होकर पूछा, "यात्रा कुशलता से कटी ?"

नखमान बोला, "राक्सू देवता की कृपा से यहाँ तक पहुँच पाए हैं, वरना यात्रा में बड़ी कठिनाइयां और मुसीबतें सामने आई।"

"क्या हुआ ?"

"पहले तो रास्ता भूल गए और बड़ी देर तक एक घने जंगल में चलते रहे। जहां पर जंगल समाप्त हुआ, वहां पर रास्ते में बड़ी गहरी दलदल मिली, जिसमें हम लोग धंसकर समाप्त हो जाते। वह तो काहन सूसाशाह हमारे साथ थे, तो उनका सहारा पाकर हम यहाँ तक पहुंच पाए, वरना लगता था कि कोई पिशाच-शक्ति हमारे मार्ग में खड़ी है, और हमें यहां तक पहुँचने नहीं दे रही है, मगर राक्सू की कृपा हमारे साथ थी, इसलिए कुशलता से पहुँच गए।"

सरदार बलवाल ने कहा, 'आप थक गए होंगे, अन्दर घर में चलकर आराम कर लीजिए।"

"नहीं," नखमान सरदार बोला, "आराम करने का समय कहाँ है, अभी तो शादी के बारे में आपसे बहुत-सी बातें करनी है, दहेज और भेंटें, लड़का मेरे घर कब आया करेगा बहू को लेकर-और कितने समय तक रह सकेगा, यह सब बातें तय हो जानी चाहिए।"

"ठीक है, आइए, सब बातें तय कर लें।"

"यहीं बरामदे में क्यों न कर लें।" नखमान सरदार ने राय दी।

"ठीक है, जैसा आप ठीक समझें।"

सरदार बलवाल सरदार नखमान के कन्धे पर हाथ रखकर उसे बड़ी मोहब्बत और बड़े आदर से बरामदे में एक ओर ले गया, जहाँ वे दोनों टहल-टहलकर शादी के मामले मय करने लगे।

महन्त सूसाशाह दूल्हा को समझाने लगा, "चुपचाप एक जगह बैठे रहना, अधिक इधर-उधर देखना मत, आँखें नीचे रखो और सभ्यता से दावत का खाना खाओ। खाना खाने के बाद मैं मन्त्र पढूंगा और तुमसे कहूंगा, अब दूल्हा शादी के मन्त्र पढ़ेगा, इस विशेष अवसर के लिए मंत्र तुम्हें याद है न, जो हमारी पवित्र पुस्तकों में से लिए गए हैं, उन्हें तुमने याद कर लिया है ना ?" उन्हें जोर-जोर से पढ़ना, सुनते हो?"

"हाँ।" मनाशी घबराया हुआ बोला, "पवित्र पुजारी मैं सुन रहा हूँ, मगर मुझे डर लगता है।"

"डर किस बात से, क्या जो रटा था, वह भूल गए ?" सूसाशाह ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं, पवित्र काहन, यह बात नही।"

"फिर क्या है ?"

"मुझे स्वयं मालूम नहीं।" मनाशी भयभीत होकर बोला, "मगर जैसे ही मैं घर से निकला था, मुझे डर लगने लगा था और अजीब प्रकार का खतरा महसूस होने लगा। जिस रास्ते से हम आए हालांकि हमारा देखा-भाला था, लेकिन मुझे ऐसा लगता है जैसे हम किसी अपरिचित मार्ग पर चल रहे हैं, और हजारों अपरिचित आँखें हमें चारों ओर से घूर रही हैं।"

"मैं दुआ पढूँगा, राक्सू तुम्हें शैतान की निगाह से सुरक्षित रखेंगे।"

“पवित्र काहन, मेरा जी कहीं अकेले पड़े रहने को चाहता है, क्योंकि यहाँ भी वह सब अपरिचित निगाहें मुझे घूर रही हैं। वे मुझसे बात करना चाहती हैं, मुझसे उल्टे-सीधे प्रश्न पूछ रही हैं। मुझे ऐसा लगता है, जैसे कोई मुझे फांसी के तख्ते पर घसीटकर लिए जा रहा है। पवित्र पुजारी, मुझे उस क्वांरी से भी डर लगता है, जो मेरी दुल्हन होने जा रही है।”

“अपना दिल कड़ा करो।” सूसाशाह उसके कन्धे थपथपाते हुए बोला, “दिल से सब डर निकाल दो, वरना संभव है तुम पवित्र मन्त्र भूल जाओ। चलो बाहर, मैं अकेले में तुमसे सब सुनाता हूँ और याद कराता हूँ।”

महन्त सूसाशाह मनाशी को घर से बाहर ले गया और चलते-चलते वे दोनों कब्रिस्तान के बाग में जा निकले। मन्त्र याद करते-करते मनाशी तोरा और उसके प्रेमी की कब्र के निकट गया और घबराकर कहने लगा, “यह अजीब-सी कब्र किसकी है ?”

सूसाशाह काहन और मनाशी दोनों ने झुककर उस कब्र का खुतवा पढ़ा, फिर सिर झुकाकर कब्रिस्तान के बाहर निकल आए। बहुत देर तक मनाशी थर-थर कांपता रहा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्यों कांप रहा है।

वापस आते हुए उन्हें बहुत-से भिखारी मार्ग में मिले। वे बातें

कर रहे थे। एक बूढ़ी लंगड़ी भिखारिन कह रही थी, "लो पहले हम सबको जल्दी-जल्दी निबटा दिया, इस दावत में, गरीबों का खिलाना-पिलाना हो चुका।"

"हाँ।" एक अन्धा बोला, "असली दावत तो अब शुरू होगी।"

"शोरबा कितना कम था।" तीसरा भिखारी बोला।

चौथे ने कहा, "और रोटी सिर्फ एक थी, सिर्फ एक, ऐसे मौकों पर बड़े लोग रोटी देते हैं, ताकि पेट भर जाए।"

लंगड़ी भिखारिन बोली, "देना चाहते तो हमें भी मुर्गी दे सकते थे, और जर्दा, पुलाव; मगर तीतर, मुर्गी तो बारातियों के लिए है।"

"क्या फर्क पड़ता है ?" अन्धा भिखारी बोला, "सभी पेट में पड़ता है, जहाँ मरने के बाद सब कुछ कीड़ें खा जाते हैं, ही-ही-ही।" भिखारी हंसने और खांसने लगा।

जब भिखारी चले गए तो इधर-उधर परेशान निगाहें डालते हुए सरदार बलवाल बोला, "अम्मा कहाँ है ?"

रजी बोली, "वे अभी कब्रिस्तान से नहीं आईं, आँगी को लेकर गई थी।"

"कितनी देर हो गई वहाँ गए हुए?" सरदार बलवाल बोला, 'क्या कर रही हैं दोनों वहाँ पर ? अभी तक आई क्यों नहीं?"

रजी जाने ही वाली थी कि आंगन के बड़े दरवाजे से दादी दूरमा और आँगी अन्दर आती हुई दिखाई दीं। आँगी ने कब्रिस्तान जाने के

लिए जो काला शाल ओढ़ रखा था, वह अभी तक उसके कन्धे पर था, और चेहरा सुता हुआ और सफेद था, और दादी दूरमा उससे हौले-हौले कह रही थीं, "अब जल्दी चलो ना, कितनी देर लगा दी तुमने। हाय, मैं तुम्हें वहाँ लेकर ही क्यों गई?"

इन दोनों को अन्दर आते देखकर सरदार बलवाल ने चैन की एक सांस ली, और बोला, "लो वह आ गई, अब रस्में शुरू करो।"

एक औरत कहने लगी, "मोमी शमों के सामने अब दुल्हन को प्रार्थना करनी चाहिए कायदे के हिसाब से।"

दादी दूरमा ने रजी के पूछने पर बताया, "यह वहाँ बेहोश हो गई थी, बड़ी मुश्किल से होश में लाई हूँ, अब तक मेरा सारा शरीर कांप रहा है।"

"बेहोश हो गई होगी। इस सप्ताह में कितने तो व्रत किए हैं। व्रत करने से शरीर कमजोर हो जाता है। आखिर लड़की तो है, बेचारी माँ की कब्र पर बहुत रोई होगी।"

दादी दूरमा सिर हिलाकर बोली, "बस कुछ मत पूछो क्या हुआ वहाँ पर !"

लाल गद्दों वाली चौकी पर दुल्हन को शामियाने के नीचे बिठाया गया, औरतों के संकेत पर दूल्हा मनाशी दुल्हन की शाल लेकर आगे बढ़ा, जिसे ओढ़कर आँगी को शादी की रस्में अदा करनी थी।

मनाशी ने ज्योंही शाल लपेटकर दुल्हन के कन्धों के ऊपर रखा, आँगी ने घबराकर शाल खोल दी, और उसे जोर से पटककर बोली, "नहीं, नहीं, तुम नहीं, तुम मेरे दूल्हा नहीं हो।"

लोग अचम्भे में पड़ गए। चारों ओर कानाफूसी शुरू हो गई। तत्काल सरदार बलवाल आगे बढ़ा और पुचकारने के अन्दाज में आँगी से कहने लगा, "क्या हुआ मेरी बच्ची को, इतनी घबराई हुई और भयभीत क्यों है ?"

आँगी अपनी चौकी से उठ खड़ी हुई और पागलों की भांति इधर-उधर देखकर बोली, "तोरा ! तोरा ! मुझे बचा लो।"

"राक्सू देवता दया करें, यह क्या बक रही है ?" दादी दूरमा बोली।

"एकाएक आँगी ने जोर की चीख मारी और अबकी अपने लहजे में नहीं बल्कि ठेठ मर्दाना आवाज में गरजकर बोली, "हूँ... अच्छा तो तुम लोगों ने मुझे दफन कर दिया था : मगर मैं वापस आ गया हूँ, वापस अपनी दुल्हन के पास, अब मैं उसे छोड़कर नहीं जाऊंगा।"

आँगी के गले से मर्दाना आवाजें निकलते देखकर बहुत-से लोग डर गए। मनाशी ने आगे बढ़कर जब दुल्हन को पकड़ना चाहा, तो वह जोर से हाथ छुड़ाकर उसी मर्दाने लहजे में बोली, "कुत्ते ! परे हट जा।"

दादी दूरमा बोली, "पागल हो गई है यह शायद, पागल ।"

“पागल नहीं...” काहन सूसाशाह अपना ‘असा‘ टेकते हुए गहरे गंभीर लहजे में बोला, “पागल बिल्कुल नहीं, इस लड़की के शरीर में कोई प्रेत घुस गया है।”

पूरी बारात में सनसनी फैल गई थी, यह बात कि आँगी के शरीर में किसी प्रेत ने डेरे डाल दिए हैं, अच्छन ढोल, बच्छन ढोक और आसपास के गांव-जवार में फैलती जा रही थी। कुछ लोग लड़के वालों को सलाह दे रहे थे कि वे बारात वापस ले जाएं। बारात वापस ले जाने में सरदार बलवाल की बड़ी बेइज्जती होती। उसने खुशामद कर-कराके बारात को रात-भर अपने घर रखा।

और दूसरे दिन सुबह अपनी लड़की को अच्छन ढोक से लेकर शाह बिलूत के बड़े मन्दिर की ओर पुजारी शोपान से मिलने के लिए चल दिया।

शाह बिलूत के मन्दिर में भी बड़ी हलचल थी। कल शाम ही से समस्त नये पुजारी आँगी के शरीर में उस प्रेत के समा जाने की बातें कर रहे थे। जितने मुँह उतनी बातें। इतने में सिम्मी नाइन और काका नाई भी आ पहुँचे।

सिम्मी नाइन को देखकर डंजी बोला, “सिम्मी नाइन के पास बड़ी अच्छी-अच्छी कहानियाँ हैं, ऐसी डरावनी और दिल-चस्प कि सुनो तो बुखार चढ़ने लगे।”

चाकर ने पूछा, "कैसी कहानियाँ ?"

"बड़ा गहरा अर्थ होता है उनका, और मतलब भी बड़ी कठिनाई से समझ में आता है। सूफी दाऊद जब यहाँ आते थे, तो इस प्रकार के किस्से-कहानियाँ सुनाते थे।"

"सूफी दाऊद का धर्म और है, हमारा धर्म और है।"

"इस शाह बिलूत के मन्दिर में जब सूफी दाऊद आते थे, तो महावीर जोगी को भी बुला लेते थे। एक रात सूफी दाऊद और हमारे पवित्र पुजारी शोपान और महावीर जोगी के दरम्यान ऐसी-ऐसी बातें हुई कि तुम सुनते तो हैरान रह जाते। हर धर्म में दूसरे धर्म को समझने का ढंग छुपा रखा है। मालूम करने की जरूरत है, और अगर यह उदाहरण सूफी दाऊद और पुजारी शोपान और महावीर जोगी एक-दूसरे को समझा सकते हैं, तो हम साधारण पुजारी भी सुन सकते हैं।"

डागर ने सिम्मी नाइन से कहा, "तो सुनाओ।"

"कहानी सुनाने-सुनने का यह कौन-सा समय है।" सिम्मी नाइन हिचकिचाते हुए बोली, "अभी काहन शोपान नहीं आए, पुजारी सूसाशाह नहीं आए, सरदार बलवाल अपनी लड़की को लेकर नहीं आया।"

"कोई अच्छी-सी कहानी सुनाओ, अभी तो समय है।" चाकर बोला।

सिम्मी नाइन बोली, ''तो सुनो, जहाँ पर यह दुनिया समाप्त होती है, वहाँ पर एक ऊँचा पहाड़ है, उस ऊँचे पहाड़ के ऊपर एक ऊँची चट्टान है जिससे साफ और स्वच्छ पानी का एक झरना बहता है। यह झरना दुनिया के एक छोर पर स्थापित है, दुनिया के दूसरे छोर पर इस दुनिया में हर वस्तु का दिल होता है।

इसी प्रकार से इस दुनिया का अपना भी एक बहुत बड़ा दिल है, और वह दिल सदा दूसरे छोर पर बहने वाले स्वच्छ झरने के पानी को अपनी निगाह में रखता है। मजे की बात यह है कि दुनिया का दिल एक ही स्थान पर टंका रहता है, क्योंकि अगर वह अपनी जगह से जरा भी हिले तो झरने का पानी उसकी निगाह से हट जाएगा और अगर एक क्षण के लिए भी वह मिटे तो उसी क्षण में दुनिया का दिल उस स्वच्छ झरने के पानी को निगाह से ओझल देखकर जीवन खोने लगता है।

''दूसरी ओर साफ-स्वच्छ झरने के पानी की अपनी कोई जीवनी नहीं है। वह उस समय तो स्वच्छ रहता है, जब तक दुनिया का दिल उसको आज्ञा देता है और यह समय केवल एक दिन का है।

''जब दिन समाप्त होने लगता है, तो झरने का साफ पानी दुनिया के दिल की ओर देखकर एक गीत गाता है, और दुनिया का दिल भी गीत के रूप में उसका उत्तर देता है, और उन दोनों के गानों की आवाज और उसकी गूंज सारी दुनिया में फैल जाती है, और उसके छोरों के तार चमकते हुए धागों की तरह हर जीवित और जानदार वस्तु के आकारों और उसके दिलों में से विचरते हैं, और फिर

एक सच्चा पुजारी इन समस्त धागों को दुनिया के समस्त दिलों से इकट्ठा करता है, और फिर उनसे समय बुनता है, और जब वह एक दिन बुन लेता है तो उसे दुनिया के दिल को दे देता है, जो उस दिन को स्वच्छ झरने को दे देता है, और इसी प्रकार जीवन के झरने को एक दिन और मिल जाता है।"

कोलात ने कहा, "वाह-वाह...आनन्द आ गया।"

"काहन शोपान आ गया।" सोमा पुजारी बाहर से दौड़ा आया।

काहन शोपान की आयु कोई सत्तर वर्ष से ऊपर होगी, मगर उसका चेहरा लाल था, और दाढ़ी सफेद थी। और वह शरीर का मजबूत और लम्बा-तगड़ा आदमी था, स्वाभिमानी परन्तु नर्मदिल। वह दिन-रात घूमता रहता था और शाह बिलूत के मन्दिर में बहुत कम आराम करता था। उसका घूमना वास्तव में कर्तव्य-पालन की क्रिया थी। उसके जीवन का अधिक भाग भेड़-बकरी पालने वालों के खीमों और उनके जानवरों की देखभाल में व्यतीत होता था, क्योंकि जमदयाल जाति का सबसे बड़ा तांत्रिक होने के अतिरिक्त वह एक सफल वैद्य भी था और मनोविज्ञान का अनुभवी भी, और रहमदिल होने के साथ-साथ योग, तन्त्रविद्या, जेन्द और अपने कबीले और धर्म की तेरह पवित्र पुस्तकों पर पूर्ण रूप से विश्वास रखता था। बकरवालों का विश्वास था कि वह आत्माएं बुला सकता है और भगा सकता है। वह नीचे पाताल तक जा सकता है और ऊपर ग्यारहवें आसमान तक, जहाँ राक्सू देवता रहता है और जहां तक जाते हुए फरिश्तों के भी पर जलते हैं, काहन शोपान की तांत्रिक विद्या, उसके

अस्तित्व और आत्मबल की सारे इलाके में धूम थी। वह अपना मजबूत छड़ीनुमा असा टेकते हुए मन्दिर में आया, और राक्सू देवता की स्थापित मूर्ति के समक्ष घुटने के बल बैठकर प्रार्थना पढ़ने के पश्चात् अपने नये पुजारियों से इस प्रकार बातें करने लगा :

''एक बार नीचे अच्छन ढोक में जब मैं लड़का-सा था, नटों का एक जत्था आया था। उस समय मेरा बाप काहन दुरदान जीवित था, और उसके सामने नटों ने अपना तमाशा दिखाया। उन्होंने नीचे नदी के खुले पाट के दोनों ओर एक रस्सा लटका दिया और फिर उस पतले-से रस्से के ऊपर चलकर नदी के एक किनारे तक चले गए। सारा गाँव यह तमाशा देखने को इकट्ठा था, और लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मेरा बाप पवित्र काहन दुरदान भी यह तमाशा देखने को उपस्थित था, जब उससे पुजारियों ने पूछा कि आपके उपस्थित होने का क्या अर्थ है?" तो मेरे बाप ने बताया, ''मैं देख रहा था, किस प्रकार यह नट एक पतले रस्से पर चल-कर नदी के दोनों किनारे पाट जाते हैं, और इससे मुझे विचार आया कि अगर इंसान अपनी आत्मा को सुधारने में भी ऐसी ही लगन और क्रिया का उदाहरण दें, तो वे जीवन के इस पतले-से रस्से पर से चलकर स्वर्ग तक पहुँच सकते हैं।"

''कितना गहरा तत्व है।" कोलात बोला।

''और इसे दर्पण की भांति प्रकट कर दिया है।" डंजी ने काहन शोपान का असा चूमकर कहा।

सोमा बोला, "आज यहाँ पुजारियों के अतिरिक्त सिम्मी नाइन भी मौजूद है।"

काहन शोपन बोला, "मैं सिम्मी नाइन को जानता हूँ। इसने बहुत-से शिक्षालय, बहुत-से कबीले और बहुत-से मन्दिर देख रक्खे हैं। बहुत-से पुजारियों को यह जानती है और उनसे बड़ा हुनर प्राप्त किया है इसने। इसका आदर-सम्मान करो, इसे शहद-रोटी खिलाओ। आओ, आओ सिम्मी नाइन, तुम भी पीछे मत बैठी रहो, आगे आ जाओ।"

सिम्मी बोली, "मैं पवित्र बातें सुन रही थी।"

काहन बोला, "भगवान की बनाई हुई यह धरती भी पाक और पवित्र है, और इसमें पाक काफिरिस्तान का इलाका भी है और इस इलाके की सबसे पवित्र जगह वह जगह होती है, जहाँ इसकी तेरह पवित्र पुस्तकें रखी हैं।

"दुनिया में तीन सौ जातियाँ हैं, और एक जाति काफिरिस्तान भी है, और काफिरिस्तान से सबसे अधिक संख्या जमदयालों की है, जिनका मार्गदर्शन सबसे पवित्र माना जाता है।

"वर्ष में तीन सौ पैंसठ दिन होते हैं। इन दिनों में सबसे पवित्र दिन बुधवार के होते हैं, जिस दिन राक्सू देवता ऊपर आसमान से इस धरती पर आए थे।

"दुनिया में सत्तर बड़ी धार्मिक पुस्तकें हैं। इनमें एक पुस्तक जेन्द भी है, जिसकी पवित्रता की चर्चा हमारी तेरह पुस्तकों में पाई

जाती है, इन तेरह पुस्तकों में सबसे पवित्र राक्सू देवता के आदेश हैं, और इन आदेशों में सबसे पवित्र राक्सू का नाम है।

"एक मुख्य समय में एक मुख्य दिन पर एक मुख्य वर्ष में नेकी की चार आज्ञाएं मिलती हैं। वह दिन बड़ा महत्वपूर्ण होता है, जिस दिन सबसे बड़ा पुजारी सबसे पवित्र मन्दिर में सबसे पवित्र नाम लेता है, और यह पल बड़ा ही बहुमूल्य मगर भयानक भी होता है, जब राक्सू देवता का दूसरा नाम लिया जाता है, जो बहुत कम लोगों को मालूम है, और यह समय अगर पवित्र पुजारी के दिल में कोई बुरा विचार या उसकी परछाई भी आ जाए तो दुनिया में उसी समय महाप्रलय हो सकती है।

"और यह भी सुनो, कि जहाँ पर कोई आदमी खड़ा होकर ऊपर आकाश में झांकता है, वह जगह बड़ी पवित्र है, हर इन्सान को राक्सू ने अपनी तस्वीर में उतारा है इस धरती पर, इसलिए हर इन्सान स्वयं एक पुजारी है, और उसके जीवन का हर दिन प्रायश्चित या महाप्रलय का दिन है, और हर शब्द जो वह अपने दिल से बोलता है राक्सू का शब्द है, इसलिए एक गलत शब्द से तबाही आ सकती है।"

एकाएक बूढ़े की आवाज कमजोर पड़ गई। वह थके हुए लहजे में बोला, "जन्म-जन्मान्तर से दुःख और दर्द के किनारे से विचरते हुए मानव की आत्मा उस पवित्र स्थान के पास इस प्रकार चक्कर लगाती है, जैसे बच्चे का मुँह माँ की छाती की ओर बढ़ता है, मगर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक आत्मा जो स्वच्छता और पवित्रता के अन्तिम छोर से विचर रही होती है, एकाएक किसी बुरे विचार का

शिकार हो जाती है, तो फिर वह आत्मा जितना ऊँचा उड़ सकती थी उतना ही नीचे गहराइयों में गिर जाती है, और उसके गिरने के साथ एक दुनिया नीचे गिर जाती है, और इस दुनिया के दायरे में भूचाल आ जाता है, और धरती पैरों तले से खिसक जाती है। और आकाश और पाताल के बीच जीवन के दस दायरे इस खोई हुई आत्मा का सोग करते हैं।"

इतने में काका नाई ने आकर कहा, "पूज्य पवित्र पुजारीजी, सरदार बलवाल आए हैं।"

"क्या बात है ?" काहन शोपान ने पूछा।

काका नाई बोला, "एक भयानक विपत्ति आन पड़ी है, पूज्य काहन, बेचारे की इकलौती बेटी के शरीर में प्रेत घुस आया है।"

"एक प्रेत ?" पुजारी ने कुछ क्षणों के बाद अपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरकर अपने सफेद लिबास पर पहनी हुई पवित्र माला के मनकों को छूकर कहा, "मैं जानता हूँ।"

"यह अपनी बच्ची को लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ है।"

"मेरे पास क्यों ?" पुजारी शोपान बोला, "मै तो हूँ ही नहीं, मेरा कोई व्यक्तित्व नहीं है, तो फिर वह मेरे पास क्यों आएगा?"

"मगर महान आत्मा, वह और कहां जा सकता है, सारी दुनिया आप ही के पास आती है।"

"अंधी दुनिया आती है, अंधी भेड़े अंधे चरवाहे के पीछे चलती हुई। अगर उनके पास आंखें होतीं, तो मेरे पास आने के बजाय पवित्र राक्सू देवता से हिदायत चाहते, क्योकि इस दुनिया में केवल वही एक सच्चाई है, वही एक स्वयं शक्ति है, वही एक 'मैं' है, हम सब तो कोई भी नहीं।"

"आप उसके कार्यकर्त्ता है।" सिम्मी नाइन बोली।

"ऐसा लोग कहते हैं। जहाँ तक मेरा ख्याल है मैं आज भी नहीं जानता कि मैं कौन हूँ। चालीस वर्ष से मैं इस बड़े मन्दिर का पुजारी हूँ, मगर मुझे आज भी विश्वास नहीं आता कि मैं सचमुच कार्यकर्ता हूँ।

"हाँ कभी-कभी ऐसा समय अवश्य आता है, जब मुझे अन्दर से आभास होता है कि मैं उसके निकट हूँ मेरे दिल के अन्दर कोई सन्देह नहीं, मैं उसकी असीम शक्ति और बल को अपने अन्दर महसूस करता हूँ उस समय मुझे प्रतीत होता है कि मैं सचमुच इस दुनिया का मालिक हूँ।"

"मगर फिर दूसरे ऐसे क्षण भी आते हैं, जब मुझे नई बात का विश्वास नहीं होता, तब मै अपने-आपको अत्यन्त छोटा और क्षीण और एक शिशु की भांति आभास करता हूँ। तब मुझे ऐसा लगता है कि सहायता की आवश्यकता उन्हें नहीं है जो मेरे पास सहायता के लिए आते हैं, बल्कि स्वयं मुझे हैं।"

कोलात बोला, "हाँ, आदरणीय पुजारीजी, एक रात आप पर

ऐसी ही बारी आई थी, जब आपने मुझे सोते से जगा दिया था, और रात-भर हम दोनों ऊँची आवाज में तेरह पवित्र पुस्तकें पढ़ते रहे थे।"

"वह बहुत दिनों की बात है, मगर आज उससे भी कड़ा समय पड़ा है। आखिर यह लोग चाहते क्या हैं मुझसे ? सत्तर वर्ष का हो चुका हूँ, बूढ़ा और कमजोर, अब मुझे कायदे से आराम करना चाहिए, मगर एक दिन का आराम प्राप्त नहीं है। कितनी मुसीबतें और कितनी पीड़ा है इस दुनिया में, यह गिड़गिड़ाती खुशामद करती हुई दुखी, मुसीबत में घिरी दुनिया जैसे कि हर क्षण मेरा रोआं-रोआं छेद डालती है। एक साथ एक हजार बरस मैं अपने शरीर में आभास करता हूँ, लगता है अब मुझमें वह शक्ति नहीं रही।"

"पवित्र आत्मा, महान आत्मा !"

काहन शोपान की आँखों में आँसू झलकने लगे। बोला, "नहीं, मुझमें वह शक्ति नहीं है, नहीं है।"

"है, है, पवित्र काहन।" कोलात ने धीरज से मगर बड़े मजबूत लहजे में कहा, "आप क्यों भूलते हैं, कि आप राक्सू के सबसे बड़े मन्दिर के महान पुजारी हैं, आपके पिता पुजारी थे, काहन दुरदान आपके दादा पुजारी थे, जिनके चमत्कारों की बरकत से हम लोग वहाँ से यहाँ तक एक नई धरती पर फल-फूल रहे हैं।"

यह शब्द सुनते ही जैसे पवित्र पुजारी के शरीर में शक्ति का संचार हुआ, वे आँसू पोंछते हुए बोले, "नहीं, नहीं, मैं भूल नहीं सकता पवित्र और महान दुरदान और मेरे दादा सर्वोच्च जेरान के

चमत्कारी कार्य सुना है एक बार पवित्र जेरान ने एक मृतक कोढ़ी को जीवन प्रदान किया था, और उसे बिल्कुल नीरोग कर दिया था। और मेरे दादा प्रेत निकालने के अनुभवी थे। इसके लिए उन्हें पवित्र पुस्तकों की प्रार्थनाएं पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, वे एक शब्द 'निकलो' से प्रेत को शरीर से निकाल देते थे, जैसे पांव से कांटा निकाल लिया जाता है। बस आज्ञा, एक शब्द तक काफी था उनका, मैं स्वयं जब भी किसी कठिनाई में फंस जाता हूँ, अपने दादा की आत्मा को याद करता हूँ और उसकी सहायता लेता हूँ। ठीक है, ठीक है, सरदार बलवाल को अन्दर बुला भेजो।"

सरदार बलवाल ने अन्दर आते ही काहन शोपान के पांव पकड़ लिए और रोकर बोला, "पुजारीजी, मुझ पर दया करो मेरी इकलौती बच्ची को बचा लो।"

काहन शोपान ने पूछा, "यह अभागापन तुम पर कैसे आ गया?"

सरदार बोला, "ज्योंही दूल्हा एक शाल लेकर दुल्हन को रस्म के मुताबिक..."

पुजारी शोपान ने बीच से बात काटते हुए पुछा, "मैंने यह नहीं पूछा है। मैं यह जानना चाहता हूँ, यह घटना कैसे घटी। तुम जानते हो, फल को कीड़ा उसी समय लगता है जब वह अन्दर सड़ने लगता है।"

"पवित्र आत्मा, पूज्य काहन," सरदार बलवाल रोकर बोला,

"मेरी इकलौती बेटी पवित्र और शरीफ बच्ची है, वह लज्जावान और नेक है, उसने आज तक मेरी आज्ञा का अनादर नहीं किया।"

पुजारी शोपान धीरे से कहने लगा, "कभी-कभी बच्चों को उनके माँ-बाप के पापों का दंड भी मिलता है।"

"अगर मुझे मेरा अपराध मालूम हो जाए," सरदार बलवाल ने अपनी छाती पर हाथ मारकर कहा, "तो मैं उसका प्रायश्चित करने के लिए तैयार हूँ ?"

"तुमने प्रेत से पूछा है कि उसने क्यों तुम्हारी बच्ची के शरीर में प्रवेश किया है।"

"वह कोई उत्तर नहीं देता, पवित्र आत्मा," सरदार बलवाल बोला, "लेकिन हम सबने उसे उसकी आवाज से पहचान लिया है, वह यहीं आपके शिक्षालय में तन्त्र विद्या सीखता था, और पढ़ता था, और वह अचानक एक दिन इस मन्दिर में गिरकर मर गया। उसकी मृत्यु भी अनोखी हुई थी, मगर यह कई महीनों पुरानी बात है। सुना है वह काली विद्या भी प्राप्त कर रहा था, तो उसी कारण से उसकी जान गई।"

"किन शक्तियों ने उसे तबाह किया ?"

"बुरी शक्तियों ने। पवित्र पुजारी, लोग बताते हैं कि अपने मरने से दो-एक घण्टे पहले वह अपने एक छात्र मित्र से कह रहा था कि पापों के विरूद्ध यत्न करना बेकार है, क्योंकि आरम्भिक रूप से शैतान भी पवित्र और महान है। फिर मैंने सुना है उसने काले इल्म के द्वारा

सोने के सिक्कों से भरा हुआ एक घड़ा प्राप्त करने की चेष्टा की, मगर असफल रहा।''

''तुम जानते थे उसे ?''

''जी हाँ, मैं ही वह अभागा हूँ, जिसने उसे अपने घर में आपके कहने से आसरा दिया था। अब तो आपको वह याद आ गया होगा?''

''याद करो, ''तांत्रिक शोपान बोला, ''संभव है तुमने किसी प्रकार उसका अपमान किया हो, या किसी प्रकार का बुरा व्यवहार उससे किया हो, याद करो।''

पवित्र पुजारी की आँखें सरदार के चेहरे पर जमी थी। सरदार बलवाल ने पहले तो बराबर पवित्र पुजारी की आँखों में ताका, फिर घबराकर उसने निगाहें नीची कर लीं और इधर-उधर देखकर बोला, ''मैं कुछ नहीं जानता, मुझे कुछ याद नहीं, पवित्र आत्मा...मैं आखिर एक इन्सान हूँ, संभव है...'' वह चुप हो गया।

पवित्र पुजारी ने नजरे हटा लीं। धीरे से बोला, ''लड़की को अन्दर लाओ।''

सरदार बलवाल बाहर गया। थोड़ी देर के बाद आँगी, दादी माँ और रजी को लेकर अन्दर आ गया। आँगी के सर पर वही काला दुशाला था, जो उसने श्मशान जाते समय ओढ़ा था। वह मन्दिर की दहलीज पर आकर रुक गई और अन्दर जाने से इन्कार करने लगी।

सरदार बलवाल झुंझलाहट-भरे लहजे में बोला, "अपने बेचारे बाप पर दया करो, बेटी, और अन्दर चलो, पवित्र पुजारी तुम्हें बुला रहे हैं।"

आँगी धीरे से अपनी आवाज में बोली, "मैं जाना चाहती हूँ-अन्दर... मगर नहीं जा सकती।"

"बच्ची, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, अन्दर आ जाओ।" पवित्र पुजारी ने कड़े लहजे में कहा।

आँगी दहलीज पार कर आई। आके सामने खड़ी हो गई। पवित्र पुजारी बोला, "बैठ जाओ।"

आँगी फर्श पर बैठ गई। बैठते ही एकाएक वह खड़ी हो गई, और चीख-चीखकर पुरुष की आवाज में कहने लगी, "मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो, मैं नहीं रहूंगा।"

आँगी ने भागने की चेष्टा की । सरदार बलवाल, रजी और दादी माँ ने उसे संभाल लिया, जाने से रोक दिया।

"प्रेत, तुम कौन हो ?" पवित्र पुजारी गरजकर बोला, "मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, उत्तर दो।"

उत्तर मिला, "पवित्र पुजारी, तुम अच्छी तरह जानते हो, मैं कौन हूँ, मैं दूसरों को नहीं बताना चाहता।"

"मैंने तुम्हारा नाम नहीं पूछा है। मैं पूछता हूँ तुम हो कौन ?"

आँगी मरदाना आवाज में बोली, "मैं वह हूँ, जिसने अपना मार्ग

छोड़कर दूसरे मार्ग को अपना लिया।"

पवित्र पुजारी शोपान बोला, "दूसरा मार्ग वही अपनाता है, जो सीधे मार्ग से भटक जाता है।"

"सीधा मार्ग बहुत तंग था।" प्रेत ने उत्तर दिया।

"यह उत्तर मैंने पहले भी उनसे सुना है, जो सीधे रास्ते से भटक गए और फिर लौटकर नहीं आए।" पवित्र पुजारी ने सिर हिलाकर कहा, फिर जरा देर चुप रहने के बाद पूछा, "तुम इसके शरीर में क्यों घुस आए ?"

पवित्र पुजारी बोला, "हमारी पुस्तकों में लिखा है कि एक मृतक की आत्मा किसी जीवित के शरीर में नहीं ठहर सकती।"

आँगी प्रेत की आवाज में बोली, "मैं मरा नहीं हूँ।"

पुजारी बोला, "एक ही बात है, तुम हमारी दुनिया छोड़कर चले गए और उस समय तक तुम नहीं उठ सकते जब तक महाप्रलय का शंख न फूंका जाए। इसलिए मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तुम इस क्वांरी का शरीर छोड़ दो।"

सहसा आँगी मर्दाना आवाज में चीखकर बोली, "पवित्र पुजारी, मैं तुम्हारी शक्ति जानता हूँ। मुझे यह भी मालूम है कि तुम ग्यारहवें आसमान तक जा चुके हो, देवता भी तुम्हारी आज्ञा टालने से विवश हैं। मगर मुझ पर तुम्हारा शासन नहीं चल सकता, क्योंकि मेरे पास और कहीं जाने का कोई ठिकाना नहीं है, हर मार्ग मेरे लिए बन्द हैं,

और हर दरवाजे के पट बन्द और हर ओर से बदी की शक्तियाँ घात लगाए बैठी हुई हैं, मुझे पकड़ने के लिए।"

प्रेत की आवाज कांपने लगी। आँगी का सफेद हुआ चेहरा लाल होने लगा। मर्दाना आवाज आई, "एक ओर ऊपर स्वर्ग है, और बीच में बस्तियों की सीमाएं, हजारों दुनियाएं, लेकिन इनमें से किसी एक में मेरे लिए स्थान नहीं है, और अब जब कि मेरी आत्मा ने पीछा करने वालों के भय और डर से कतराकर अपने बचाव के लिए एक स्थान ढूंढ़ लिया है, तुम मुझे यहाँ से भी निकालना चाहते हो। दया करो, मुझे यहाँ से जाने की आज्ञा मत दो, मुझे विवश मत करो।"

आँगी चुप हो गई।

चारों ओर सन्नाटा था। सब जैसे सांस रोके हुए सुन रहे थे। पवित्र पुजारी की आँखों से आँसू झरने लगे, वे बड़ी नर्मी से बोले, "मेरे हृदय में तुम्हारे लिए सहानुभूति की भावना है। ऐ आवारा आत्मा, मैं अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करूंगा, ताकि तुम बदी की शक्तियों के चंगुल से बच सको, मगर तुम्हें इस क्वांरी के शरीर को छोड़ना होगा।"

एकाएक आँगी चिल्लाकर मर्दाना आवाज में कहने लगी, "मैं इंकार करता हूँ...."

"ऐ प्रेत," पवित्र पुजारी ने उसे धमकाते हुए कहा, "उस आदमी की आत्मा जिसने हमारी यह दुनिया छोड़ दी है, मैं तुमसे फिर पवित्र जेन्द और तेरह पवित्र पुस्तकों का वास्ता देकर तुम्हें तुम्हारे

पूर्वजों की सौगंध दिलाकर कहता हूँ, मैं कहता हूँ, पुजारी शोपान बल्द पुजारी दुरदान, बल्द महान पुजारी जेरान, जिनसे बड़ा पुजारी हमारे कबीले ने आज तक पैदा नहीं किया, मैं उन सब महान पूर्वजों का नाम लेकर तुमसे कहता हूँ कि तुम अभी आँगी, पुत्री सरदार बलवाल, जाति जमदयाल का शरीर छोड़ दोगे, और शरीर छोड़ते समय उसे या किसी दूसरे को कोई कष्ट नहीं पहुँचाओगे।"

"मैं किसी बुराई से नहीं डरता हूँ" आँगी चीखकर बोली, "और न मुझे तुम्हारे वचनों का विश्वास है; क्योंकि दुनिया की कोई शक्ति अब मेरी सहायता नहीं कर सकती। आसमान की ऊँची से ऊँची जगह पर मेरे लिए ऐसी कोई कुशलता नहीं है जो मुझे यहाँ मिली है और यदि मैं इस जगह को छोड़ दूँ, तो पाताल की ऐसी गहराइयों में गिरा दिया जाऊंगा, जहाँ से निकलने की मेरी कोई सूरत नहीं होगी। इसलिए मैं नहीं जाऊँगा।"

पवित्र पुजारी रुक-रुककर कहने लगा, "राक्सू देवता की सौगंध खिलाकर तुमसे कहता हूँ, अन्तिम बार कहता हूँ, इस क्वांरी मासूम लड़की के शरीर से निकल जाओ, और याद रखो, अगर तुम न गए, तो मैं तुम्हें प्रेत-शक्तियों के हवाले कर दूंगा।"

कुछ क्षण पूर्ण रूप में चुप्पी रही, फिर आँगी मरदाना आवाज में यों बोली, "भगवान का नाम लेकर मैं कहता हूँ, कि मैं अपनी मंगेतर के पास हूँ, और सदा महाप्रलय तक इसके पास रहूँगा।"

पवित्र पुजारी सीधा तनकर खड़ा हो गया। कोलात को संकेत से

बुलाते हुए बोला, "बाहर मन्दिर में जाओ, और वहाँ से नौ नफीरियां उठा लाओ और नौ काले दीप दीवटों के साथ और तेरह पवित्र पुस्तकों के बस्ते तह करके यहाँ उठा लाओ, और फिर मेरी यह लाठी ले जाओ और नीचे अच्छन ढोक से सरदार बलवाल के घर से पवित्र पुजारी सूसाशाह को मेरा असा (लाठी) देकर कहना कि पुजारी सोपान ने आपको बुला भेजा है।"

कोलात ने असा हाथ में ले लिया, नौ नफीरियां वह बाहर मन्दिर से लेकर अन्दर आया, फिर नौ दीवटों को नौ काले दीपों के साथ-साथ वह पवित्र पुस्तकों के बस्ते उठा लाया और लकड़ी के तख्त पर उसने यह सब सामान बड़े ढंग से रख दिया, और फिर पुजारी का 'असा' उठाकर नीचे अच्छन ढोक की ओर चल दिया।

उसके जाने के पश्चात् पवित्र काहन शोपान ने सरदार बलवाल से पूछा, "बलवाल, दूल्हा, उसके घर वाले और बाराती कहाँ पड़े हैं?"

"नीचे मेरे घर में।"

"काका नाई को उनके पास भेजो, और मेरी ओर से कहलवा दो, कि वे रुकें-और मेरी आज्ञा की बाट देखें।"

सरदार बलवाल उठा और बाहर जाते हुए कहने लगा, "मैं अभी काका नाई को भेज देता हूँ और अगर कोलात न गया होगा तो उसके हाथ सूचना भेज दूंगा।"

सरदार बलवाल शीघ्रता से कमरे से निकल गया।

उसके जाने के बाद पवित्र पुजारी ने देखा कि नीचे फर्श के गलीचे पर एक कोने में आँगी दुबकी लेटी है, और उसने काला दुशाला चारों ओर से अपने ऊपर ओढ़ रखा है। वह इस समय बिलकुल अचेत-सी दिखाई देती थी, या नींद में डूबी हुई।

पवित्र पुजारी बोला, "दादी दूरमा और रजी, तुम दोनों अब इस लड़की को मेरे कमरे से ले जाओ, और बाहर मेरी प्रतीक्षा करो।"

रजी ने हौले से आँगी को जगाया, वह चौंककर जागी, हड़-बड़ाकर उठ बैठी। नर्म कमजोर आवाज में बोली, "दादी, यह लोग मेरे साथ क्या व्यवहार करेंगे, क्या करेंगे यह लोग अब?"

दादी माँ उसे पुचकारते हुए बोली, "डरने की कोई बात नहीं है, तुम पवित्र पुजारी के हाथ में हो। शाह बिलूत के पवित्र मन्दिर में हो। यहाँ कोई तुम्हें कष्ट नहीं पहुँचा सकता, मेरी प्यारी बच्ची, चिन्ता न करो।"

"तसल्ली रखो, "यहाँ तुम बिल्कुल सुरक्षित हो।" रजी आँगी की बलाएं लेते हुए बोली, "चलो दूसरे कमरे में-पुजारी ने आज्ञा दी है।"

आँगी सर झुका के दादी माँ और रजी के साथ दूसरे कमरे में चली गई।

कोलात चला गया था, इसलिए काका नाई को भेजना पड़ा।

जब काका नाई और कोलात पुजारी सूसाशाह को लेकर वापस पहुँचे तो तीसरा पहर ढल रहा था।

स्नेहपूर्वक हाथ मिलाने के पश्चात् पुजारी सूसाशाह से पुजारी शोपान कहने लगा, "एक प्रेत प्रवेश कर चुका है, सरदार बलवाल की लड़की आँगी के शरीर में।"

"मुझे मालूम हो चुका है।" सूसाशाह बोले।

"मैंने बहुत समझाया, मगर वह प्रेत किसी प्रकार से निकलने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए उस पर अन्तिम हथियार का प्रयोग करना होगा, अन्तिम बुराई भेजनी पड़ेगी आप चूंकि दूसरे कबीले के काहन हैं जिनके घर लड़की बहू बनकर जाएगी इसलिए आपकी आज्ञा बहुत जरूरी है।"

सूसाशाह पुजारी ने सर हिलाकर कुछ क्षणों अपनी खिचड़ी दाढ़ी पर मौनपूर्वक हाथ फेरा, फिर बोले, "बुराई भेजना बड़ा भारी दंड है, जीवितों के लिए, लेकिन जो मर जाए उसके लिए और भी बेरहम बात है। मगर जैसा कि तुम कहते हो कि वह प्रेत किसी प्रकार भी नहीं मानता, और उस मासूम बच्ची को छोड़ने के लिए किसी प्रकार तैयार नहीं है, तो मुझे भी आज्ञा देने में कोई असमर्थता नहीं है; लेकिन इस समय जो मैं तुम्हारे कहने पर भागा-भागा चला आया, तो इसका कारण इसके अतिरिक्त यह भी है मुझे भी तुमसे इस विषय में मशवरा करना आवश्यक हो चला है।"

"किस विषय में ?"

“इस घटना और कहानी के विषय में।” पुजारी सूसाशाह बोला, “एक रहस्य है, जो मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ। कुछ समय हुआ, नीचे अच्छन ढोक में एक अजनबी बोरीन दाहल सरदार बलवाल से मिलने आया था, और उसने निशानी के रूप में अपनी उंगली से अंगूठी उतारकर बलवाल को भेज दी थी, मगर सरदार बलवाल गाँव से कहीं बाहर गया हुआ था, जब वह वापस लौटा तो वह अजनबी मर चुका था।”

“हाँ, मुझे याद आया, उसकी लाश हमारे कबीले के कब्रिस्तान में दफन कर दी गई थी, उसी लड़के की कब्र के पास...।”

“हाँ, यही है, बोरिन दाहल...वह मेरे गांव का था, और कल रात वह तीन बार मुझे सपने में मिला, कह रहा था कि उसे सरदार बलवाल के विरूद्ध शिकायत है, वह अपना मुकदमा राक्सू देवता की ओर से हमारे सामने रखना चाहता है।”

“सरदार बलवाल के विरुद्ध क्या शिकायत है उसे ?” सोपान पुजारी ने पूछा।

“सपने में उसने मुझे यह सब नहीं बताया, बस बार-बार वह यह कहता रहा कि सरदार बलवाल ने उसके साथ बड़ी अशोभनीय हरकत की है, जानलेवा हरकत की है। शब्द ‘जानलेवा’ उसने तीन बार दोहराया।”

“हमारे धर्म में जीवित और मृतक के बीच अन्तर नहीं किया जाता, हम दोनों को राक्सू देवता के दरबार में बुलाकर इनका मुकदमा

सुन सकते हैं, लेकिन मैं तुमसे यह पूछता हूँ, महान काहन, कि तुम्हारे इस सपने से इस लड़की के प्रेत का क्या सम्बन्ध है ?"

"सम्बन्ध यूं होता है", सूसाशाह बोला, "मेरे कानों में उड़ती-उड़ती यह खबर पड़ी है, कि जिस प्रेत ने सरदार बलवाल की लड़की के शरीर में अपना घर बनाया है, वह वास्तव में बोरीन दाहल का बेटा चनन था।"

"चनन ? बोरीन दाहल का बेटा !"

"और यह कि जो अंगूठी बोरीन ने सरदार बलवाल को भेजी थी, वह एक मुख्य वचन याद कराने के लिए थी, जो उन दोनों ने एक-दूसरे से जवानी में किया था। सुना है कि जवानी में वह एक-दूसरे के पक्के दोस्त थे, यह भी मैंने सुना है कि सरदार बलवाल ने अपनी जवानी में बोरीन दाहल से कोई एक सौगंध खाई थी, वह उसने पूरी नहीं की।"

पवित्र पुजारी शोपान कुछ क्षण सोचता रहा, फिर अपनी सफेद दाढ़ी में उंगलियाँ फेरते बोला, "यह बात है, यह बात है ...तो मैं प्रेत निकालने का काम कल शाम तक रोकता हूँ, और कल सुबह की पूजा के बाद हम बोरीन दाहल स्वर्गवासी की आत्मा को राक्सू के दरबार में आने की दावत देंगे, ताकि वह अपना मुकदमा उपस्थित कर सके, और उसके बाद तीसरे पहर या शाम के आसपास मैं प्रेत को लड़की के शरीर से निकाल दूंगा।"

"यह विषय है भी अजीब," पुजारी सूसाशाह बोला, "एक

जीवित और मृतक के बीच मुकदमें की कार्यवाही केवल हमारे धर्म में सम्भव है।"

"पहले-पहल बहुत-से स्थानों पर बहुत-से पवित्र लोगों के बीच इस प्रकार के मुकदमों को सुनना एक स्वाभाविक काम था मगर ज्यों-ज्यों इन्सान की सभ्यता प्रगति करती गई, मृतक और जीवितों के बीच दीवार ऊपर उठती गई, और अब तो सभ्य शिक्षित शहरी इलाकों में इस प्रकार के मुकदमों पर अत्यन्त आश्चर्य प्रकट किया जाता है।"

"सभ्यता और शिक्षा के जहाँ बहुत-से लाभ हैं वहाँ कुछ नुकसान भी हुए हैं।"

"जैसे ?"

"जैसे यही, कि बहुत-सी आवाजें सभ्य लोग नहीं सुन सकते, बहरे हो चुके हैं, बहुत-सी चीजें नहीं देख सकते, छठी इन्द्री लगभग मर चुकी है, खैर हमें इन लोगों से क्या ?"

इतना कहकर सूसाशाह चुप हो गया। फिर कुछ क्षणों के पश्चात् बोला, "मैं चाहता हूँ, महान पुजारी शोपान, कि इस मुकदमें के उच्चतर न्यायाधीश आप ही हैं, ज्ञान व फलसफा अनुभव और आत्मा के आधार से आप हर विश्वास से मुझसे श्रेष्ठ और उच्च हैं।"

"लेकिन जीवित और मृतक के बीच मुकदमा सुनने में अकेले आदमी के लिए बड़ी कठिनाइयाँ हैं।" पुजारी शोपान बोले, "मैं चाहूँगा, इस मुकदमें की सुनवाई के समय आप भी मेरे साथ रहें, और

यदि आपको कोई एतराज न हो तो दूसरे धर्मों के सूफी बुजुर्गों को भी बुला लिया जाए, एक सूफी दाऊद, दूसरे महावीर जोगी। वे लोग भी इन विषयों में गहरा अनुभव रखते हैं।"

"बुला लीजिए," पुजारी सूसाशाह बोला, "लेकिन अन्तिम निर्णय करना आपके अस्तित्व का काम है।"

"ठीक है।" काहन शोपान ने सिर हिलाया।

इतने में कोलात अन्दर आया, कोलात को देखकर पुजारी शोपान बोले, "जाओ, सरदार बलवाल से कह दो, बच्ची को लेकर अन्दर आए।"

कोलात के जाने के कुछ मिनटों पश्चात् सरदार बलवाल, दादी माँ, और रजी आँगी को संभालते हुए अन्दर आए।

अन्दर आते ही आँगी पुजारी शोपान के समक्ष घुटनों के बल बैठ गई और उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

उसके सर पर हाथ रखकर काहन शोपान ने बड़ी नर्मी से कहा, "प्रेत! मैं तुम्हें कल तीसरे पहर तक समय देता हूँ। अगर कल तीसरे पहर तक तुम अपने-आप इस मासूम लड़की के शरीर से निकल गए, तो मैं तुमसे किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न करूंगा, विपरीत इसके, अपनी समस्त शक्ति और पूरा बल प्रयोग करके तुम्हें इस लड़की के शरीर से अलग कर डालूंगा। जाओ, बच्ची को ले जाओ।"

रजी और दादी माँ आँगी को पकड़कर कमरे से बाहर ले गई।

सरदार बलवाल भी उनके पीछे-पीछे जाने वाला था कि पुजारी शोपान ने उसे रोककर कहा, "सरदार बलवाल, क्या तुम अपनी जवानी के दोस्त बोरीन दाहल को जानते हो?"

सरदार बलवाल यह प्रश्न सुकर घबरा गया, "बोरीन दाहल, मगर वह तो मर चुका है ना?"

"तो जान लो," पुजारी सोपान ने बड़ी सख़्ती से कहा, "कल रात वह तीन बार पवित्र पुजारी सूसाशाह के सपने में आया और प्रार्थना की कि तुमने उसके साथ कोई ऐसी अशोभनीय और घातक हरकत की है जिसका मुकदमा वह हमारी अदालत में राक्सू देवता के सामने शाह बिलूत के मन्दिर में रखना चाहता है। कल सुबह की पूजा के बाद तुम्हें यहाँ आकर उत्तर देना होगा।"

"मुकदमा ! मेरे विरुद्ध ! मुझे आना पड़ेगा ! हे राक्सू, क्या मेरी विपत्तियों का कभी अन्त न होगा?" फिर वह दोनों पुजारियों से सम्बोधित होकर कहने लगा, "वह मुझसे कुछ कहना चाहता है, किसी वस्तु को मांगता है पुजारी, राक्सू के लिये मेरी सहायता करो।"

"अपना मुकदमा वह यहीं हमारे सामने पेश करेगा और अपने अभियोग हमारे-तुम्हारे सामने रखेगा, इसलिए कल सुबह तुम्हें अवश्य आना है।"

"जो आपका आदेश होगा पुजारी, मैं वैसा ही करूंगा।" सरदार बलवाल ने सिर झुकाकर कहा।

"कल सुबह सूफी दाऊद को और महावीर जोगी को भी बुलावा भेज दो कि वह भी पधारें और मुकदमें की सुनवाई में मेरे साथ सम्मिलित रहें। फिर कल शाम से पहले, तीसरे पहर के आसपास तुम सब बारातियों और लड़के वालों और दूल्हा और उसके बाप और उनके साथ आई हुई औरतों को भी खबर कर देना, वे भी यहीं आ जाएँ। मैं उसी समय प्रेत को निकालकर अपने सामने दूल्हा और दुल्हन का ब्याह कर दूंगा, ब्याह का शामियाना यहीं लगा दिया जाए।"

सरदार बलवाल बोला, "हो सकता है, अब उन लोगों को इस शादी में कोई एतराज हो।"

"किनको ?"

"लड़के वालों को।"

"लड़के वालों की जिम्मेदारी मैं लेता हूँ।" पुजारी सूसाशाह बोला, "मैं उनके साथ आया हूँ, वह न काहन शोपान से, न मेरे आदेश से फिर सकते हैं।"

"काका नाई," पुजारी शोपान बोला, "लड़के वालों से कह दो, वे कल यहाँ ठीक समय पर शाह बिलूत के मन्दिर में उपस्थित रहें।"

काका नाई बोला, "वे सब यहाँ तीसरे पहर उपस्थित रहेंगे।"

काहन शोपान और काहन सूसाशाह रातभर पूजा में उलझे रहे। सुबह-सवेरे, मुँह-अंधेरे कोलात को जगाकर पुजारी शोपान ने अपना

'असा' उसके हाथ में दिया, और उससे कहा, ''कोलात, तुम मेरा 'असा' लेकर कब्रिस्तान में जाओ। जब कब्रिस्तान के अन्दर पहुँच जाओ, तो आँखें बन्द कर लेना, और इस असा से मार्ग टटोलकर आगे बढ़ते जाना, और पहली कब्र जो तुम्हें मिले, उस पर इस असा से तीन बार दस्तक देकर जो मैं कहता हूँ, वही शब्द कहना।"

''जी !" कोलात थरथर कांपते हुए बोला।

''घबराओ नहीं," जब तक यह 'असा' तुम्हारे हाथ में है तुम्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा। तीन बार दस्तक देकर कहना, ''ऐ पाक और पवित्र काहन शोपान बल्द पुजारी दुरादान बल्द पुजारी जेरान महान ने भेजा है। कष्ट क्षमा हो, मगर उनका आदेश यह है कि आप अपने तरीके और ढंग से जिसे आप स्वयं श्रेष्ठ समझते हों, बोरीन दाहल को सूचित कर दें कि आज वह सुबह की पूजा के बाद बिलूत के मन्दिर में अपनी शिकायत लेकर उपस्थित हों। मैं शोपान पुजारी स्वयं उसके मुकदमें की सुनवाई करूंगा, मेरे साथ तीन जज बुजुर्ग होंगे, पुजारी सूसाशाह, सूफी दाऊद और जोगी महावीर। उससे कहना कि वह उन्हीं कपड़ों में उपस्थित हो जो अन्तिम समय उसने पहने हुए थे। यह शब्द तीन बार दोहराना, कोलात...केवल तीन बार, फिर आँखें बन्द किए वहाँ से पलटकर कब्रिस्तान से बाहर भी पलटकर पीछे न देखना, संभव है, तुम अपने पीछे चीखें सुनो, डरावनी दिल दहला देने वाली चीखें, या आवाजें, रोने की आवाजें या हंसने की आवाजें, मगर कभी पलटकर नहीं देखना, कभी इस असा को अपने हाथ से न छोड़ना, वरना बड़ी कड़ी विपदा में फंस जाओगे,

समझ गए ?”

“जी हाँ...” कोलात कांपते हुए लहजे में बोला, मगर उसने असा को मजबूती से थाम लिया और नीचे अच्छन ढोक की ओर चला गया।

आकाश पर अभी पूर्ण रूप से प्रभात की रोशनी न हुई थी, वायु में हिम की शीतलता थी, पुजारी शोपान ने अपना लिबास ठीक किया, फिर पूजा में तल्लीन हो गया।

इसके पास ही पुजारी सूसाशाह पहले ही पूजा में तल्लीन था।

रात को केवल सरदार बलवाल नीचे अच्छन ढोक में अपने घर गया था, क्योंकि लड़के वाले उसके घर ठहरे हुए थे।

मगर आँगी को वापस घर नहीं ले जाया गया, वहीं शिक्षालय के एक भाग को अलग करके उसमें आँगी, दादी टूरमा और रजी को सुला दिया गया, और रातभर छात्र मन्दिर के एक भाग में आँगी के लिए प्रार्थना करते रहे, और रातभर आँगी नींद में बड़बड़ाती रही, कभी अपनी आवाज में , कभी प्रेत की आवाज में, फिर रजी या दादी दूरमा उसे अपनी बांहों में ले लेती, और थपक-थपककर सुलाने की कोशिश करती।

थोड़े समय के लिए आँगी सो जाती, फिर एक हल्की-सी चीख

मारकर जाग जाती, और मुँह ही मुँह में बड़बड़ाने लगती। कभी मौन हो जाती और बिस्तर पर बैठकर वायुमंडल में तकने लगती, कभी हौले-हौले कराहती, कभी नींद मे डूब जाती और कुछ देर तक आराम से सोई रहती। अचानक चौंककर फिर जाग जाती। रातभर उसकी यही क्रिया रही।

सुबह-सवेरे जरूर आँगी की आँख लग गई, फिर बहुत देर दिन चढ़े तक वह सोती रही। उसके सो जाने के बाद दादी माँ और रजी की भी आँख लग गई और वे भी देर तक सोती रही।

X X X

रातभर बड़े जोर की बारिश हुई, बहुत गरज और चमक थी, लाखों तोपें एक साथ छूट रही थी, तूफान ऊँची-ऊँची चोटियों से नीचे की ढोकों तक फैला रहा, सरदार बलवाल के घर के पास बिजली गिर पड़ी, लेकिन शुक्र है मकान बच गया, और किसी बाराती को हानि नहीं पहुँची।

हवा के तेज-तेज झोंकों ने धरती-आकाश को हिला डाला, बारिश के थपेड़े आते थे, और बरसते-गरजते निकल जाते थे, फिर कुछ मिनट निस्तब्धता रही, फिर जैसे तूफान फट पड़ा, बड़े जोर की गर्जना हुई और दूर-दूर तक बिजलियों की कौंधों के लहरिये नाचते रहे।

फिर तूफान हिम-वर्षा में बदल गया, चारों ओर गहरा कुहरा और

धुंध छा गई और इसमें बर्फ के गोले धुनी हुई रूई की भांति चुपचाप मौनपूर्वक धरती पर गिरते गए, अब न चमक थी न गरज, न बिजली के लहरिये थे न तूफान, एक सफेद धुंध में लाखों, करोड़ों गोले बर्फ के छोटे-छोटे फूल, पहाड़, जंगल, घाटी, वृक्ष, मकान हर वस्तु पर गिरते रहे, गिरते रहे : कहते हैं वर्षा के बाद ऐसी जोर की बर्फवारी हुई थी। सुबह जब धुंध हटी और हिम-वर्षा रुकी, तो गरजन से नीचे अच्छन ढोक तक पहाड़, नदियाँ, घाटियाँ, पेड़-पत्ते सब बर्फ की सफेद लिबास ओढ़े-पहने पुजारियों की भांति पवित्र और पाक छवि होकर खड़े थे।

प्रतीत होता था जैसे वे मुकदमें के इंतजार में हों, जो अभी शाह बिलूत के मन्दिर में सबके सामने आरम्भ होने वाला था।

शाह बिलूत के घने सायों तले मन्दिर बिल्कुल सुरक्षित रहा था। नीचे पानी को एक बूंद न गिरी थी, न बर्फ का कोई गोला। तूफान इस पाक मन्दिर के ऊपर ही गुजर गया था, शाह बिलूत के तने के नीचे की घास तक सूखी और सुनहरी थी, और पांव के नीचे चरचराती थी।

सुबह जिस समय सूर्य निकला और काहन शोपान और काहन सूसाशाह मन्दिर में पूजा करके निबट चुके थे, ठीक उसी समय मन्दिर में सूफी दाऊद और महावीर जोगी भी प्रविष्ट हुए। सूफी दाऊद ने आते ही पुजारी सूसाशाह से कहा :

"तुमने अच्छा सपना देखा, अच्छा सपना, बहुत अच्छा सपना...।"

पवित्र शोपान बोला, "मैंने इस सपने की वास्तविकता भी ढूंढ़ी है।"

पुजारी सूसाशाह ने सिर हिलाते हुए कहा, "हाँ, मैंने अच्छा सपना देखा, अच्छा सपना था, ठीक ही सपना था वह।"

पुजारी शोपान ने अपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरकर कहा, "सूफी दाऊद और महावीर जोगी अब आ गए हैं, तो अब मुकदमें की तैयारी में देर न करनी चाहिए। मृतक की आत्मा को बुलाने के लिए मैंने कोलात को भेज दिया है, मगर उसके आने से पहले मैं यहाँ बाईं और, मन्दिर के इस ओर एक गोल दायरा खींच देता हूँ जिसके ऊपर मृतक की आत्मा न जा सकेगी, और यहाँ लकड़ी की तीन खपच्चियाँ लगाकर इस दायरे के चारों ओर कपड़ा खींच दिया जाए।"

पुजारी शोपान ने मन्दिर के बाईं ओर मंत्र पढ़कर एक गोल दायरा धरती पर खींच दिया और फिर छात्रों की सहायता से उसके चारों ओर एक चादर दायरे की सूरत में तान दी गई। इसके बाद सरदार बलवाल आया, तो उससे पुजारी शोपान ने पूछा :

"क्या तुमने दूल्हा, उसके बाप और बारातियों से कह दिया है, कि शादी आज प्रेत निकलने के बाद इसी मंदिर में होगी, वे लोग दिन ढलने पर सूरज डूबने से पहले पहुँच जाएं ?"

सरदार बलवाल बोला, "जी हाँ, मैंने कह दिया है, मगर सब घाटियाँ, पहाड़, वादियाँ बर्फ से पट गई हैं, सब रास्ते बन्द हो चुके हैं, मैं स्वयं बड़ी कठिनाई से पहुँचा हूँ। रात के तीसरे पहर उठकर

चला था, अब पहुँचा हूँ। वे लोग भी दोपहर का खाना खाकर वहाँ से चल देंगे, राक्सू का शुक्र है कि आज बर्फ-वर्षा बन्द है, और सूरज भी निकल आया है, वरना रात को तो महाप्रलय का दृश्य था।"

"सरदार बलवाल," काहन शोपान ने उनसे कहा, "मैंने कल रात ही कोलात को बोरीन दाहल की पवित्र आत्मा को बुलाने के लिए भेज दिया था। वह अब आता ही होगा, लेकिन आत्मा को इस तनी हुई चादर के पवित्र कटहरे में बुलाने से पहले मैं तुमसे यह पूछ लेना आवश्यक समझता हूँ कि तुम इस अदालत के निर्णय के पाबन्द रहोगे?"

"जी हाँ, पवित्र काहन, मैं अपने आपको पाबन्द समझूँगा।"

"तो जरा दो पग पीछे हटकर दाईं ओर खड़े हो जाओ, लकड़ी के इस तख्ते पर।"

सरदार बलवाल पवित्र काहन के बताए हुए लकड़ी के तख्ते पर खड़ा होकर कुछ घबराए हुए लहजे में कहने लगा, "पवित्र पुजारी, मुझे कुछ याद आ रहा है कि बोरीन दाहल की शिकायत शायद किसी सीमा तक उस वचन से सम्बन्धित है, जिसके सम्बन्ध में हम दोनों ने अपनी जवानी में वचन दिए और कसमें खाई थीं। मुझे अब वह विषय याद आ रहा है, मगर उस विषय में मैं निर्दोष हूँ।"

"इस विषय में अदालत तुमसे बाद में पूछेगी, पहले स्वर्गवासी को शिकायत करने दो।"

इतने में कोलात मन्दिर घर में प्रविष्ट हुआ। पवित्र 'असा'

उसके हाथ में था, और वह अत्यन्त थका हुआ और सहमा हुआ और डरा हुआ दिखाई देता था। उसने अन्दर आकर कुछ कहा नहीं, केवल असा उसने पवित्र काहन के हाथ में दे दिया।

काहन शोपान उस असा को लेकर तनी हुई चादर तक गया और तीन बार उसके चारों ओर चक्कर लगाकर वापस आ गया।

फिर काहन सूसाशाह, सूफी दाऊद और महावीर जोगी से सम्बोधित हुआ, "अब बहुत शीघ्र हमारे बीच एक पवित्र आत्मा आने वाली है, सच्ची दुनिया में से, जहाँ कोई झूठ नहीं बोलता है, और यह मुकदमा एक उस सच्ची दुनिया में रहने वाली आत्मा और हमारी झूठ से सम्बन्धित दुनिया के एक इन्सान के बीच है। और अदालत इस बात की गवाह है कि कुदरत के श्रेष्ठ कानून सारी दुनियाओं और कायनातों में समस्त लोगों के बीच सब पर एक-सा लागू है, मृतकों पर भी और जीवितों पर भी, बल्कि यही वे कानून हैं, जो मृतकों को जीवितों से मिलाते हैं।" फिर कुछ क्षण रूककर बोला, "ऐसा मुकदमा बड़ा ही कठिन और खतरनाक होता है। आज सब दुनियाओं की निगाहें आकाश से लेकर पाताल तक इस अदालत पर हैं और इसलिए मैंने अपने विश्वास के मन्दिर में दूसरे विश्वास वाले बुजुर्गों को आने की दावत दी है, सूफी दाऊद और जोगी महावीर को ताकि वह अदालत और कुदरत के श्रेष्ठ कानूनों से इन्कार न कर सके। आखिर मैं भी एक इन्सान हूँ इसलिए इस मुकदमें की कार्यकारिणी के बीच अजीब और अनोखे भय से संबंधित हूँ, एक अजीब और अनोखे भय और डर से....।"

सहसा पवित्र काहन शोपान बोलता-बोलता रुक गया और आश्चर्य से बाईं ओर तने हुए तम्बू की ओर देखने लगा। इसके पश्चात् एकाएक महावीर जोगी ने धीरे से कहा, ''मेरे ख्याल में वह आ गया है।''

सूफी दाऊद ने हाँ में सिर हिलाकर कहा, ''मृतक की पवित्र आत्मा उपस्थित है।''

सूसाशाह पुजारी बोला, ''मुझे भी ऐसा लगता है कि वह यहाँ आ गया है।''

बूढ़े पवित्र काहन शोपान ने बाईं ओर कपड़े के खींचे हुए तम्बू की ओर देखकर कहा, ''पवित्र मृतक बोरीन दाहल, तुमसे यह अदालत अनुरोध करती है कि तुम इस चादर के अन्दर खिंचे दायरे में रहोगे और इससे आगे आने की चेष्टा न करोगे। पवित्र और पाक आत्मा, तुमसे अब हम अनुरोध करते हैं, कि तुम अपनी शिकायत इस अदालत के सामने रखो, वह शिकायत जो तुम अपने बचपन के दोस्त सरदार बलवाल के विरूद्ध रखना चाहते हो।''

इसके पश्चात्, कई क्षणों तक बड़ा गहरा सन्नाटा रहा। ऐसा लगता था, जैसे सब पत्थर के बन गए हों और सांस रोककर चादर के पीछे से बाईं ओर खड़ी आत्मा की आवाज सुनने की कोशिश कर रहे हों।

महावीर जोगी बोला, ''मेरा ख्याल है, वह बोल रहा है।''

सूफी दाऊद ने कहा, ''हाँ, ऐसा लगता है।''

पुजारी सूसाशाह बोला, "मैं उसकी आवाज सुन रहा हूँ, मगर शब्द समझ में नहीं आते।"

महावीर जोगी बोला, "मैं शब्द सुन रहा हूँ, मगर आवाज नहीं सुन सकता।"

फिर कुछ देर सन्नाटा रहा।

एकाएक चुप्पी के इस जादू को तोड़ते हुए काहन शोपान बोले, "जगदयाल जाति के सरदार बलवाल, बोरीन दाहल की शिकायत यह है कि जवानी के दिनों में जब तुम दोनों एक ही पाठशाला में छात्र थे, तुम दोनों का ब्याह एक ही सप्ताह में हुआ था, और इस सप्ताह तुम दोनों ने सौगंध खाई थी और एक-दूसरे को वचन दिया था कि अगर तुम्हारी पत्नियों में से किसी के यहाँ लड़का हुआ और दूसरी के यहाँ लड़की, तो बड़े होने पर उन दोनों को पति-पत्नी के संबंध में बांध दिया जाएगा। क्या तुमने ऐसा कोई वचन दिया था ?"

सरदार बलवाल कांपती हुई आवाज में बोला, "यह सच है।"

"बोरीन दाहल की पवित्र आत्मा यह भी कहती है," काहन शोपान बोले, "कि इन वचनों और सौगंधों के पश्चात् बहुत जल्द वह तुमसे बिछुड़कर अलग हो गया और दूर के किसी गाँव में चला गया, जहाँ उसकी पत्नी ने उसी दिन और उसी घण्टे एक लड़के को जन्म दिया, जबकि तुम्हारी पत्नी के यहाँ लड़की पैदा हुई थी।

इसके पश्चात् उसकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया और बच्चे का पालन-पोषण बाप ने किया। बेटा बड़ा होता गया, और पुजारियों की

विद्या और कला में अपने समस्त छात्र साथियों से श्रेष्ठता प्राप्त करता हुआ एक स्तर से दूसरे उच्च स्तर पर प्रगति करता गया। और पवित्र आत्मा का यह भी कहना है कि विद्या की प्यास बुझाने में उसका बेटा गाँव से गाँव और शहर से शहर और एक देश से दूसरे देश घूमता हुआ अन्त में आखिर तुम्हारे घर पहुँचा, जहाँ उसके भाग्य में ठहरना बदा था, और जहाँ उसकी आत्मा ने तुम्हारी बेटी की आत्मा से जीवन-भर के लिए अपना नाता बांध लिया।

"मगर तुम धनवान थे और बोरीन दाहल का बेटा गरीब था, और इसलिए तुमने अपना मुँह उससे फेर लिया, और दूसरी जगहों पर अपनी बेटी के रिश्ते ढूंढ़ने लगे, कोई एक ऐसा लड़का जो धन-दौलत में तुम्हारी बराबरी कर सके।"

"और आज स्वर्गवासी बोरीन दाहल ने देखा कि उसका बेटा निराश होता जा रहा है, और तुम अपना वचन भूल चुके हो, तो उसने अपने कबीले के कुछ घुड़सवारों की सहायता से तुम्हारे कबीले पर आक्रमण किया, यह आक्रमण किसी लूटमार की खातिर नहीं था, बल्कि तुमसे उस लड़की को छीनकर उस लड़के के हवाले कर देने का था जो बचपन से उसकी पत्नी थी, तुम्हारे और बोरीन दाहल के वचन के अन्तर्गत।"

"मगर बोरीन दाहल के बेटे ने स्वयं दाहल के घोड़े पर चढ़कर बोरीन दाहल को बेपर्दा कर दिया, और जब बोरीन दाहल ने देखा कि स्वयं अपना बेटा तुम्हारी लड़की के प्रेम में डूबकर उसके विरूद्ध हो चुका है, और अपने बाप पर आक्रमण कर दिया है, तो वह अपने

कबीले के लोगों को लेकर हार्दिक हार स्वीकार करके और निराश होकर चला गया। उसी रात संयोग से या किसी की शरारत से जिसमें स्वर्गीय दाहल का कोई हाथ न था, तुम्हारे घर को आग लग गई, जिससे तुम्हारी बेटी की जान स्वयं बोरीन दाहल के बेटे ने अपनी जान खतरे मे डालकर बचाई, मगर तुमने उसका खयाल न किया, और उसी प्रकार दूसरी जगहों पर लड़के ढूंढ़ते रहे, रिश्ता खोजते रहे, और कोशिश करते रहे। और जब स्वर्गीय बोरीन दाहल के बेटे ने मुँह खोलकर तुमसे यह रिश्ता मांग लिया, तो तुमने सोने के सिक्कों भरे घड़े की मांग की।" एकाएक सबने देखा कि इस प्रकार बातें करते-करते पवित्र और बूढ़े पुजारी शोपान का चेहरा एकदम लाल हो गया, और आँखें अंगारे की भांति चमकने लगीं।

"तब बोरीन दाहल ने देखा, कि उसका लड़का सही विद्या और कला से भटककर जादू, टोने, टोटके और काली विद्या प्राप्त करने के पीछे पड़ गया है, और सोने के सिक्के भरे घड़े की खोज में अपनी आत्मा खोने चला है, तो उसे बड़ा धक्का पहुँचा। वह लड़का फिर से आबारागर्द बन गया, और उसके बाप का दिल भय और खतरे से भर गया। और उसके दिल में सन्देह उत्पन्न हो गया कि कहीं अपनी जवानी की नातजुर्बेकारी में उसका लड़का गलत रास्ते पर न चला जाए, और पापात्माओं के हाथ में न आ जाये। उसके बुरे सन्देह सच प्रमाणित हुए। पापात्माओं और बुरी शक्तियों ने जो जाल एक भोलीभाली नेक आत्मा के लिए फैलाया था, उसका लड़का उसमें फंस गया और अपने प्राण खो बैठा, और तुम्हारे कब्रिस्तान में एक अजनबी हैसियत से दफन किया गया।"

फिर बहुत देर तक सन्नाटा रहा, सब जैसे सांस रोके हुए थे, एकाएक पवित्र पुजारी शोपान फिर गरजते हुए बरस पड़ा :

"बोरीन दाहल को अपने बेटे की मृत्यु का बड़ा गहरा सदमा हुआ। वह अपने बेटे की कब्र पर प्रार्थना पढ़ने और तुमसे मुँह-दर-मुँह बात करने की कामना लेकर तुम्हारे गाँव में अकेला आया, मगर तुम अपने घर पर न थे। उसने तुम्हें सूचना भेजी, और निशानी के रूप में अंगूठी भी, ताकि तुम अपनी बदली हुई अंगूठी को देखते ही पहचान लो। मगर उसके बाद भी तुममें से कोई उससे मिलने के लिए नहीं पहुँचा, और बोरीन दाहल अपने बेटे के गम में चूर-चूर और टूटा उसकी कब्र पर प्रार्थना पढ़ता-पढ़ता मर गया।

"और उसके बेटे की आत्मा आवारा होकर बुरे वायुमंडल में उड़ानें भरने लगी। कहीं ठौर-ठिकाना उसका न था। अंत में बुरी शक्तियों से भागते-भागते उसने अपने बचाव के लिए तुम्हारी लड़की के शरीर में प्रेत बनकर शरण प्राप्त की।

"बोरीन दाहल का कहना है, कि उसके बेटे की मौत ने स्वयं बोरीन दाहल को दोनों दुनियाओं से काटके रख दिया है, कहीं पर उसका कोई नामलेवा नहीं, कोई दोस्त ऐसा नहीं जो उसके पक्ष में कुशलता के लिए प्रार्थना पढ़ सके। उसकी आत्मा की रोशनी सदा-सदा के लिए चली गई है, और उसके दिल का मुकुट अपने स्थान से उतरकर तारामंडल में भटक रहा है।

"इसलिए बोरीन दाहल सभ्यतापूर्वक प्रार्थना करता है कि

कुदरत के श्रेष्ठ कानूनों के आधार पर सरदार बलवाल का यह अपराध सब पर प्रकट किया जाए। वह मेरा खूनी है, मेरे बेटे का भी कातिल है, और मेरे बेटे के बेटे के बेटों का भी कातिल है, वह हमारे खानदान के पूरे भविष्य का कातिल है। इसलिए वह वास्तव में दंड का अधिकारी है।"

पवित्र पुजारी इतना कहकर चुप हो गया, हौल-हौले उसके चेहरे की बढ़ती हुई लाली अदृश्य होती चली गई, और उसकी अंगारों की तरह दहकने वाली आँखों की रोशनी भी स्वाभाविक हो गई।

इतने समय तक बिल्कुल सन्नाटा रहा, फिर, सन्नाटे में धीमे-धीमें सुरों में सरदार बलवाल की सिसकियों की आवाज आने लगी।

"सरदार बलवाल," पवित्र पुजारी ने एक लम्बे समय के बाद कहा, "तुमने बोरीन दाहल स्वर्गीय की पवित्र आत्मा का अभियोग सुन लिया है, अब तुम्हें इस सम्बन्ध में क्या कहना है ?"

सिसकियों के बीच सरदार बलवान हकलाने लगा, "मैं...मैं क्या कहूँ ?"

शब्द उसका साथ नहीं दे रहे थे। उसका सीना सिसकियों से रुंधा हुआ था, "मेरे पास इस अभियोग के निरर्थक करने और अपने-आपको सच्चा प्रमाणित करने के लिए शब्द नहीं हैं। मैं यहाँ अपने पुराने बचपन और जवानी के साथी बोरीन दाहल से क्षमा मांगते हुए केवल यह कहना चाहता हूँ कि वह मुझे क्षमा कर दें। मैंने जो कुछ किया, जानबूझकर नहीं किया, वचन लेनेदेने के बाद हम

दोनों दोस्त एक-दूसरे से अलग हो गए। वह कहीं चला गया, मैं इधर आ गया। मुझे पता न चला कि उसकी पत्नी के एक लड़का हुआ है या कोई लड़की हुई है। केवल अंगूठी के मिलने से मुझे यह पता चला कि कब्रिस्तान में उसकी लाश पर मरने वाला मेरे बचपन का दोस्त था, लेकिन लड़के और बाप का सम्बन्ध मुझे ज्ञात न था। स्वर्गीय बोरीन दाहल और पवित्र आत्मा के सम्बन्ध की मुझे कोई जानकारी थी।"

काहन शोपान ने पूछा, "तुमने छानबीन क्यों न की ? तुमने उसके या उसके लड़के के विषय में अपनी लड़की का रिश्ता खोज करने से पहले पूछा नहीं ?"

"हमारे यहाँ रिवाज यह है कि लड़के वाले इस बारे में पहल करते हैं, लड़की वाले नहीं। मैंने सोचा अगर बोरीन दाहल के यहाँ लड़का पैदा होता, तो, तो....बाद में सारी कहानी मेरे मस्तिष्क से निकल गई।"

काहन सूसाशाह बोला, "स्वर्गीय की पवित्र आत्मा तुमसे पूछती है कि जब तुमने उसके बेटे को अपने घर में रखा, और उसे अपने साथ खाने-पीने में सम्मिलित किया, तो तुमने कभी उससे यह क्यों नहीं पूछा कि तुम कौन हो? किसके बेटे हो? किस जाति के हो? कहाँ से आए हो?"

"मुझे मालूम नहीं, मैंने क्यों नहीं पूछा, या ऐसे क्यों हुआ, लेकिन इसकी मैं सौगन्ध खा सकता हूँ कि कभी-कभी मेरे दिल में उस

लड़के को अपना घर-जमाई बना लेने की इच्छा जाग उठती थी, शायद इसीलिए जब मेरी लड़की के लिए कहीं से रिश्ता आता, मैं ऐसी कड़ी शर्तें लगा देता कि मंगनी पक्की न होने पाती, और वह रिश्ता टूट जाता।"

"चार बार ऐसे ही यह रिश्ता बनकर टूट गया। अंत में लड़के वालों ने मेरी शर्तें स्वीकार ली, और मेरे पास इंकार करने का कोई कारण न रहा।"

फिर सब लोग मौन हो गए।

सूसाशाह पुजारी ने फिर कहा, "स्वर्गीय बोरीन दाहल का कहना है, कि तुम अपने दिल में भली प्रकार आभास करते थे कि चनन किसका बेटा है, इसलिए तुम उससे सदा यह प्रश्न करते हुए फिरते और हिचकिचाते रहे कि कहीं तुम्हें अपने वचन का पाबन्द न रहना पड़े। तुम अपने कबीले के सबसे अमीर सरदार थे, और तुम्हारी बेटी सुख और आराम में पली थी, और तुम उसे किसी अमीर के पल्ले बांध देना चाहते थे, इसलिए तुमने स्वर्गीय बोरीन दाहल के बेटे को जीवित नर्क में झोंक दिया।"

इसका सरदार बलवाल ने काई उत्तर न दिया। वहा जहाँ खड़ा था, वहीं पर घुटनों के बल बैठकर रोने लगा। उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छुपा लिया, और उसकी सिसकियों की आवाज बीच-बीच में सन्नाटे को तोड़ती रही।

अंत में बूढ़े काहन शोपान ने अपना 'असा' संभाला, पुजारी

सूसाशाह, सूफी दाऊद और महावीर जोगी से राय-मशवरा किया। वे सब लोग एक कोने में चले गए।

कुछ मिनटों के बाद वे चारों बुजुर्ग वापस आ गए, वापस आने पर बूढ़े पुजारी शोपान ने अपना पवित्र 'असा' सभांला, और उसे सख्ती से धरती पर पटककर कहा :

''इस अधिकार पसन्द और न्यायप्रिय अदालत ने दोनों पक्षों के बयान सुन लिए हैं, और उनकी रोशनी में उन पर विचार-विमर्श करके अपना निर्णय सुनाती है :

''बोरीन दाहल और सरदार बलवाल ने जिस समय यह वायदा किया था, उस समय इस बात का कोई प्रमाण न था, कि दोनों बच्चे गर्भ में आ चुके थे। इसलिए इस धरती पर जिस समय वस्तु का कोई अस्तित्व न हो, उससे सम्बन्धित कोई मुआहदा गिना नहीं जा सकता, इसलिए इस मुकदमें में इस पवित्र अदालत का फैसला है, कि इस विषय में हम सरदार बलवाल को अपराधी नहीं ठहरा सकते।"

''लेकिन यह विषय भी ध्यान देने के योग्य है, कि इस मुआहदे को ऊपर की आत्माओं की दुनिया में स्वीकार किया गया था, और वह वायदा ऊपर की दुनिया ने किसी समय रद्द नहीं किया, और जबकि बोरीन दाहल के लड़के के दिल में यह विश्वास घर कर गया कि सरदार बलवाल की लड़की ही उसकी होने वाली दुल्हन है और

जबकि सरदार बलवाल ने इसी सिलसिले से अपनी क्रिया और अपने कार्यों से बोरीन दाहल और उसके बेटे के जीवनों पर तबाही लाई है, इसलिए यह अधिकार-पसन्द और न्यायप्रिय अदालत यह फैसला देती है कि सरकार बलवाल इस तबाही के दंड में अपनी आधी सम्पत्ति दान में दे दें, और हर वर्ष जीवन-भर बोरीन दाहल और उसके लड़के की कब्र पर उनकी आत्माओं को धीरज पहुँचाने के लिए दीप जलाएं, और उनकी आत्मा के लिए दुआ करता रहें, जैसे मानों कि वह उसके ही सगे-सम्बन्धी हों।"

यहाँ पर पवित्र पुजारी कुछ देर रुका, फिर बोला, "इस निर्णय के पश्चात् अदालत बोरीन दाहल स्वर्गीय की पवित्र आत्मा से अनुरोध करती है कि वह सरदार बलवाल को क्षमा कर दे, और बाप होने के नाते अपने बेटे से कहे कि वह इस क्वारी का शरीर छोड़ दे, ताकि सरदार बलवाल की बेटी आँगी की पीढ़ी आगे चल सके, और इस कबीले के खानदान का नाम और चिह्न शेष रह सकें।"

इसके बाद देर तक चुप्पी रही।

फिर पवित्र काहन शोपान ने पूछा, "स्वर्गीय पवित्र बोरीन दाहल की आत्मा क्या हमारे फैसले को मानती है ?"

फिर चुप्पी का एक लम्बा समय आया।

पुजारी शोपान ने सरदार बलवाल से सम्बोधित होकर कहा, "सरदार बलवाल, क्या तुम्हें इस अदालत का यह फैसला स्वीकार है?"

सरदार बलवाल ने सर झुकाकर कहा, "हाँ, मुझे स्वीकार है।"

काहन शोपान बाईं ओर चादर से ढके दायरे की ओर देखकर बोला, "स्वर्गीय बोरीन दाहल की पवित्र आत्मा से प्रार्थना की जाती है कि अब उसके और सरदार बलवाल के बीच बैर का निर्णय हो चुका है, इसलिए पवित्र आत्मा अपने शयनकक्ष में वापस चली जाए, और वापस जाते हुए किसी जीवित आत्मा से झगड़ा न करे, न उसे कष्ट पहुँचाए।"

कुछ क्षणों तक चारों ओर पूर्ण रूप से सन्नाटा रहा। फिर पवित्र पुजारी शोपान ने कोलात की ओर देखकर कहा :

"कोलात और डागर, तुम दोनों उस दायरे से चादर खींच लो, मैं आदेश देता हूँ।"

कोलात और डागर ने दायरे के चारों ओर से चादर खींच ली। पुजारी शोपान ने 'असा' की अंतिम नोक से दायरे को मिटा दिया। फिर उसने उसी स्थान पर एक नया दायरा खींचा। पहला दायरा उसने 'असा' को दाईं से बाईं तरफ घुमाते हुए खींचा था। यह दायरा उसने अपने असा की बाईं से दाईं तरफ घुमाकर खींचा। फिर पवित्र पुजारी शोपान ने डंजी को संकेत किया। वह मिट्टी के एक बड़े बर्तन में पानी लेकर आया और उसने पवित्र काहन शोपान, सूसाशाह, सूफी दाऊद और जोगी महावीर के हाथ धुलाए।

इसके पश्चात् काहन शोपान सरदार बलवाल से सम्बोधित हुआ, "क्या दूल्हा और उनके बाराती, और घर के लोग आ गए ?"

सरदार बलवाल ने इंकार में सिर हिला दिया, "वे अभी तक यहां नही पहुँचे।"

"तो किसी को घोड़े पर सवार करके जल्दी से उनके पास भेजो। उनसे कहो, जितनी जल्दी हो सकता है, यहाँ उपस्थित हो जाएं। शामियाना लगवा दो, शहनाई और ढोल वालों को तैयार रखो, दुल्हन को उसका सुहाग का जोड़ा पहना दो, ताकि जिस समय मैं दुलहन के शरीर से प्रेत को निकाल दूँ, उसकी शादी ठीक रस्मों के अन्तर्गत दूल्हा से हो जाए। और अब हमें जो काम करना है, वह तो करना ही होगा।"

सरदार बलवाल पवित्र काहन की आज्ञापालन के लिए चला गया।

पवित्र पुजारी शोपान ने अपना दुशाला जो पूजा के समय पहना जाता है, उस समय उतारकर अलग रख दिया। फिर उसे धीरे-धीरे तह करने लगा।

सूसाशाह, सूफी दाऊद और महावीर जोगी आपस में खुसुरफुसर करने लगे।

सूफी दाऊद बोला, "तुमने ध्यान दिया, मृतक बोरीन दाहल की आत्मा ने सरदार बलवाल को क्षमा नहीं किया।"

महावीर जोगी बोला, "हाँ मुझे भी यही आभास हुआ।"

सूसाशाह ने कहा, "पवित्र आत्मा बिल्कुल चुप रही। मगर स्वर्गीय आत्मा को आमीन कहना चाहिए था, मगर उसने कुछ नहीं

कहा।"

महावीर जोगी बोला, "यह एक बुरा संकेत है।"

सूफी दाऊद बोला, "बहुत बुरा...।"

सूसाशाह ने पूछा, "क्या पवित्र काहन शोपान इस बात से अपरिचित है ?"

"कैसे अपरिचित हो सकते हैं", महावीर जोगी बोला, "उनके चेहरे की ओर देखो, माथे पर रेखाएं हैं और हाथ कांप रहे हैं।"

"चलो, हम यहाँ से चल दें।" सूफी दाऊद ने महावीर जोगी से कहा।

वे दोनों जाने लगे, सूसाशाह भी उनके पीछे-पीछे खिसकने लगा तो पवित्र काहन ने उन्हें जाते हुए देख लिया। उन्हें रोककर बोला :

"रुक जाइए, मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता होगी, और सूसाशाह जी, आपको तो शादी की सारी रस्मों में भाग लेना होगा।"

पुजारी सूसाशाह ने एक लम्बी सांस ली, और उदास होकर एक ओर बैठ गया। सूफी दाऊद और महावीर जोगी भी एक कोने में खड़े हो गए।

पवित्र पुजारी शोपान बोला, "आकाश के देवता राक्सू, अजब तेरे फैसले होते हैं, और तेरी मर्जी की पवित्र लपटें आज तक रहस्यमयी हैं, मगर मैं जानता हूँ कि वह लपटें मेरे मार्ग को रोशन

करेंगी और इस समय मुझे मार्ग दिखाएंगी। जिस मार्ग पर मैं चल रहा हूँ उससे मैं एक इंच इधर से उधर न हूंगा, न एक पग बाईं ओर न एक पग दाईं ओर। ऐ सारे लोगों के देवता, मुझे शक्ति दे !" इसके बाद पवित्र पुजारी ने मुँह में कुछ पढ़ा, फिर कोलात से पूछने लगा :

"सब तैयार है ?"

"जी, पवित्र आत्मा।"

"तो क्वांरी लड़की को यहां लेकर आओ।"

कोलात बाहर गया, थोड़ी देर बाद वह सरदार बलवाल, आँगी, रजी और दादी दूरमा को लेकर आ गया।

आँगी ने सुहाग का जोड़ा पहन रखा था, मगर उसके ऊपर वही काला दुशाला ओढ़ रखा था, जिसे ओढ़कर वह कब्रिस्तान में दुआ करने गई थी।

आँगी को उन्होंने दाईं ओर पवित्र काहन के पास एक बेंच पर बिठा दिया।

'असा' लेकर पवित्र काहन शोपान लड़की की ओर बढ़ा।

उसके पीछे पुजारी सूसाशाह खड़ा था।

उन दोनों के पीछे महावीर जोगी और सूफी दाऊद खड़े हो गए।

पवित्र काहन शोपान बोला, "ऐ प्रेत, मैं अपने कबीले का पवित्र काहन हूँ। पवित्र राक्सू का नाम लेकर तुमसे अन्तिम बार कहता हूँ

कि तुम सरदार बलवाल की क्वांरी लड़की आँगी का शरीर छोड़कर अलग हो जाओ।"

लकड़ी के बेंच पर अकेली बैठी हुई आँगी के मुँह से यह मर्दाना आवाज निकली, "मैं नहीं छोड़ूंगा।"

पवित्र पुजारी शोपान ने कहा, "कोलात, कफन का सामान लेकर आओ, तेरह पवित्र पुस्तकें उठा लाओ। इस कार्य के लिए तेरह छात्र चाहिए, हर छात्र केवल एक पुस्तक उठाकर लाएगा, तीन आदमी 'असा' पकड़ने वाले पवित्र असा लेकर आएं, और दो छात्र काले चिरागों को दीवटों के साथ उठाकर लाएं।"

कोलात गया और फिर अन्दर आ गया। तेरह छात्र पवित्र पुस्तकें अपने दोनों हाथों में उठाए एक ओर खड़े हो गए। दो छात्र काले चिरागों सहित दीवटें उठाकर लाए, तीन असा पकड़ने वाले पवित्र असा लेकर आ गए।

जब सब सामान तैयार हो गया, तो पवित्र पुजारी ने हाथ के संकेत से पहले पांच छात्रों को पांच पुस्तकें आगे लाने को कहा।

पुजारी ने अपने असा से धीरे से हर पवित्र पुस्तक को छुआ, फिर बाईं ओर सम्बोधित होकर कहने लगा :

"हठी आत्मा, चूंकि तुमने इस अदालत के आदेश का अनादर किया है इसलिए हम तुम्हें श्रेष्ठ आकाश की पवित्र आत्माओं के सुपुर्द करते हैं। वही तुम्हें इस क्वांरी के शरीर से निकालेंगी। तकिया की नफीरी बजाओ।"

एक नफीरी जोर से बज उठी।

उसकी लम्बी कड़कती आवाज के साथ-साथ आँगी लकड़ी के बेंच से उठ बैठी, और हवा में हाथ-पांव हिलाकर ऐसी हरकतें करने लगी जैसे बहुत-से शत्रु उस पर वार कर रहे हों और वह अपने-आपको बचाने की चेष्टा कर रही हो।

वह जोर से मर्दाना आवाज में चीखी, "मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो, मुझे घसीटने की कोशिश मत करो, मैं नहीं जाऊँगा, कभी अलग नहीं होऊँगा।"

थोड़ी देर के बाद पवित्र पुजारी बोला, "चूंकि श्रेष्ठ आकाश की आत्माएं तुम्हें इस लड़की के शरीर से निकालने में असफल रहं है, इसलिए मैं नीचे उतरता हूँ, और तुम्हे बीच के संसार की आत्माओं को सौंपता हूँ। यह आत्माएँ जो न अच्छी हैं न बुरी हैं, अब मैं इनकी शक्ति का सहारा लेकर तुम्हें घुमाने का यत्न करता हूँ, दूसरी नफीरी बजाओ।"

जब दूसरी नफीरी जोर-जोर से बजने लगी तो फिर आँगी के शरीर में सर से पाँव तक कंपकंपी पैदा हुई। वह कांपने लगी और थरथराने लगी, और मर्दाना आवाज में बोलने लगी :

आह...आह...सारे संसार की शक्तियाँ मेरे विरूद्ध हो चली हैं। भयानक हाथ मेरी ओर बढ़ रहे हैं और बेरहमी से मुझे अलग करने की कोशिश कर रहे हैं। समस्त अधिकार प्रिय सच्ची शक्तियाँ मेरे खिलाफ हैं, यहाँ तक कि स्वयं मेरे बाप की आत्मा मुझसे यहां से

निकलने के लिए कह रही है। लेकिन जब तक बल की एक चिंगारी भी मुझमें शेष है मैं आँगी को नहीं छोड़ूंगा, और वहीं रहूँगा जहाँ मैं हूँ।"

पवित्र काहन शोपान का सारा चेहरा पसीने से नहा गया था। उसने धीरे से कहा, "मालूम होता है कोई बड़ी शक्ति उसके पीछे है।"

पवित्र पुजारी ने अपनी आँखें बन्द कर ली।

फिर बोला, "कोलात, पवित्र पुस्तकें उठाकर बाहर ले जाओ। इस दायरे के चारों ओर एक काला कपड़ा टांग दो, और काले दीपक टीवटों सहित आगे लाओ।"

"अब जितने छात्र यहाँ खड़े हैं, अपने प्राणों की सुरक्षा के लिए एक कफन पहन लें।"

फिर पवित्र पुजारी ने अपने दोनों हाथ एक ओर ऊपर उठाए और गरजती हुई आवाज में बोला, "उठो पवित्र राक्सू, देवताओं के देवता, और अपने शत्रुओं को जलाकर राख क दो। ऐ हठी और पवित्र आत्मा, मैं पवित्र राक्सू की शक्ति से और तेरह पवित्र पुस्तकों के पक्ष में पवित्र काहन शोपान तुम्हें हर बन्धन से अलग किए देता हूँ। जिसके जरिये तुम सरदार बलवाल की लड़की आँगी से चिपटे बैठे हो। एक-एक बन्धन अलग-अलग तोड़कर फेंक देता हूँ, ताकि यह लड़की तुम्हारी पकड़ से मुक्त हो जाए।"

आँगी ने मर्दाना आवाज में कहा, "हाय, मैं मर गया !"

"मैं तुम्हें इस अपनी दुनिया से सदा-सदा के लिए निकालता हूँ, तीसरी नफीरी बजाओ, मोमी चिराग जलाओ।"

पीछे खड़े हुए सूफी दाऊद ने महावीर जोगी से कहा, "अन्तिम चिंगारी शोले में जल गई।"

आँगी थके हुए मर्दाने लहजे में बोली, "अब मैं लड़ नहीं सकता, मेरा साहस टूट रहा है।"

"नफीरी जोर से बजाओ।" पुजारी ने आदेश दिया।

तीसरी नफीरी जोर-जोर से बजने लगी। आँगी का शरीर ढीला पड़ता गया, उसके शरीर की हरकत कम होती गई। काहन शोपान ने आगे बढकर कहा :

"क्या तुम मेरा आदेश मानने के लिए तैयार हो ?"

आँगी धीरे से प्रेत की आवाज में बोली, "मैं तैयार हूँ।"

"तुम वायदा करते हो, कि तुम अपनी मर्जी से सरदार बलवाल की लड़की आँगी के शरीर से निकल जाओगे, और कभी उसके शरीर में वापस न आओगे ?"

"मैं वायदा करता हूँ।" आँगी ने कहा।

चारों ओर सन्नाटा छा गया।

पवित्र पुजारी ने चारों ओर पवित्र कटोरे में से पानी लेकर छिड़क दिया, और बोला, "जब पवित्र शक्ति का सहारा लेकर मैंने तुम पर

बुराई का बोझ डाला है, उसी पवित्र शक्ति का सहारा लेकर मैं तुम पर से उस बुराई को उठाए लेता हूँ। अब तुम बेफिक्र रहो। ऐ कोलात, मोमी चिराग बुझा दो, नफीरी बन्द कर दो, काला पर्दा उठा दो, और सब छात्रों को बाहर जाने दो, मगर बाहर जाने से पहले वे अपना-अपना कफन उतार के जाएँ।"

जब सब छात्र चले गए, नफीरी बन्द हो गई, चिराग बुझा दिए गए तो पवित्र काहन शोपान ने कहा, "ऐ राक्सू, देवताओं के देवता, तू रहमदिल भी है, तेरी शक्ति और दया का सहारा लेकर मैंने इस आत्मा को एक जीवित के शरीर से निकाल दिया है। अब मैं तेरी दया का वास्ता देकर तुझसे अनुरोध करता हूँ कि इस तड़पती, दुखी, अपराधी, भटकी हुई आत्मा के जख्मों पर अपनी दया का मरहम रख दे, इसकी गलतियों को क्षमा कर दे, इस प्रकार कि इसकी गलतियाँ, अपराध और खामियाँ इसके बाप और इसके कबीले के बुजुर्गों की दुआओं में एक सफेद कोहरे की भांति धुएं में बदल जाएं। ऐ देवताओं के मालिक, इस भटकी हुई आत्मा पर अपना हाथ रख दे, और इसे अपनी दया की परछाई में ले ले।"

"आमीन !" सूफी दाऊद बोला।

"जै भैरों ।" महावीर जोगी के मुँह से निकला।

सूसाशाह ने सर झुका लिया।

आँगी ने खड़े-खड़े कांपती थरथराती आवाज में कहा, "मेरे लिए

दुआ करो, मैं जा रहा हूँ मैं जा रहा हूँ, मेरे जाने का समय आ गया।"

वे सब लोग हाथ उठाकर दुआ पढ़ने लगे।

एकाएक आंगी जोर से कांपी, एक चीख उसके मुँह से निकली, फिर वह फर्श पर गिरकर अचेत हो गई।

पवित्र काहन शोपान ने दादी दूरमा से कहा, "जब यह सचेत हो जाए तो इसे बाहर शामियाने में ले जाओ। वहीं इसकी शादी होगी। दूल्हा अभी आया कि नहीं ? कोलात, कोलात !"

कोलात हाथ जोड़ अन्दर आकर बोला, "श्रीमन, वे लोग बर्फ में फंस गए थे, दो खच्चर गिरकर खाई में जा गिरे। रात की बर्फ-वर्षा ने सब मार्गों से चिह्न मिटा दिए हैं, मगर अब वे किसी न किसी प्रकार अन्तिम मोड़ पर आ गए हैं, और वहां से इधर आते हुए दिखाई दे रहे हैं।"

पवित्र पुजारी शोपान ने 'असा' अठाकर ऊपर देखते हुए कहा, "उसकी मर्जी में किसका दखल है, वही होगा जो वह चाहता है। आओ हम लोग दूल्हा और बारातियों के स्वागत के लिए चलें, दादी दूरमा आँगी के पास रहेंगी।"

पवित्र काहन ने आँगी के चारों ओर अपने 'असा' से एक दायरा खींच दिया, अपनी कफनी निकालकर दरवाजे पर टांग दी, और सरदार बलवाल, छात्रों, महावीर जोगी, सूफी दाऊद और दूसरे लोगों के साथ दूल्हा के स्वागत के लिए चला गया।

उनके जाने के पश्चात्, देर तक दादी दूरमा अपनी पोती के सुनहरे बालों में प्यार से हाथ फेरती रही। सहसा आँगी के शरीर में हरकत पैदा हुई। उसने धीरे से आँखें खोली और कहा, "मेरे पास कौन है, दादी...ओह, तुम हो दादी, मैं बहुत कमजोर हूँ, मुझे अपनी बाहों में ले लो।"

दादी दूरमा ने उसे अपनी बांहों में ले लिया और कहा, "न घबराओ मेरी नन्ही बच्ची, भय टल गया है। उदास न हो मेरी नन्ही, उदास होवे रास्ता काटने वाली काली बिल्ली, मेरी बच्ची तो सुबह की भांति साफ है, सांस की तरह हल्ली है, बर्फ की तरह पवित्र है, देवता तेरी देखभाल करे।"

एकाएक बाहर से जोर से शहनाइयों की आवाज आने लगी। आँगी घबराकर, कांपती हुई आवाज में बोली :

"शायद वे लोग तोरा और उसके प्रेमी की कब्र के चारों ओर नाच रहे हैं, मैं उन्हें देख सकती हूँ।"

"धबराओ मत बच्ची, अब तुम्हें कोई हाथ नहीं लगा सकता। एक बहुत बड़ी शक्ति तुम्हारी देखभाल कर रही है। साठ जिन्नात तलवारें खींचे हुए तुम्हारे चारों तरफ खड़े पहरे पर उपस्थित हैं, पवित्र पूर्वज तुम्हें बुरी नजर से बचाने के लिए तुम्हारे चारों ओर साये की भांति खड़े हैं, तुम बिल्कुल सुरक्षित हो।"

दादी दूरमा आँगी को अपनी बांहों में लेकर एक लोरी गाया करती थी। धीमे-धीमे स्वरों में लोरी गाते हुए बूढ़ी दादी माँ स्वयं सो

गई।

कुछ क्षणों की चुप्पी के पश्चात् आँगी के बन्द होंठों से एक गहरी आह फूटी। एकाएक आँगी जाग गई, और उसने पूछा, ''यह किसने सिसकी ली ?''

''यह मैं हूँ।'' चनन की आवाज आई।

आँगी बोली, ''मैं तुम्हारी आवाज सुन सकती हूँ, मगर तुम्हें देख नहीं सकती।''

चनन बोला, ''क्योंकि तुम एक दायरे के अन्दर हो, उस जादू के दायरे के अन्दर मैं घूम नहीं सकता।''

आँगी धीरे से बोली, ''तुम्हारी आवाज का लहजा ऐसा है, जैसे अंधेरी रातों में भोर तारा रोते हों, तुम कौन हो मुझे बता दो ?''

आवाज आई, ''मैं अपने-आपको भूल चूका हूँ, सिवाय तुम्हारी याद के मेरा कहीं पर अस्तित्व नहीं है।''

आँगी बोली, ''पर मुझे अब तुम याद आ रहे हो, उस सितारे की तरह जिसकी ओर देखकर मेरा दिल पहली बार धड़का था। रातों के अंधियारे में मैंने जिसके लिए आंसू बहाए हैं, वह जो सदा मेरे ख्यालों में, मेरे सपनों में रहा, क्या वह तुम ही थे ?''

''हाँ।''

''मुझे याद है तुम्हारी जुल्फें, इतनी स्याह, और नर्म, और भीगी हुई जैसे आँसुओं से तर, और तुम्हारी सुन्दर आँखें-नर्म और उदास,

और तुम्हारे हाथ, जिन्हें छूने के लिए मैं सदा बेचैन रही, सोते औ जागते में तुम्हारे सिवा मुझे और किसी का ख्याल न आया, फिर तु चले गए और मेरे चारों ओर अंधेरा छा गया, और मेरी आत्मा अन् एक विधवा की भांति मुरझाने लगी। फिर एक परदेशी आया, उ तुम भी आ गए और मेरा मुर्दा दिल फिर से जाग उठा, और उदासि में खुशियों के फूल खिलने लगे, और अब तुमने फिर मुझे छोड़ दि है, क्या छोड़ दिया है ?"

"तुम्हारे लिए मैंने सब बन्धन तोड़ डाले, सब सीमाएं ल डालीं। सारी दीवारें ढा डालीं, तुम्हारे लिए मैं मौत के रास्तों फलांगता रहा। मैंने भूत, भविष्य और वर्तमान के हर नियमों को त डाला। मैंने पिशाच शक्ति ; सच्ची आत्माओं से बगावत की ; मग उनके पास सब कुछ है, मेरे लिए दया नहीं है, इसलिए अन्त में तु तुम्हारे शरीर को छोड़कर तुम्हारी आत्मा में ठिकाना लेना पड़ा।"

आँगी ने बड़ी नर्मी और प्यार से कहा, "आओ मेरे पास, वापस आ जाओ मेरे दूल्हा, मेरे पति, मैं तुम्हें मुर्दा ही उठा लूँगी और अपने दिल में ले चलूंगी, और हम-तुम दोनों रातों में और सपनों में अपने उन बच्चों को आवाज देंगे, जो अब कभी पैदा न होंगे और मैं नन्हे-नन्हे कपड़े सीऊंगी, उनके नन्हे प्यारे शरीरों के लिए, जो अब कभी साक्षात् अस्तित्व में न आएंगे, और लोरियाँ सुनाऊँगी।"

आँगी लोरी गाने लगी।

बाहर से शहनाई की आवाज पास आने लगी।

आँगी बोली, "वे पास आ रहे हैं, मुझे ले जाने के लिए, मुझे एक नबी के हवाले करने के लिए। आओ, मेरे दूल्हा मेरी बांहों में आ ओ।"

"मैंने तुम्हारे शरीर को छोड़ दिया है, वहाँ मैं नहीं आ सकता, क़न मैं तुम्हारी आत्मा में आ सकता हूँ।"

एकाएक आँगी ने देखा कि दरवाजे पर लटकी हुई कफन में न की छवि थरथरा रही है। आँगी बोली, "मेरे होने वाले पति, ओ, मैं तुम्हें देख सकती हूँ, तुम्हारे-मेरे बीच अब कोई दीवार नहीं मेरे पास आ जाओ।"

चनन की छवि से हल्की-सी गूँज आई, "मेरे पास आ जाओ।"

आँगी के उदास चेहरे पर हर्ष खिल उठा, धीरे से बोली, "मैं ती हूँ।"

"और मैं तुम्हारे पास आता हूँ।" चनन की कांपती हुई छवि से आवाज आई।

सहसा बाहर से काहन शोपान ने कहा :

"दुल्हन को बाहर शामियाने में लाओ।"

शहनाइयों की गगनस्पर्शी आवाजों में आँगी अपने दायरे से निकल गई। केवल काला दुशाला वहाँ रह गया। आँगी दरवाजे पर लटकी कफनी की ओर चली।

सहसा दादी माँ ने जागकर देखा, कि दरवाजे पर लटकी हुई

कफनी में दो परछाइयाँ हिल रही हैं, एक चनन की, दूसरी आँगी की। फिर उन्होंने देखा कि वे दोनों छवियाँ हिलती-डुलती एक-दूसरे में समा गयी, फिर वहाँ कुछ न रहा। पवित्र काहन शोपान ने अन्दर आकर कहा, "दादी दूरमा, दुल्हन को शामियाने में ले चलो।"

फिर वह एकदम घबराकर बोला, "यह क्या?"

दायरे के अन्दर केवल एक काली शाल पड़ी थी, और दायरे के बाहर सुहाग का जोड़ा पहने हुए आँगी की लाश पड़ी थी। उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

◆ ◆ ◆

कृश्न चन्दर

प्यार एक ख़ुशबू है

कश्मीर की ख़ूबसूरत वादियों में रहने वाले बकरवाल कबीले की दास्तान 'प्यार एक ख़ुशबू है' को अपने अनूठे अंदाज़ में लिखा है अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कथा-शिल्पी कृश्न चन्दर ने। यह एक ऐसी प्रेम-कथा है, जिसमें प्यार की अलौकिक ख़ुशबू को महसूस किया जा सकता है। ..... और है इसमें कबीलाई ज़िन्दगी के विश्वासों और अंधविश्वासों का चकित कर देने वाला विचित्र ताना-बाना।



कृश्न चन्दर प्रख्यात कहानीकार एवं उपन्यासकार थे। ये महाराष्ट्र में जन्मे, लेकिन अपनी लेखनी के बल पर इन्होंने सारी दुनिया में भारत का नाम गौरवान्वित किया। साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें 1969 में पद्म भूषण से सम्मानित किया।

Rs. 135
उपन्यास (NOVEL)

हिन्द पॉकेट बुक्स
AHW HPB HINDI SERIES

Please visit
www.atfullcircle.com
www.hindpocketbooks.in

ISBN 978-81-216-1500-6
Rs. 135
9788121615006 00135